मनाक़िबुल अख़यार

फी

खसाइसे अहले बैतिल अतहार

शमाइला सदफ़ अज़ीज़ी

دبستان نوابیہ عزیزیہ
قاضی پور شریف

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى

मनाक़िबुल अख़यार
फ़ी
ख़साइसे अहले बैतिल अतहार

मुवल्लिफ़ह
शमाइला सदफ़ अज़ीज़ी
(पाकिस्तान)

नाशिर
दबिस्ताने नव्वाबिया अज़ीज़िया
क़ाज़ीपुर शरीफ़, फ़तेहपुर

जुमला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब	:	मनाक़िबुल अख़्यार फ़ी ख़साइसे अहले बैतिल अतहार
नाम मुवल्लिफ़ा	:	शमाइला सदफ़ अज़ीज़ी, फ़ैसलाबाद (पाकिस्तान)
नज़रे सानी	:	सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन नूर नव्वाबी अज़ीज़ी
कम्पोज़िंग	:	यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी स्माइल ग्राफ़िक्स, चमनगंज, कानपुर (इण्डिया) मो० न० : 9455306981
सरे वरक़	:	आसिफ़ अज़ीज़ी नव्वाबी
नाशिर	:	दबिस्ताने नव्वाबिया अज़ीज़िया, क़ाज़ीपुर शरीफ़, फ़तेहपुर, इण्डिया
सफ़हात	:	128
तादाद	:	500
सने इशाअत	:	2019
क़ीमत	:	150/— रूपये

मिलने का पता

आस्तानए आलिया नव्वाबिया

क़ाज़ीपुर शरीफ़, पोस्ट मण्डवा, तहसील खागा,
ज़िला फ़तेहपुर (हसवा), यू०पी० इण्डिया-212653
मोबाइल न0 : 9935347276, 9415494492
972688001, 9426268823

ब फ़ैज़े नूरानी व रूहानी

आक़ाई व मौलाई, मुर्शिदे मुर्शिदाँ, रहबरे रहबराँ, अकमलुल औलिया
ज़ुबदतुल असफ़िया, सरचश्मए लुत्फ़ो अता, नाइबे आले अबा,
शम्सुल आरिफ़ीन, बद्रूल कामिलीन, फ़ख़्रूस्सालिकीन,
क़ुदवतुल वासिलीन, महबूबुल मुक़र्रबीन, आशिक़े सैय्यदुल मुरसलीन

हज़रत अलहाज सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह

हसनी, अज़ीज़ी अबुल उलाई, चिश्ती, क़ादरी, नक़्शबन्दी, सोह्रवर्दी
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

ब ज़िल्ले करमो आतिफ़त

आक़ाई व मौलाई, रूहे रवाने सिलसिलए अबुल उलाइया
नूरे ऐनैने सैय्यदा, क़ुदवतुल औलिया, सैय्यदुल असफ़िया
मख़दूमुल अज़किया, ख़ुलासतुल आरिफ़ीन, सिराजुस्सालिकीन,
पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत, मम्बए फ़ुयूज़े नुबूवत व विलायत

हज़रत अश्शाह सूफ़ी
सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल हसन साहब

नव्वाबी, लियाक़ती, हसनी, अज़ीज़ी, जहाँगीरी, मुनइमी, अबुल उलाई
चिश्ती, क़ादरी, नक़्शबन्दी, सोह्रवर्दी मद्दाज़िल्लहुल आली
साहिबे सज्जादा

आस्तानए आलिया नव्वाबिया

क़ाज़ीपुर शरीफ़, पोस्ट मण्डवा, तहसील खागा, ज़िला फ़तेहपुर (हसवा)
यू०पी० (इण्डिया)

फ़ेहरिस्त

न.शुमार	उनवान	सफ़ा न०
1.	बफ़ैज़े नूरानी व रूहानी......................................	3
2.	बज़िल्ले करमो आतिफ़त......................................	4
3.	फ़ुयूज़े मुवद्दत......................................	6
4.	हर्फ़े आग़ाज़......................................	8
5.	आयाते कुरआनिया में अहलेबैते अतहार का ज़िक्र........	11
6.	फ़ज़ाइले अहलेबैत और फ़रामीने रसूल..................	24
7.	मनाक़िबे सैय्यदेना मौला अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहुल करीमिल अज़ीम......................................	35
8.	मनाक़िबे सैय्येदा फ़ातमतुज़्ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा.......	46
9.	हसनैन करीमैन अलैहिस्सलाम के फ़ज़ाइलो मनाक़िब......	57
10.	अज़्मते शहादत और शहीद के मआनी व मफ़्हूम........	75
11.	फ़रमूदाते अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम..............	95
12.	मवद्दते अहलेबैत और अकाबिरीने उम्मत.................	100
13.	हुक़ूक़े अहलेबैत......................................	114
14.	अहलेबैते अतहार को साथ अलैहिस्सलाम कहने का जवाज़	119
15.	मसादिर व मराजेअ......................................	126

फुयूज़े मवद्दत

अहलेबैते पाक का ज़िक्रे जमील सुनते ही अहले मुहब्बत के चेहरे गुलाब की तरह खिल जाते हैं, पलकें ख़म होकर अदब के गुहर निछावर करती हैं । कुलूब मसरूरो सरशार हो जाते हैं । अहलेबैत का तज़किरा हदीक़ए जाँ को ईमान की ख़ुशबुओं की आमाजगाह बना देता है । कुंजे ख़याल में वफ़ा के दीप रोशन हो जाते हैं । और क्यों न हो कि अहलेबैत की मुहब्बत जाने ईमान है । अहले ईमान के लिए अहलेबैत की मुहब्बत लाज़िमो मुस्तलज़म क़रार दी गई इसीलिए उनके ज़िक्र को हिर्ज़े जाँ बनाना रोज़े अव्वल ही से अहले महब्बत का दस्तूरे उलफ़त व शेवए हयात रहा है । बिला शुब्हा अहलेबैत की ग़ुलामी सआदते अबदी और फ़लाहे दारैन की ज़ामिन है कि अरबाबे लौहो क़लम ने अहलेबैते नबवी की बारगाहे फ़ज़ीलत मआब में ख़ूब-ख़ूब ख़ुलूसो महब्बत के नज़राने पेश किए और कर रहे हैं ।

यूँ तो अहलेबैते अतहार के फ़ज़ाइलो मनाक़िब और शमाइलो ख़साइस पर अब तक बेशुमार कुतुब लिखी गई हैं और कसीर तादाद में दस्तयाब भी हैं मगर शमाइला सदफ़ ने जिस नौइयत की सइए जमील की है उस नौइयत की किताब की अशद ज़रूरत महसूस हो रही थी । कम अज़ कम उर्दू में तो इस तर्ज़ की कोई तसनीफ़ो तहरीर अब तक मेरी नज़र से नहीं गुज़री । बिलयक़ीं यह शमाइला सदफ़ का इख़्तिसासो इम्तियाज़ भी है और उसकी दरे अहलेबैत से वाबस्तगी का मुँह बोलता सुबूत भी । इस किताब में उसने अहलेबैते पाक की शान में वारिदह आयातो अहादीस पेश करने पर ही इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि जहाँ-जहाँ मुनासिब और ज़रूरी समझा वहाँ ख़ूबसूरत उसलूब और महब्बत भरे अन्दाज़ में उनकी तौज़ीह व तशरीह भी

पेश की जिसके सबब उसके काम की इफ़ादियत दोचन्द हो गई।

मैं शमाइला को उसकी काविश पर बसमीमे क़ल्ब मुबारकबाद पेश करता हूँ और दुआगो हूँ कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बहक़्क़े रसूल व आले रसूल अलैहिमुस्सलाम उसके इल्मो फ़ज़्ल में मज़ीद बरकतें अता फ़रमाये और हम सबको महब्बतो इताअते रसूलो आले रसूल अलैहिमुस्सलाम में ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन। बिला चूनो चरा मुहिब्बाने अहलेबैत मुबारकबाद के मुस्तहक़ हैं कि महबूबियते ख़ुदा व रसूल का ताजे करामत उनका मुक़द्दरो हवाला बन जाता है और तक़र्रूबो मईयते अहलेबैत दारैन में उनकी क़िसमत। इन शा अल्लाह फ़िदायाने अहलेबैत इस किताब से ज़रूर मुतमत्तेअ होंगे।

वह अहलेबैत का दामन कभी न छोड़ेंगे
नबी के हुक्म का जो एहतेराम करते हैं

सगे बारगाहे नव्वाबी
सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन नूर नव्वाबी अज़ीज़ी
आस्तानए आलिया नव्वाबिया क़ाज़ीपुर शरीफ़
फ़तेहपुर (इण्डिया)

हर्फ़े आग़ाज़

अहलेबैते पाक अलैहिमुस्सलाम की महब्बत जुज़्वे ईमान है, जाने ईमान है, बल्कि यूँ कहिए कि अमाने ईमान है कि यह वो नुफ़ूसे कुदसिया हैं जो महबूबे ख़ुदा के महबूब हैं, जिन्होंने सरवरे दारैन, सैय्यदे कौनेन, साहिबे क़ाबाक़ौसैन अलैहिस्सलातु वस्सलाम की आग़ोशे तवज्जो में परवरिशो परदाख़्त पाई, जिसकी बदौलत उनके कुलूब अनवारो तजल्लियाते इलाहिया का मख़ज़नो मसदर बन गए, और उनके सीने उलूमे लदुन्निया का मम्बअ व सरचश्मा हो गए, उनकी पाकीज़गी व तहारत के कुरआन ने क़सीदे पढ़े और उनकी ताज़ीमो तकरीम दुनिया ओ आख़िरत की कामरानियों का बाइस क़रार पाई। यही वह ज़वाते मुक़द्दसा हैं जिनकी मवद्दत अहले ईमान के लिए लाज़िम क़रार दी गई और यह मवद्दत ख़ास अताए ख़ुदावन्दी है। अल्लाह तबारका व तआला के करमे ख़ास से जिन लोगों को इरफ़ाने अहलेबैत अता हो जाए उन्हीं के दिल अनवारे मुवद्दत से जगमगाते हैं और वही हुब्बे ख़ैरूल अनाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से सरशार होकर हर वक़्त और हर घड़ी हलावते ईमानी का सरमदी कैफ़ो सुरूर पाते हैं। यह मवद्दते अहलेबैत का समरा है कि जब बातिन में उतरती है तो इंसान पर मुआरिफ़े किताबो सुन्नत खुलते हैं, कुलूब की संगलाख़ वादियों में उलूमो मारफ़त के सोते फूटते हैं, इसी दर से राहे सुलूक के मुसाफ़िर विसाले इलल्लाह की मंज़िले रफ़ीअ तक पहुँचते हैं, कि उनकी विलायत और राहे सुलूक के पेशवा और उसके फ़ैज़ का मम्बअ सैय्यदना मौला अलीये मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहुल करीम हैं और सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा और हज़राते हसनैने करीमैन अलैहिमस्सलाम भी इस मक़ाम व मर्तबे में उनके साथ शामिल हैं। लिहाज़ा विलायतो मारफ़त का हासिल होना दरे अहलेबैत की वाबस्तगी से मशरूत कर दिया गया है।

आज का दौर फ़ितनों का दौर है, इबलीसी ताक़तें नित नये हथकण्डे इस्तेमाल करके मताए ईमानो ईक़ान लूटने की कोशिशों में मसरूफ़ हैं, अहले ईमान

के सीनों से अहलेबैते अतहार की महब्बत का चराग़ गुल करने की मज़मूम कोशिशें अपने ज़ोरों पर हैं, कहीं तौहीन आमेज़ लिट्रेचर छप रहा है और कहीं गुस्ताख़ाना तक़रीरो बयान, यज़ीद पलीद के लश्करी कहीं तो मौला अलीए मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम का रूतबा घटाने के दरपै हैं और कहीं सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अज़ीम ईसारो क़ुर्बानी को दो शहज़ादों की जंग कहकर संगीन गुस्ताख़ी के मुरतकिब हो रहे हैं, और यज़ीद पलीद जैसे बदकारो बदकिरदार, फ़ासिक़ो फ़ाजिर और अबदी लईनो काफ़िर को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मुक़ाबिल खड़ा करने की नापाक जसारत करते हैं । मआज़ल्लाह सुम्मा मआज़ल्लाह । उस अज़ीम ख़ानवादे की बर सरे मिम्बर गुस्ताख़ियां कि जिनके सदक़े मस्जिदो मेहराबो मिम्बर सलामत हैं और जिनकी मसाइए जलीला के सदक़े अकनाफ़े आलम में तिलावते किताबे हक़ जारी व सारी है । लिहाज़ा फ़ितनों से अपना दामने ईमान बचाने के लिए अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम के फ़जाइलो मनाक़िब से कामिल आगाही और इस ख़ानवादे की सच्ची ग़ुलामी अज़हद ज़रूरी है।

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, मुझे अल्लाह के फ़ज़्ले ख़ास और सरकारे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की अता से उसी घराने की सच्ची और पक्की ग़ुलामी हासिल है जिसे ख़ानदाने रसूल कहते हैं। मेरे दादा पीर हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन, बद्रूल कामिलीन, फ़ख़्रूस्सालिकीन, क़ुदवतुल वासिलीन, महबूबुल मुक़र्रबीन, आशिक़े सैय्यदुल मुरसलीन हज़रत अलहाज सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह हसनी, अज़ीज़ी, अबुल उलाई, चिश्ती, क़ादरी, सोह्रवर्दी, नक़्शबन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु गुलशने फ़ातमी के वह गुले तर हैं जिसकी महक आलमे सुलूको मारफ़त का गोशा-गोशा महका रही है । आपकी ज़िन्दगी का लम्हा-लम्हा इश्क़े ख़ुदा ओ रसूल और महब्बतो इताअते अहलेबैत में गुज़रा, आप उन तमाम औसाफ़े जलीला से मुत्तसफ़ थे जो सादाते किराम की पहचान हैं, आप वली भी थे वलीगर भी, लाखों गुमगश्तगाने राह को रूश्दो हिदायत से फ़ैज़याब फ़रमाया, आपने अपने तमाम मुरीदीनो मुतवस्सिलीन को महब्बतो मवद्दते रसूल व आले रसूल का वह जाम पिलाया जो इस सिलसिलए आलिया की ख़ास पहचान है

और मेरे मुर्शिदे कामिलो अकमल औलादे रसूल, आले बुतूल, ज़ुबदतुल औलिया, सैय्यदुल असफ़िया, मख़्दूमुल अज़किया, हुज्जतुल आरिफ़ीन, सिराजुस्सालिकीन, इमामुल आशिक़ीन, पीरे तरीक़त, रहबरे शरीअत, मख़्दूम इब्ने मख़्दूम हज़रत अश्शाह सूफ़ी सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल हसन साहब नव्वाबी जो हज़रत सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह के नायब व सज्जादा नशीन हैं, आप उस मुक़द्दस नस्ल से हैं जिसका फ़र्द-फ़र्द नूरो इरफ़ान का मीनार है, और आप उस पाकीज़ा व मुतहहर घर के चश्मो चराग़ हैं जो क़ुदसियाने फ़लक की अक़ीदतों का मरकज़ है, आप एक सच्चे आशिक़े अहलेबैत और नायबे अहलेबैत हैं। आप उलूमे आले नबी के वारिस और फ़ैज़ाने नुबूवतो विलायत का मम्बओ मख़्ज़न हैं, और दौरे हाज़िर में मुतलाशियाने हक़ के पेशवा और रह-रवाने सुलूक की उम्मीदगाह हैं, और उन्हीं की चश्मे अता ने मुझे और मुझ जैसे बेशुमार अफ़रादो अशख़ास को इरफ़ाने मवद्दत इनायत फ़रमाया, इस नेमते उज़्मा पर जितना भी शुक्र अदा किया जाए कम है। ज़ेरे नज़र रिसाला ब-बारगाहे अहलेबैते किराम अलैहिमुस्सलाम एक अदना नज़्रे मुवद्दत भी है और ख़ानक़ाहे नव्वाबिया अज़ीज़िया के फ़ैज़ान का मज़हर भी है। मैं बेहद शुक्रगुज़ार हूँ अपने उस्ताज़े गिरामी क़द्र हज़रत सूफ़ी सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन नूर नव्वाबी अज़ीज़ी दामा ज़िल्लुहू की कि जिनकी रहनुमाई, हौसला अफ़ज़ाई और करम फ़रमाई के बाइस यह काम शुरू हुआ और उन्हीं की पैहम इनायात से पायए तकमील को पहुँचा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस्ताज़े गिरामी को सलामतीए ईमान और सेहते कामिला वाली उम्र अता फ़रमाये और फ़रोग़े नात और फ़रोग़े हुब्बे अहलेबैत के ज़िम्न में उनकी तमामतर काविशात को दरजए क़ुबूलियत अता फ़रमाये। आमीन सुम्मा आमीन

कनीज़े बारगाहे नव्वाबी

शमाइला सदफ़ अज़ीज़ी

पाकिस्तान

आयाते कुरआनिया में अहलेबैते अतहार का ज़िक्र

अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तबारका व तआला ने रिफ़अत, अज़मत और तहारत के उन मक़ामाते रफ़ीआ और मनासिबे आलिया पर फ़ायज़ किया, जो हीतए तफ़क्कुरो ख़याल से वरा हैं, कस्बो रियाज़त के ज़रिये भी इन मरातिब तक रसाई मुमकिन नहीं क्योंकि यह मक़ामाते वहबी और अताई हैं और फ़ज़्ले मिनल्लाह हैं जो वह उसी को अता करता है जिसे चाहता है, बिला शुब्हा अल्लाह ने अहलेबैते अतहार को नफ़ीस तरीन ख़ल्क़, उम्दा तरीन ख़ुल्क़ और पाकीज़ा तरीन जौहर से नवाज़ा और उन्हें अफ़ज़लुल ख़लायक़ के ताजे हसीं से मुरस्सा फ़रमाकर फ़ज़्लो कमाल की उस चोटी पर मुतमक्किन फ़रमाया कि जिसकी तरफ़ सर उठाकर देखना भी मुश्किल है । वही ख़ालिक़े कुल जो कुल कहकर बज़बाने मुस्तफ़ा अपनी वहदानियत का एलान करवाता है, उसी मालिके अर्ज़ो समा ने कुल कहकर अपने हबीब अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ज़बानी मवद्दते अहलेबैत का यह मुतालबा करवाया, फिर पूरे कुरआन में कहीं उनकी तहारत का चर्चा, कहीं सख़ावत का ज़िक्र का जमील, कहीं शानो मन्ज़िलत का बयान, कहीं उनसे तमस्सुक का हुक्म ताकि उम्मत को उनके मक़ामो मरातिब, क़द्रो मन्ज़िलत और उन पाकीज़ा नुफ़ूस पर इनायाते इलाहिया से आगाही मिले और मालूम हो जाए कि अहलेबैते नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक़ूक़ की रिआयत और उनकी महब्बत किस दर्जा अहम व लाज़िम है, कुरआनी आयात के आईने में फ़ज़ायले अहलेबैत इस दर्जा अयाँ हैं कि बजुज़ बदबातिन व बदनसीब कोई जुरअते इंकार नहीं कर सकता।

आयत न0 1 :- सूरते शोरा की आयत न० **23** में अल्लाह तआला का इरशाद

है,

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى

फ़रमा दीजिए मैं नहीं मांगता इस (दावते हक़) पर कोई मुआवज़ा बजुज़ क़राबत की महब्बत के । इस आयते मुबारका का मफ़हूम यह है कि ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एलान फ़रमा दीजिए कि मुझे तब्लीग़े दीन पर तुम से अपने लिए किसी सिला या अज्र की तलब नहीं, हाँ मगर मेरे क़राबतदारों से मवद्दत रखो ।

अलकुरबा का मानी व मुराद : अलकुरबा से रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की नसबी क़राबत मुराद है । इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमत ने अपनी सहीह में अब्दुल मलिक बिन मैसरा की सनद से ताऊस का यह क़ौल नक़्ल किया है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अनहुमा से "अलमवद्दता फ़िल कुरबा" के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो सईद बिन जबीर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अलकुरबा से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अहलेबैते अतहार हैं । (सहीह बुख़ारी, बाब क़ौलुहू इल्लल मवद्दता फ़िल कुरबा, जिल्द **2** सफ़ा **713** क़दीमी नुस्ख़ा)

तफ़सीरे कबीर में इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी फ़रमाते हैं :

فَثَبَتَ اَنَّ هٰؤُلَاءِ الْاَرْبَعَةُ اَقَارِبُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَ اِذَا ثَبَتَ هٰذَا وَجَبَ اَنْ يَكُوْنُوْا مَخْصُوْصِيْنَ بِمَزِيْدِ التَّعْظِيْمِ

तो यह अम्र साबित हो गया कि बेशक यह चारों अफ़राद (सैय्यदना अली अलैहिस्सलम, सैय्यदा फ़ातमुतुज़्ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा, सैय्यदना हसन अलैहिस्सलाम, सैय्यदना हुसैन अलैहिस्सलाम) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के क़रीबी हैं, और जब यह बात साबित हो चुकी तो यह लाज़मी है कि चारों हस्तियां इन्तिहाई ताज़ीम के लिए मख़सूस कर दी गई हैं । (तफ़सीरे कबीर जिल्द **27** सफ़ा **166**, मतबूआ दारे अहयाउत्तरासुल अरबी)

मालूम हुआ कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अहलेबैत से मवद्दत लाज़िम है । बाज़ लोग मज़कूरा बाला आयते मुबारका के मक्की होने पर ज़ोर देकर हसनैन करीमैन को "कुरबा" से मआज़ल्लाह ख़ारिज

करने की मज़मूम कोशिश करते हैं और दलील यह लाते हैं कि इस आयत के नुज़ूल के वक़्त हज़रत सैय्यदा फ़ातमा रिशतए इज़दवाज में मुन्सलिक भी नहीं हुई थीं, दरअस्ल क़ुसूर सिर्फ़ तअस्सुबो नासबीयत का है, क़ौलो फ़ेले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम और तआमुले सहाबा ने यह साबित कर दिया कि यहाँ क़ुरबा से कौन मुराद है। एक हदीस पेशे ख़िदमत है, मोजमुल कबीर में तिबरानी ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास की रिवायत ज़िक्र की है कि जब यह आयते मुबारका उतरी तो लोगों ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम! आपके वह क़राबतदार कौन हैं जिनकी मवद्दत हम पर वाजिब है ? फ़रमायाः अली और फ़ातमा और उनके दोनों बेटे (सैय्यदना इमाम हसन और सैय्यदना इमाम हुसैन) रज़ियल्लाहु अन्हुम।

जम्हूर उलमा ने ब-अदिल्लए क़वीया इस आयते मुबारका को मदनी साबित किया है, और इस पर अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत मौजूद है। अब्दुल्लाह बिन अब्बास और क़तादा का क़ौल है कि इस (सूरते शोरा) में से चार आयात मदीना तैय्यबा में नाज़िल हुईं। (फ़रमा दीजिए मैं इस ''तब्लीग़े रिसालत'' पर कोई उजरत नहीं माँगता मगर मेरी क़राबत का लिहाज़ रखो) और अगर बिल फ़र्ज़ इसे मक्की भी मान लिया जाए तब भी यह बात मतलूबा मआनी के हुसूल से मानेअ नहीं है।

मक्का में यह आयत इस बात का एलान कर रही है कि ऐ अहले मक्का! तुम्हारे और मेरे दरमियान जो रिश्तए क़राबत है उसका लिहाज़ रखो।

मदीना में यह आयत वा शिगाफ़ अन्दाज़ में कह रही है कि ऐ गिरोहे महाजरीनो अन्सार ! मेरे अहलेबैत से मवद्दत रखो ताकि यह मवद्दत तुम्हें मेरे क़ुर्ब तक पहुँचाये और मेरा क़ुर्ब तुम्हारे लिए क़ुर्बे इलाही का बाइस बने।

और दौरे हाज़िर में इस आयत का यह एलान है कि ऐ क़यामत तक के मुसलमानो ! मेरे अहलेबैत की मवद्दत ही तुम्हारे जमीअ मसायल का वाहिद हल है, इसी में निजात मुज़मर है, नस्ले पयम्बर की मवद्दत ही में तुम्हारी मौजूदा और आइन्दा नस्लों की कामरानी है।

मवद्दत क्या है : मवद्दत, वद्दा से बना है, जिसका मतलब है महब्बत करना, इसी से ''वदूद'' है जो अल्लाह तआला के असमाए हसना में से एक इस्म है, जिसका

माना अपने बन्दों से महब्बत करने वाला। महब्बत और मवद्दत के दरमियान वही फ़र्क़ है जो मुवस्सर और असर के दरमियान होता है, महब्बत क़ल्ब के जज़्बातो एहसासात का नाम है और जब यह जज़्बातो एहसासात दिल में जड़ पकड़ लें और इतने शदीद हो जाएँ कि इनका अमली असर ज़ाहिर होने लगे और अमली असर में महबूब की इत्तिबाअ, इताअत, ख़ुशनूदी व हर ईज़ा से हिफ़ाज़त वग़ैरह शामिल हैं, इसी कैफ़ियत को मवद्दत कहते हैं। अहलेबैत से मवद्दत लाज़िम क़रार दी गई और कुरआन में पैग़म्बरे इसलाम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से इसका मुतालबा करवाया गया, क्योंकि महब्बत घटने बढ़ने की चीज़ है, यह लफ़्ज़ी भी हो सकती है और दिखावे की भी लेकिन मवद्दत वह जज़्बा है जो अपने ख़ुलूस की आप शहादत देता है कि साहिबे मवद्दत को महबूब के बग़ैर क़रार नहीं आता, हम देखते हैं कि अहले मवद्दत को ज़िक्रे अहलेबैत के बग़ैर चैन नसीब नहीं होता, यही उनकी रूह की ग़िज़ा नीज़ दुनिया व उक़बा की सुख़रूई का बाइस है।

आयत न0 2 :- सूरए अहज़ाब की आयत न० **33** में इरशादे बारी तआला है,

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के घर वालो ! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुमसे हर क़िस्म की नापाकी दूर कर दे और तुम्हें पूरी तरह से पाको साफ़ कर दे। इस आयते कुरआनिया में अहलेबैत से रिज्स को दूर करने और उन्हें ख़ूब सुथरा करने का ज़िक्र है। रिज्स क्या है ? ''अररिज्स'' का लफ़्ज़ कुरआन मजीद में दस मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर आया है, जिसका आम मानी नापाकी है, यह लफ़्ज़ गुनाह, कुफ़्र, शिर्क, पलीदी, शक, अख़्लाक़ी अमराज़ और गुनाहों से रूह के आलूदा होने के मानी में भी आता है, इब्ने अब्बास का क़ौल है कि मज़कूरा बाला आयत में रिज्स से शैतानी आमाल और अल्लाह से नाराज़गी वाले काम मुराद हैं, क़तादा इस आयत में रिज्स से बुराई और मुजाहिद शक मुराद लेते हैं, इस आयत में अल्लाह ने अहलेबैत से हर तरह की बुराई व नापाकी दूर करने का इरादा ज़ाहिर किया और बेशक अल्लाह का इरादा पूरा होकर रहता है लिहाज़ा अल्लाह ने अहलेबैत को हर तरह की माद्दी व मानवी नापाकी से पाक फ़रमाया, और उनके अजसाम, कुलूब और अरवाह को ख़ूब मुसफ़्फ़ा और

पाकीज़ा किया और उन मुसफ़्फ़ा अरवाहो कुलूब में विलायत का जौहर रखा, और उन्हीं से विलायत को जारी फ़रमाया।

अल्लामा अलवाहिदी ने अपनी किताब ''असबाबुन्नुज़ूल'' में इस आयत ''इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़हबा........''का शाने नुज़ूल बयान करते हुए कई रिवायात दर्ज की हैं जिनमें से एक रिवायत अबू सईद ख़ुदरी जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी की है और दूसरी रिवायत मशहूर सहाबी अता बिन रबाह की है। अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि यह आयत पांच लोगों के मुताल्लिक़ उतरी, नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम, सैय्यदना अली, सैय्यदा फ़ातमा, सैय्यदना हसन और सैय्यदना हुसैन रिज़वानुल्लाहु अलैहिम अजमईन। अता बिन अबी रबाह की रिवायत है कि उन्होंने हज़रत सैय्यदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से सुना कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेरे घर में सोये हुए थे। आप पर ख़ैबर की बनी हुई चादर थी, इसी दौरान हज़रत फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा एक हण्डिया लाईं जिसमें ख़ज़ीरा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनसे फ़रमाया :

اُدعِیْ زَوْجَكِ وَ ابْنَیْكِ حَسَنًا وَ حُسَیْناً

आप उन सब को बुला लाएं जबकि वह सब खाना तनावुल फ़रमा रहे थे, इसी असना में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई,

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰهُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَیُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी चादर का एक किनारा पकड़ा और उस चादर से उन्हें ढांप दिया, फिर चादर से अपना हाथ निकाला और आसमान की तरफ़ इशारा किया और फिर अर्ज़ किया।

اَللّٰھُمَّ ھٰؤُلَاۤءِ اَھْلُ بَیْتِیْ وَ خَاصَّتِیْ فَاَذْھِبْ عَنْھُمُ الرِّجْسَ وَ طَھِّرْھُمْ تَطْھِیْرا۔

ऐ अल्लाह ! यह मेरे अहलेबैत हैं और मेरे ख़ास अफ़राद हैं, इनसे रिज्स दूर कर

दे और इन्हें पाक साफ़ कर दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह कलमात तीन बार दोहराए।

मुन्दरजा बाला दो अहादीस ने अहलेबैत की फ़ज़ीलतो मर्तबत को वाज़ेह कर दिया और शुकूक रफ़अ कर दिए। एक तीसरी हदीस पेशे ख़िदमत है। इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में क़तादा से मरवी हदीस रक़म की है जिसके अलफ़ाज़ यह हैं,

نَحْنُ اَهْلُ بَيْتٍ طَهَّرَهُمُ اللهُ مِنْ شَجَرَةِ النُّبُوَّةِ، وَ مَوْضِعِ الرِّسَالَةِ، وَ مُخْتَلِفِ الْمَلٰئِكَةِ، وَبَيْتِ الرَّحْمَةِ، وَمَعْدَنِ الْعِلْمِ

हम अहलेबैत हैं कि जिन्हें अल्लाह ने नबूवत के शजर और रिसालत के मक़ाम और मलायका के आने जाने और रहमत के घर और इल्म के मादन के साथ पाकीज़ा बनाया।

रिवायात में है कि इस आयत के नुज़ूल के बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम चालीस रोज़ तक अपनी लख़्ते जिगर सैय्यदा फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ साठ दिन तक तशरीफ़ लाते रहे (और अनस बिन मालिक से छः माह का क़ौल भी मनक़ूल है) फ़रमाते : ऐ अहलेबैत ! तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमतो बरकत नाज़िल हो, नमाज़ का वक़्त हो गया, अल्लाह तुम पर रह्म फ़रमाए, ऐ नबी के घर वालो ! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से हर तरह की नापाकी दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे, जो तुमसे जंग करेगा मैं उससे जंग करने वाला हूँ, और जो तुमसे सुलह करेगा मैं उससे सुलह करने वाला हूँ। (अलदुर्रूल मन्सूर जिल्द **5** सफ़ा **378**)

इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाह अलैह अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा में यूँ रक़मतराज़ हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنَّهُمْ مِنِّيْ وَ اَنَا مِنْهُمْ، فَاجْعَلْ صَلَاتَكَ وَ رَحْمَتَكَ وَ مَغْفِرَتَكَ وَ رِضْوَانَكَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ۔

ऐ अल्लाह ! यह मुझसे हैं और मैं इनसे हूँ पस तू सलातो रहमत, मग़फ़िरतो रज़ामन्दी मुझे और इन्हें अता फ़रमा।

आयत न0 3 :– सूरते आले इमरान की आयत **61** में इरशाद है ।

فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَائَنَا وَ اَبْنَاءَ كُمْ وَنِسَاءَنَا وَ نِسَاءَ كُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ

फ़रमा दीजिए कि आओ हम बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को, और हम ख़ुद और तुम ख़ुद, फिर हम मुबाहिला करें और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें ।

मुबाहिला क्या है ? मुबाहिला का मतलब है मलाइनत, यानी फ़रीक़ैन में से झूठे पर नुज़ूले लानत की बद दुआ, यह लफ़्ज़ बहलह से बना है और बहलह लानत को कहते हैं, जैसा कि ताजुल उरूस और अलक़ामूसुल मुहीत में मज़कूर है । मुफ़स्सिरीने किराम की तसरीह के मुताबिक़ यह आयत तब नाज़िल हुई जब नजरान के ईसाइयों का वफ़्द नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और ईसा अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ बह्सो मुबाहिसा करने लगा । उनके तअस्सुब हठधर्मी और बातिल नज़रयात पर क़ायम रहने की वजह से मुबाहिला की आयत उतरी । अल्लामा बग़वी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि अबनाउना से हज़रत हसन व हुसैन, निसाउना से सैय्यदा फ़ातमुतुज़्ज़हरा और अनफ़ुसना से नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी और सैय्यदना अली मुर्तज़ा की ज़ाते बाबरकात मुराद हैं । अहले अरब चचा के बेटे को नफ़्स भी कहा करते थे जैसा कि इरशादे बारी तआला है ।

وَلَا تَلْمِزُوْا اَنْفُسَكُمْ

इस आयत में अनफ़ुसकुम से इख़्वानुकुम मुराद है ।

इस वाक़आ का ख़ुलासा यह है कि आयते मुबाहिला मुआनिदीन पर हुज्जत क़ायम करने के लिए नाज़िल हुई, दिन और जगह का तअऐय्युन कर लिया गया, नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इमाम हसन व हुसैन का हाथ पकड़ कर तशरीफ़ लाए, सैय्यदा ख़ातूने जन्नत पीछे थीं और सैय्यदना अली भी उनसे पीछे चले आ रहे थे और नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया,,

"اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ اَهْلُ بَيْتِیْ"

"ऐ अल्लाह ! यह मेरे अहलेबैत हैं"

फिर फ़रमायाः जब मैं दुआ करूँ तो तुम आमीन कहना (तफ़सीरे मज़हरी जिल्द 2, सफ़ा 61) इन नुफ़ूसे क़ुदसिया को देखकर किसी ईसाई में यह जुरअत न हुई कि वह मुबाहिला के लिए आते बल्कि उनके सरकर्दा यूँ कहने लगे, ऐ गिरोहे नसारा ! मुझे ऐसे चेहरे नज़र आ रहे हैं कि अगर यह अल्लाह तआला से दुआ करें तो अल्लाह पहाड़ को भी उसकी जगह से हटा देगा। लिहाज़ा मुबाहिला न हुआ, इस आयत से एक तो ईसाइयों की रूसवाई हुई दूसरे अहलेबैत की फ़ज़ीलत साबित हुई और मालूम हुआ कि यह वह हस्तियाँ हैं कि जो तमाम क़राबतदारों में नबीए करीम के सबसे क़रीबी और प्यारे हैं और अल्लाह के इतने बरगुज़ीदा हैं कि इनकी आमद से नसरानी इतने मरऊब हुए कि सामना करने की जुरअत न कर सके।

आयत न0 4 :- सूरतुद्दह्र की आयत 987 में इरशादे ख़ुदावन्दी है,

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ،وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰی حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّأَسِيْرًا إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَّلَا شُكُوْرًا۔

जो नज़्र पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती ख़ूब फैल जाने वाली है और (अपना) खाना अल्लाह की महब्बत में (ख़ुद उसकी तलब से हाजत होने के बावजूद ईसारन) मोहताज को और यतीम को और क़ैदी को खिला देते हैं (और कहते हैं कि) हम तो महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए तुम्हें खिला रहे हैं, न तुम से किसी बदले के ख़्वास्तगार हैं और न शुक्रगुज़ारी के।

अहलेबैते अतहार रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की चश्मे इल्तिफ़ात के ज़ेरे साया परवान चढ़े, हज़रत सैय्यदना अली अलैहिस्सलाम को सिग्रसिनी में ही रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी किफ़ालत में ले लिया, सैय्यदा फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सायए आतिफ़त में पलीं, और फिर इमाम हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम कि जिनकी तरफ़ रसूले ख़ुदा हर घड़ी मुलतफ़ित रहते और

उनकी जुदाई गवारा न फ़रमाते,, यह इस क़दर सोहबत, महब्बत और क़ुर्बत का फ़ैज़ान था कि अख़्लाक़े नबवी और आदाबे मुस्तफ़वी इन हस्तियों में ऐसे रच बस गए थे गोया इनमें तसवीरे मुस्तफ़ा नज़र आती थी, यह शख़्सियात ज़ोह्दो तक़्वा, अफ़्वो दरगुज़र, ईसारो क़ुर्बानी और जूदो सख़ावत ग़रज़ हर-हर सिफ़ते कमाल में अदीमुल मिसाल नज़र आती हैं। मज़कूरा आयत में अहलेबैत के जूदो सख़ा, दस्ते अता और ईसारो क़ुर्बानी का ज़िक्र है। इमाम नीशापुरी ने अपनी तफ़सीर में लिखा है कि वाहिदी ने किताबुल बसीत में और ज़मख़शरी ने अलकश्शाफ़ में बयान किया है कि यह सूरत और बिलख़ुसूस यह आयत (व युतइमूनत्तआमा....)अहलेबैते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मुताल्लिक़ नाज़िल हुई। मुन्दरजा बाला आयात में मज़कूरा लफ़्ज़ अन्नज़रि में इशारा इस मन्नत की जानिब है जो सैय्यदना इमाम हसन व इमाम हुसैन अलैहिमस्सलाम की अलालत के मौक़े पर सैय्यदना अली व फ़ातमा अलैहिमस्सलाम ने बहुक्मे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मानी थी। एक रिवायत के मुताबिक़ यह आयत अहलेबैत के हक़ में उतरी और दूसरे क़ौल के मुताबिक़ अबुल दहदाह अन्सारी के हक़ में उतरी और पहला क़ौल राजेह है। इमाम शोकानी, सुयूती, नीशापुरी, अलउन्दुलुसी बैज़ावी, इमाम ख़ाज़िन और जम्हूर मुफ़स्सिरीनो मुहद्दिसीन के नज़दीक यह आयत हज़रत अली, सैय्यदा फ़ातमा, सैय्यदा फ़िज़्ज़ा और सैय्यदना हसन व हुसैन अलैहिमुस्सलाम के मुताल्लिक़ उतारी, और इन आयात के ज़रिया रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को अहलेबैत के मुताल्लिक़ बशारत दी गई। यह वाक़आ तमाम मुफ़स्सिरीन ने तफ़सीलन या इजमालन ज़िक्र किया है।

अल्लामा आलूसी अपनी तफ़सीर में लिखते हैं, हज़रत अता के तरीक़ से हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन अलैहिमस्सलाम एक बार बीमार हुए तो उनके नाना हज़रत मुहम्मदुर्रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनकी अयादत की। उन्होंने हज़रत अली अलैहिस्सलाम से फ़रमाया : ऐ अबुल हसन ! आप बच्चों की सेहतयाबी के लिए कोई नज़्र मान लीजिए, तो हज़रत अली, हज़रत फ़ातमा और हज़रत फ़िज़्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने यह नज़्र मानी कि अगर यह दोनों इस बीमारी से सेहतयाब हो गए तो वह शुक्राना के तौर पर तीन रोज़ रोज़े रखेंगे। पस अल्लाह तआला ने

उन दोनों साहबज़ादों को आफ़ियत से नवाज़ा और उस वक़्त आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम के पास (नज़्र को पूरा करने के लिए) क़लीलो कसीर कुछ न था, सो हज़रत अली अलैहिस्सलाम ख़ैबर से ताल्लुक़ रखने वाले शमऊन नामी यहूदी की तरफ़ गए और उससे तीन साअ जौ क़र्ज़ लेकर आए। हज़रत सैय्यदा फ़ातमा ने एक साअ को पीसा और घर वालों की तादाद के मुताबिक़ पाँच रोटियां बनाईं। हज़रत अली ने हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ नमाज़े मग़रिब अदा की और फिर घर आए तो उनके सामने रखा गया, ऐन उसी वक़्त एक साइल ने दरवाज़े पर सदा लगाई ! ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा के घर वालो ! मैं एक मिस्कीन मुसलमान हूँ, तुम मुझे कुछ खिलाओ, अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत के दस्तरख़्वान से खिलाएगा। उन्होंने अपने ऊपर उसको तरजीह दी, और रात सिर्फ़ पानी पर गुज़ार ली और सुबह फिर रोज़े रख लिए। फिर हज़रत फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा ने दूसरा साअ लिया और उन्हें पीसा, हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ नमाज़े मग़रिब अदा की और अपने घर चले आए तो उनके सामने खाना रखा गया, ऐन उसी वक़्त एक यतीम उनके दरवाज़े पर जा खड़ा हुआ और उसने सदा लगाई, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) के घर वालो ! तुम पर सलामती हो, मैं मुहाजिरीन मुसलमानों में से एक यतीम हूँ, मुझे खिलाओ अल्लाह तुम्हें जन्नत के दस्तरख़्वानों से खिलाएगा। सो उन्होंने उसे अपने आप पर तरजीह दी और वह दिन और दो रातें उन्होंने सिवाए सादा पानी के कुछ न चखा और अगले दिन फिर रोज़ा रख लिया। जब तीसरे दिन हज़रत फ़ातमा ने जौ के तीसरे हिस्से को लिया और उसे पीसा, और रोटियां बनाईं और हज़रत अली अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ नमाज़े मग़रिब अदा करने के बाद घर चले आए तो उनके सामने खाना रखा गया, ऐन उसी वक़्त एक क़ैदी दरवाज़े पर आ गया और उसने सदा लगाई, ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) के घर वालो ! तुम पर सलामती हो, मैं मुहम्मद के हाँ क़ैदी हूँ, तुम मुझे कुछ खिलाओ, अल्लाह तुम्हें खिलाएगा, सो उन्होंने उसे अपने ऊपर तरजीह दी और रात सादा पानी पर ही बसर की। जब उन्होंने सुबह की तो हज़रत अली ने इमाम हसन व हुसैन का हाथ थामा और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पहुँच गए, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें देखा तो वह शिद्दते भूख से चूज़ों की तरह तड़प रहे

थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अबुल हसन ! क्या वजह है कि मैं तुम्हें इस बुरी हालत में देख रहा हूँ और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उठकर उनके साथ चल दिए (ताकि अपनी लख़्ते जिगर को भी देखें)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को मेहराब में पाया जिनकी पुश्त उनके शिकम से लग चुकी थी और आंखें अन्दर को धंस चुकी थीं। यह सूरतेहाल देखकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम आबदीदा हो गए और दिल पर बोझ आया, उसी वक़्त हज़रते जिब्रील उतरे और अर्ज़ किया ! या रसूल्लाह ! यह आयात ले लें, अल्लाह तआला ने आपके घर वालों के मुताल्लिक़ आपको बशारत दी है।

आयत न0 5 :- कुरआन मजीद की सूरते आले इमारान की आयत **103** में अल्लाह तआला का इरशाद है,

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

'और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और तफ़रक़े में न पड़ो' इस आयते मुबारका में वाज़ेह हुक्म है कि अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और सब मिलकर थामो कि इसी को मिल कर थामने में तुम्हारा इत्तिहाद है और छोड़ने में तफ़रक़ा है। आख़िर यह हब्लुल्लाह क्या है कि जिसको थामना वहदते मिल्लत, अम्नो सलामती और अदम इन्तिशार के हुसूल की ज़मानत है और जिसको छोड़ने से मिल्लते इसलामिया के टुकड़े-टुकड़े होने का अन्देशा है। जम्हूर मुफ़स्सिरीन के अक़्वाल के मुताबिक़ ''हब्लुल्लाह'' से कुरआन, अहलेबैते अतहार और जमाअत मुराद है। अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ! किताबुल्लाह, अल्लाह की वह रस्सी है जो आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : हम अल्लाह की रस्सी हैं जिसके मुताल्लिक़ अल्लाह तबारको तआला ने फ़रमाया,

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا

अहलेबैत के मुताल्लिक़ दीगर आयात

सूरते नमल की आयत न० **89, 90** में इरशादे बारी तआला है।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّنْهَا وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ، وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ۔

और जो कोई नेकी करे, उसके लिए इससे बेहतर (जज़ा) है, और वही लोग उस दिन (क़यामत) की घबराहट से अमान में होंगे।

इस आयत में हसनह से अहलेबैत की महब्बत और अस्सैइयेअह से अहलेबैत का बुग़्ज़ मुराद है। अबू दाऊदुस्सबीई ने अबू अब्दुल्लाहुलहज़ली से रिवायत किया है कि मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब के पास हाज़िर हुआ तो उन्होंने फ़रमाया, अब्दुल्लाह ! क्या मैं तुम्हें उस नेकी की ख़बर न दूँ कि जो उसे बजा लाएगा अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस बुराई की कि जो उसे करेगा अल्लाह तआला उसे जहन्नुम में औंधे मुँह डालेगा और उसका कोई अमल क़ुबूल न होगा, मैंने कहा, क्यों नहीं आप ज़रूर बताइए, उन्होंने कहा, नेकी हमसे महब्बत है और बुराई हमसे बुग़्ज़ है।

सूरए रूम आयत 43 में है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِندَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ۔

और काफ़िर कहते हैं कि आप रसूल नहीं, आप फ़रमा दीजिए कि मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है और वह जिसके पास किताब का इल्म है।

हज़रत सईद बिन जबीर से इस आयत के मुताल्लिक़ सवाल किया गया कि क्या इससे मुराद अब्दुलल्लाह बिन सलाम हैं ? आपने फ़रमाया, नहीं, यह कैसे हो

सकता है, यह सूरत मक्की है और अब्दुल्लाह बिन सलाम बाद अज़ हिजरत मदीना में इसलाम लाए । अबू सईद ख़ुदरी ने फ़रमाया कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से इस आयत (الذی عندہ علم من الکتاب) के बारे में सवाल किया तो आपने फ़रमाया यह मेरे भाई सुलेमान बिन दाऊद का वज़ीर है ।

फिर قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتَابِ के मुताल्लिक़ पूछा, तो फ़रमाया इससे मुराद मेरा भाई अली बिन अबी तालिब है ।

सूरए नह्ल की आयत 43 में है ।

فَاسْأَلُوْا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۔

"अहले ज़िक्र से पूछो अगर तुम नहीं जानते"

जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक यहाँ अहले ज़िक्र से अहलेबैते किराम अलैहिमुस्सलाम मुराद हैं । शवाहिदुत्तन्ज़ील में है कि हज़रत अली से इस आयत फ़सअलू अहलज़ ज़िकरि इन कुन्तुम ला तालमून के मुताल्लिक़ पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम, हम अहलेबैत अहले ज़िक्र हैं, हम अहले इल्म हैं और हम (कलामे इलाही की) तावील और तन्ज़ील की कान हैं, मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना हैः मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है पस जो इल्म का इरादा रखता हो वह दरवाज़े से आए । इन आयाते बैय्येनात से अहलेबैते पाक का मक़ामो मर्तबा ज़ाहिरो बाहिर और उनकी मक़बूलियतो महबूबियत अज़हर मिनश शम्स है । मज़ीद आयाते क़ुरआनिया में भी अहलेबैते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का ज़िक्रे जमील रोशन है । तवालत के ख़ौफ़ से इख़्तिसार से काम लिया जा रहा है ।

फ़ज़ायले अहलेबैत और फ़रामीने रसूल

अहलेबैते अतहार के फ़ज़ायलो मनाक़िब के बाब में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रामीने आलिया व फ़रमूदाते मुक़द्दसा इस बात पर दाल हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को उन हस्तियों से किस दर्जा क़ल्बी ताल्लुक़ लगाव और महब्बत थी, अहादीसे नबविया अला साहिबहस्सलातु वस्सलाम का अमीक़ मुतालआ किया जाए तो अहलेबैते अतहार के दरजातो मरातिब की नई-नई जेहतें नज़र नवाज़ होती हैं, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने कहीं तो ख़ुद को शजर और अहलेबैत को फल फूल क़रार दिया, कहीं उनकी महब्बत को अपनी महब्बत और उनसे अदावत को अपनी अदावत कहा, और कहीं मुतमस्सिकीने अहलेबैते अतहार को रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस लाज़वाल इनायत की सरमदी नवेद सुनाई कि वह हमेशा गुमरही व बे राह रवी से महफ़ूज़ रहेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपने असहाबे अख़्यार को जा बजा और मौक़ा ब मौक़ा अहलेबैत के मक़ामो मर्तबे से रूशनास कराते रहते थे ताकि वह और उम्मत के जमीअ अफ़राद को मरातिबे अहलेबैत की मारफ़त हासिल हो जाए और उनसे अहलेबैत के हक़ में तक़सीर न होने पाए। फ़ज़ायले अहलेबैत के मुताल्लिक़ नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशादाते मुबारका रिफ़्ज़ो ख़ुरूज के शैतानी जाल को तार-तार करने को काफ़ी हैं और गुस्ताख़ी व बेबाकी की मुतअफ़्फ़ुन फ़ज़ा में नसीमे बहार के वह झोंके हैं जो चमनिस्ताने ईमान को समरबार करते हैं। फ़ज़ीलते अहलेबैते अतहार के हवाले से चन्द अहादीसे पाक ज़ेल में मुन्दरिज हैं।

1. शजरे नुबूवत के फल फूल :-

عِنِ ابْنِ عَبَّاس رَفَعَه : اَنَا شَجَرَةٌ وَ فَاطِمَةُ حِمْلُهَا وَ عَلِیٌّ لِقَاحُهَا وَ الْحَسَنُ
وَ الْحُسَیْنُ ثَمَرُهَا ، وَ الْمُحِبُّوْنَ اَهْلُ الْبَیْتِ وَرَقُهَا، هُمْ فِی الْجَنَّةِ حَقّاً حَقّاً

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु मरफ़ूअन रिवायत करते हैं (कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया) मैं शजर हूँ और फ़ातमा उसके फल की इब्तिदाई हालत हैं, और अली उसके फूल को मुन्तक़िल करने वाला है, और हसन और हुसैन उस दरख़्त के फल हैं, और अहलेबैत से महब्बत करने वाले उस दरख़्त के औराक़ हैं, वह यक़ीनन यक़ीनन जन्नत में हैं। (इसे इमाम दैलमी ने रिवायत किया है)

2. हदीसे सफ़ीनतुन्नजात :-

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: مَثَلُ أَهْلِ بَيْتِيْ مَثَلُ سَفِيْنَةِ نُوْحٍ مَنْ رَكِبَ فِيْهَا نَجَا وَمَنْ تَخَلَّفَ عَنْهَا هَلَكَ.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, मेरे अहलेबैत की मिसाल कश्तिए नूह जैसी है, जो इसमें सवार हुआ उसने नजात पाई और जो सवार न हुआ वह हलाकत का शिकार हुआ। यह हदीस मुतअद्दिद तरीक़ से मरवी है और नासिबीन बड़ी शद्दोमद से इसे ज़ईफ़ क़रार देने की कोशिश करते हैं जबकि ऐसा नहीं, जिस तरीक़ से यह हदीस यहाँ ज़िक्र की गई है वह तमाम नासिबी कोशिशों का कलअ क़मअ कर देगी। इब्ने बज़ाज़ फ़रमाते हैं कि इस तरीक़ के तमाम रावी हसन हैं। इस हदीस में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने अहलेबैत को कश्तिए नूह की मिस्ल क़रार दिया है, इस कश्ती की सवारी से मुराद अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम से मवद्दत, उनके हुकूक़ की पासदारी और उनकी ताज़ीमो तकरीम है जो बाइसे नजात है यानी फ़ितनों, बलाओं और दुनिया व उक़बा के आलाम से नजात का ज़रिया है और जो इस कश्ती पर सवार न हुआ, यानी अहलेबैत के हुकूक़ की पासदारी न की और तअस्सुब का शिकार होकर गुस्ताख़ी व बेबाकी और ईज़ाए अहलेबैत पर उतरा रहा, वह बहरे आलामो आसाम में ग़रक़ाब हुआ, उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ईज़ा दी, ऐसे शख़्स की नजात कहाँ मुमकिन है।

3. हदीसे सक़लैन :- हदीसे सक़लैन भी मुतअद्दिद तुरूक़ से मरवी है, सहीह

मुस्लिम में ज़ैद बिन अरक़म से मरवी है कि

قَالَ زَيْدُ ابْنُ الْأَرْقَمِ قَامَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوماً فِيْنَا خَطِيْباً بِمَاءٍ يُدْعىٰ خُماًّ بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِيْنَةِ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنىٰ عَلَيْهِ وَوَعَظَ وَذَكَّرَ ثُمَّ قَالَ أَمَّا بَعْدُ أَلَا أَيُّهَا النَّاسُ فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ يُوْشَكُ أَنْ يَأْتِيَ رَسُوْلُ رَبِّيْ فَأُجِيْبُ وَأَنَا تَارِكٌ فِيْكُمْ ثَقَلَيْنِ أَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللهِ فِيْهِ الْهُدٰى وَالنُّوْرُ فَخُذُوْا بِكِتَابِ اللهِ وَاسْتَمْسِكُوْا بِهٖ فَحَثَّ عَلٰى كِتَابِ اللهِ وَرَغَبَ فِيْهِ ثُمَّ قَالَ وَأَهْلُ بَيْتِيْ أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ أُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ

मक्का और मदीना के दरमियान पानी का एक मक़ाम है जिसे ख़ुम कहा जाता है, वहाँ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने खड़े होकर ख़ुतबा दिया, जिसमें अल्लाह की हम्दो सना की, वअज़ो नसीहत फ़रमाई, उसके बाद फ़रमाया, हम्दो सना के बाद, ऐ लोगो ! मैं एक बशर हूँ, अनक़रीब मेरे पास मेरे रब का फ़रिश्ता पयामे रेहलत लेकर आएगा और मैं उसे कुबूल कर लूँगा, और मैं तुम्हारे पास दो वज़नी और बड़ी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ, उनमें एक तो किताबे इलाही है जिसमें नूर और हिदायत है अल्लाह की किताब को पकड़ो और मज़बूती से पकड़े रहो, यहाँ आपने किताबे इलाही के बारे में तरग़ीब दिलाई और शौक़ दिलाया, फिर फ़रमाया (सक़लैन में दूसरी चीज़ मेरे अहलेबैत हैं) मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूँ कि मेरे अहलेबैत के हक़ में अल्लाह से डरो, मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूँ कि मेरे अहलेबैत के बारे में अल्लाह से डरो । एक और जगह इसी हदीस में यह इज़ाफ़ा भी है कि अल्लाह की किताब आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है और मेरी इतरत यानी अहलेबैत और यह दोनों हरगिज़ जुदा न होंगी यहाँ तक कि दोनों मेरे पास हौज़े कौसर पर आ मिलेंगी, पस देखो कि मेरे बाद तुम उनके साथ क्या सुलूक करते हो ।

4. हदीसे किसा :-

قَالَتْ عَائِشَةُ : خَرَجَ النَّبِيُّ غُدَاةً وَعَلَيْهِ مِرْطٌ

مُرَحَّلٍ مِنْ شَعْرٍ أَسْوَدٍ فَجَاءَ الْحَسَنُ فَأَدْخَلَهُ مَعَهُ، ثُمَّ جَاءَ الْحُسَيْنُ فَأَدْخَلَهُ مَعَهُ، ثُمَّ جَاءَ فَاطِمَةُ فَأَدْخَلَهَا، ثُمَّ جَاءَ عَلِيٌّ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ فَأَدْخَلَهُ ثُمَّ قَالَ "إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا"

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम सुबह इस हाल में बाहर तशरीफ़ लाए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक चादर ओढ़ रक्खी थी जिस पर सियाह ऊन से कजावों के अक्स बने हुए थे, हज़रत हसन बिन अली आए तो आपने उन्हें इस चादर में दाख़िल कर लिया, फिर हज़रत हुसैन आए तो वह भी उनके साथ चादर में दाख़िल हो गए, फिर हज़रत फ़ातमा आईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें भी चादर में दाख़िल फ़रमा लिया, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह आयते मुबारका पढ़ी (पस अल्लाह यही चाहता है ऐ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अहलेबैत ! तुमसे हर हर क़िस्म के गुनाह का मैल 'और शक व नक़्स की गर्द तक को' दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत से नवाज़कर पाक साफ़ कर दे)

5. आले नबी अलैहिस्सलाम पर दरूदो सलाम :-

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ أَبِي لَيْلٰى، قَالَ: لَقِيَتُ كَعْبَ بْنَ عُجْرَةَ قَالَ: أَلَا أُهْدِي لَكَ هَدِيَّةً؟ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَ: اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ فَقَدْ عَرَفْنَاهُ أَوْ: عَلِمْنَاهُ، فَكَيْفَ الصَّلَاةُ عَلَيْكَ؟ قَالَ: "تَقُولُ: اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ-

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला का बयान है कि मुझे हज़रत काब बिन अजरा मिले और फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक तोहफ़ा न दूँ जिसे मैंने नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही से सुना है, मैंने अर्ज़ किया क्यों नहीं मुझे वह ज़रूर अता करें, उन्होंने फ़रमाया : हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही

वसल्लम ! से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ! अल्लाह ने हमें आपकी ख़िदमत में सलाम पेश करना तो सिखा दिया है लेकिन हम आप पर और आपके अहलेबैत पर दरूद कैसे भेजा करें ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने कहा, यूँ कहो,,

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ۔

एक और जगह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे गिरामी है :

لَا تُصَلُّوا عَلَيَّ الصَّلَاةُ الْبَتْرَاءُ. قَالُوا : وَمَا الصَّلَاةُ الْبَتْرَاءُ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ : تَقُولُونَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ، وَتَمْسِكُونَ، بَلْ قُولُوا : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ.

अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा में यह हदीस मन्क़ूल है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मुझपर सलाते बतरा न भेजा करो, सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम सलातुल बतरा क्या है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वस्सलम ने फ़रमाया : तुम कहते हो, अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मद और इसी पर इक्तिफ़ा करते हो तुम दरूद यूँ पढ़ा करो,

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِ مُحَمَّدٍ

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُكْتَالَ بِالْمِكْيَالِ الْأَوْفٰى إِذَا صَلّٰى عَلَيْنَا أَهْلَ الْبَيْتِ فَلْيَقُلْ : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ وَعَلٰى أَزْوَاجِهِ أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَهْلِ بَيْتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

(रवाहुश्शाफ़ई फ़ी मसनदिही अन अबी हुरैरह)

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स यह पसन्द करता है कि उसका नामए आमाल (अज्रो सवाब के पैमाने से) पूरा-पूरा नापा जाए, (उसको चाहिए कि वह) हम (और हमारे) अहलेबैत पर दरूद भेजे तो यूँ कहे, ऐ अल्लाह तू दरूद भेज हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर और उनकी अज़वाजे मुतहहरात पर, और उनकी औलादे अतहार और उनके अहलेबैते अतहार पर जैसा कि तूने दरूद भेजा हज़रत इब्राहीम की आल पर, बेशक तू बहुत ज़्यादा तारीफ़ किया हुआ और बुर्ज़ुगी वाला है।

عَنْ اَبِي مَسْعُودِ الْاَنصارِى قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مَنْ صَلَّى صَلَاةً لَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ وَ عَلَى اَهْلِ بَيْتِى، لَمْ تُقْبَلْ مِنْهُ، وَقَالَ اَبُو مَسْعُودٍ لَوْ صَلَّيْتُ صَلَاةً، لَا اُصَلِّى فِيهَا عَلَى مُحَمَّدٍ، مَا رَأيتُ صَلَاتِي تَتِمُّ.

अबू मसऊद अन्सारी से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने नमाज़ पढ़ी और मेरे अहलेबैत पर दरूद न पढ़ा, उसकी नमाज़ कुबूल न होगी। हज़रत अबू मसऊद अन्सारी फ़रमाते हैं अगर मैं नमाज़ पढ़ूँ और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही पर दरूद न पढ़ूँ तो मैं नहीं समझता कि मेरी नमाज़ कामिल होगी।(इसे दारक़ुतनी और बेहिक़ी ने रिवायत किया है)

6. बुग़्ज़े अहलेबैत से तहज़ीर :-

عَنْ عَائِشَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ سِتَّةٌ لَعَنْتُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ وَكُلُّ نَبِيٍّ مُجَابُ الدَّعْوَةِ: اَلزَّائِدُ فِي كِتَابِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَالْمُكَذِّبُ بِقَدَرِ اللّٰهِ وَالْمُتَسَلِّطُ عَلَى أُمَّتِي بِالْجَبَرُوتِ لِيُذِلَّ مَنْ أَعَزَّ اللّٰهُ وَيُعِزَّ مَنْ أَذَلَّ اللّٰهُ وَالْمُسْتَحِلُّ حُرْمَةَ اللّٰهِ وَالْمُسْتَحِلُّ مِنْ عِتْرَتِي مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَالتَّارِكُ السُّنَّةِ.

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमायः छः बन्दों पर मैं लानत करता हूँ

और अल्लाह भी उनपर लानत करता है, और हर गुज़िशता नबी भी उनपर लानत करता है,,

1. किताबुल्लाह में ज़्यादती करने वाला
2. अल्लाह की तक़दीर को झुटलाने वाला
3. ज़ुल्मो जब्र से तसल्लुत हासिल करने वाला ताकि उसके ज़रिया उसे इज़्ज़त दिला सके जिसे अल्लाह ने ज़लील किया है और उसे ज़लील कर सके जिसे अल्लाह ने इज़्ज़त दी है।
4. अल्लाह की हराम कर्दा चीज़ों को हलाल करने वाला
5. मेरी इतरत यानी अहलेबैत की हुरमत को हलाल करने वाला
6. मेरी सुन्नत का तारिक

اِشْتَدَّ غَضَبُ اللهِ وَغَضَبِيْ عَلٰى مَنْ أَهْرَقَ دَمِيْ وَآذَانِيْ فِيْ عِتْرَتِيْ

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआला का और मेरा ग़ज़ब उस शख़्स पर भड़क उठता है जो मेरा ख़ून बहाये, और मेरे ख़ानदान के बारे में मुझे अज़ीयत पहुँचाये।

وَعَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ أَنَّهُ قَالَ يَا مُعَاوِيَةَ بْنَ خُدَيْجٍ إِيَّاكَ وَبُغْضُنَا فَإِنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَا يَبْغُضُنَا وَلَا يَحْسُدُنَا أَحَدٌ إِلَّا ذِيْدَ عَنِ الْحَوْضِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِسِيَاطٍ مِّنْ نَّارٍ.

हज़रत हसन बिन अली अलैहिमस्सलाम रिवायत करते हैं कि उन्होंने मुआविया बिन ख़ुदैज से फ़रमाया : हम अहलेबैत के बुग़्ज़ से बचो, क्योंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कि हम अहलेबैत से जो भी बुग़्ज़ रखे और हसद करे, क़यामत के दिन उसे आग के चाबुक से हौज़े कौसर से धुतकार दिया जाएगा।

قَالَ: جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْأَنْصَارِيُّ، قَالَ: خَطَبَنَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَمِعْتُهُ وَهُوَ يَقُوْلُ: "أَيُّهَا النَّاسُ، مَنْ أَبْغَضَنَا أَهْلَ الْبَيْتِ، حَشَرَهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَهُوْدِيًّا". فَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَإِنْ

صَامَ وَصَلَّى ؟ قَالَ : "وَإِنْ صَامَ وَصَلَّى، وَزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ، أَيُّهَا النَّاسُ، احْتَجَرَ بِذَلِكَ مِنْ سَفْكِ دَمِهِ، وَأَنْ يُؤَدِّيَ الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ، مُثِّلَ لِي أُمَّتِي فِي الطِّينِ، فَمَرَّ بِي أَصْحَابُ الرَّايَاتِ، فَاسْتَغْفَرْتُ لِعَلِيٍّ وَشِيعَتِهِ"

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रिवायत करते हैं, एक दफ़ा रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हमसे ख़िताब फ़रमाया पस मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना, ऐ लोगो ! जो हमारे अहलेबैत से बुग्ज़ रखता है अल्लाह तआला उसे रोज़े क़यामत यहूदियों में उठाएगा, मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! अगरचे वह रोज़े और नमाज़ का पाबन्द ही क्यों न हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ अगरचे वह रोज़े और नमाज़ का पाबन्द ही क्यों न हो, और ख़ुद को मुसलमान तसव्वुर करता हो, ऐ लोगो ! यह लिबादा ओढ़कर उसने अपना ख़ून मुबाह होने से बचाया, और यह कि वह ज़लील होकर अपने हाथ से जिज़्या दें, पस मेरी उम्मत मुझे वादी में दिखाई गई पस मेरे पास से झण्डों वाले गुज़रे तो मैंने अली और उसके मददगारों के लिए मग़फ़िरत तलब की।

7. महब्बते अहलेबैत की तरग़ीब :-

عَنْ جَدِّهِ ابْنِ عَبَّاسٍ، رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "أَحِبُّوا اللّٰهَ لِمَا يَغْذُوكُمْ بِهِ مِنْ نِعَمِهِ، وَأَحِبُّونِي لِحُبِّ اللّٰهِ، وَأَحِبُّوا أَهْلَ بَيْتِي لِحُبِّي"

तिरमिज़ी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह से मुहब्बत रखो क्योंकि वह तुम्हें अपनी नेमत की रोज़ी देता है, और अल्लाह से मुहब्बत की बिना पर मुझसे मुहब्बत रखो और मेरी मुहब्बत की बिना पर मेरे अहलेबैत से मुहब्बत रखो।

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ ابْنِ اَبِيْ لَيْلٰى وَاِسْمُهُ بِلَالٌ اَوْ بُلَيْلُ الْاَنْصَارِيِّ مَرْفُوْعًا: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ (صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم) : لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ

إِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهِ، وَ يَكُوْنَ عِتْرَتِيْ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ عِتْرَتِهِ، وَ يَكُوْنَ أَهْلِيْ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَهْلِهِ، وَ يَكُوْنَ ذَاتِيْ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ ذَاتِهِ.

हज़रत अबू लैला से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उसकी जान से बढ़कर महबूब न हो जाऊँ, और मेरे अहलो अयाल उसे अपने अहलो अयाल से ज़्यादा महबूब न हो जाएं, और मेरी इतरत (कुम्बा) उसे उसके कुम्बे से ज़्यादा महबूब न हो जाए, और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब न हो जाए।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ، رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : أَثْبَتُكُمْ قَدَماً عَلَى الصِّرَاطِ أَشَدُّكُمْ حُبّاً لِأَهْلِ بَيْتِيْ.

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : पुल सिरात पर तुम में से सबसे ज़्यादा साबित क़दम वह होगा जो तुम में सबसे ज़्यादा मेरे अहलेबैत और सहाबा से महब्बत करता होगा।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اَلنُّجُوْمُ أَمَانٌ لِأَهْلِ السَّمَاءِ، إِذَا ذَهَبَتِ النُّجُوْمُ ذَهَبَ أَهْلُ السَّمَاءِ، وَأَهْلُ بَيْتِيْ أَمَانٌ لِأَهْلِ الْأَرْضِ، فَإِذَا ذَهَبَ أَهْلُ بَيْتِيْ ذَهَبَ أَهْلُ الْأَرْضِ.

हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : सितारे आसमान वालों के लिए पनाहगाह हैं जब सितारे ग़ायब हो जाएंगे तो आसमान वाले भी मिट जाएंगे, और मेरे अहलेबैत ज़मीन वालों के लिए पनाह हैं लिहाज़ा जब अहलेबैत रूख़सत हो जाएंगे तो ज़मीन वाले भी ख़त्म हो जाएंगे। (इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है)

इमामुल हदीस शैख़ुल हदीस, शैख़ क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताबे मुस्तताब ''अशशिफ़ा फ़ित्तारीफ़े बहुक़ूकुल मुस्तफ़ा'' में एक हदीस नक़्ल फ़रमाई है, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया

مَعۡرِفَةُ آلُ مُحَمَّدٍ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ ، وَحُبُّ آلُ مُحَمَّدٍ جَوَازٌ عَلَى الصِّرَاطِ ، وَالۡوِلَايَةُ لِآلِ مُحَمَّدٍ أَمَانٌ مِّنَ الۡعَذَابِ.

आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम (के मक़ाम) का इरफ़ान हासिल करना जहन्नम से नजात है और आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम से महब्बत रखना पुल सिरात से पार हो जाना है, और आले मुहम्मद की नुसरतो हिमायत करना अज़ाब से अमान पाना है ।

عَنۡ زَيۡدِ ابۡنِ اَرۡقَم رَضِىَ اللهُ عَنۡهُ مَرۡفُوعاً : خَمۡسٌ مَنۡ اُوۡتِيَهُنَّ لَمۡ يُقۡدَرُ عَلٰى تَرۡكِ عَمَلِ الۡاٰخِرَةِ، زَوۡجَةٌ صَالِحَةٌ وَ بَنُوۡنَ اَبۡرَارٌ وَ حَسَنُ مُخَالَطَةِ النَّاسِ وَمَعِيۡشَةٌ فِىۡ بَلَدِهٖ وَ حُبُّ آلُ مُحَمَّدٍ.

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत है पांच चीज़ें ऐसी हैं कि अगर किसी को नसीब हो जाएं तो वह आख़िरत के अमल का तारिक नहीं हो सकता (और वह पांच चीज़ें यह हैं) नेक बीवी, नेक औलाद, लोगों से हुस्ने मुआशरत, अपने मुल्क में रोज़गार और आले मुहम्मद की महब्बत ।

عَنۡ عَبۡدِاللهِ ابۡنِ مَسۡعُوۡدٍ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ : "حُبُّ اٰلُ مُحَمَّدٍ يَوۡماً خَيۡرٌ مِنۡ عِبَادَةِ سَنَةٍ وَمَنۡ مَاتَ عَلَيۡهِ دَخَلَ الۡجَنَّةَ".

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अहलेबैत की एक दिन की महब्बत पूरे साल की इबादत से बेहतर है और जो इसी महब्बत पर फ़ौत हुआ वह जन्नत में दाख़िल हो गया ।

8. हुब्बे अहलेबैत का अज्र :

عَنۡ عَلِيِّ بۡنِ أَبِي طَالِبٍ ,رَضِيَ اللّٰهُ عَنۡهُ ,قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ : " أَرۡبَعَةٌ أَنَا لَهُمۡ شَفِيعٌ يَوۡمَ الۡقِيَامَةِ وَلَوۡ أَتَوۡنِي بِذُنُوبِ أَهۡلِ الۡأَرۡضِ : الضَّارِبُ بِسَيۡفِهِ أَمَامَ ذُرِّيَّتِي , وَالۡقَاضِي لَهُمۡ حَوَائِجَهُمۡ , وَالسَّاعِي فِي أُمُورِهِمۡ عِنۡدَمَا اضۡطُرُّوا ,وَالۡمُحِبُّ لَهُمۡ بِقَلۡبِهِ وَلِسَانِهِ".

हज़रत अली बिन अबू तालिब से रिवायत है, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : चार क़िस्म के लोग हैं जिनकी मैं क़यामत के दिन शिफ़ाअत करूँगा, अगरचे वह ज़मीन भर गुनाह ही क्यों न लेकर आएं। मेरी ज़ुर्रियत की ख़ातिर तलवार चलाने वाला, उनकी हाजतें पूरी करने वाला, उनके मुआमलात के लिए तगोदौ करने वाला जब वह मजबूर होकर उसके पास आएं और उनसे ज़बान और दिल से मुहब्बत करने वाला।

عَنْ عَلِيِّ ابْنِ حُسَيْنٍ اَنَّہٗ قَالَ: اِنَّ اللّٰہَ قَدْ غَفَرَ لَكَ وَلِذُرِّيَّتِكَ وَلِوَلَدِكَ وَلِاَهْلِكَ وَلِشِيْعَتِكَ وَلِمُحِبِّ شِيْعَتِكَ فَابْشِرْ.

अली बिन हुसैन से रिवायत है कि रब ने तेरी, तेरी ज़ुर्रियत की, तेरी औलाद की, तेरे गिरोह की और तेरे गिरोह के चाहने वालों की बख़्शिश फ़रमा दी, तुझे यह ख़ुशख़बरी मुबारक हो।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ صَنَعَ مَعَ أَحَدٍ مِنْ أَهْلِ بَيْتِيْ يَدًا كَافَأْتُهُ عَنْهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

हज़रत अली से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : जो मेरे अहलेबैत में से किसी के साथ अच्छाई करे मैं उसका बदला क़यामत के दिन चुकाऊँगा।

أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ أَوَّلَ أَرْبَعَةٍ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ أَنَا وَأَنْتَ وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ، وَذَرَارِيْنَا خَلْفَ ظُهُوْرِنَا، وَأَزْوَاجُنَا خَلْفَ ذَرَارِيْنَا، وَشِيْعَتُنَا عَنْ أَيْمَانِنَا وَعَنْ شَمَائِلِنَا

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : बेशक वह चार लोग जो सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होंगे वह मैं और तुम (ऐ अली) और हसन और हुसैन और हमारी औलाद हमारे पीछे होगी और हमारी अज़वाज हमारी औलाद के पीछे होंगी और हमारे चाहने वाले हमारे दायें और बायें होंगे।

मज़कूरा बाला तमाम अहादीसे मुबारका यह हिदायत देती हैं कि अहलेबैते अतहार ज़ुर्रियते ताहिरा की मुहब्बत ऊजिबुल वाजिबात है और यही दुनिया व आख़िरत की सुर्ख़रूई की ज़ामिन है।

मनाक़िबे सैय्यदना मौला अलीउल मुर्तज़ा

कर्रमल्लाहु वजहुहुल करीमिल अज़ीम

अमीरूल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन, मरकज़े सिद्क़ो सफ़ा, क़िबलए अतक़िया, काबए असफ़िया, इमामुल औलिया हज़रत सैय्यदना मौला अलीउल मुर्तज़ा अलैहिस्सलाम के फ़ज़ायलो मनाक़िब बेशुमारो बेहिसाब हैं, अगर यह फ़ज़ायलो मनाक़िब चर्ख़े अज़मत पर रोशनाइए महो नुजूम से रक़म किए जाएं तब भी हक़ अदा न हो, कि आपकी शख़्सियत "जामेउल अख़लाक़ वस्सिफ़ात" है, आपके ज़ोहदो तक़वा और इबादतो रियाज़त के लिए मुमलिकते शब तंग पड़ जाती, आपकी हयाते मुबारका के हर गोशे से तसलीमो रज़ा की किरनें नूरे सहर की तरह फूटती नज़र आती हैं । हिसारे शिर्क का इनहिदाम और सलतनते कुफ़्र का इख़्तिताम आपकी ज़ुलफ़िक़ारे बेनियाम के कारहाए नुमायाँ में से है । किशवरे फ़क़्रो ग़िना के सुलतान भी आप और चर्ख़े वफ़ा के महे ताबाँ भी आप । आप वह ज़ाते गिरामी हैं कि जिनका नाम अली, लक़ब असदुल्लाह, जाए विलादत काबतुल्लाह और हर-हर अदा सिबग़तुल्लाह है । आप सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का महवरे इल्तिफ़ात भी हैं और मरकज़े नवाज़िशात भी, हज़रत अबू तालिब की अयालदारी को महसूस करते हुए रहमतुल लिल आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब उनकी किसी एक औलाद का कफ़ील बनने का इरादा फ़रमाया तो मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे इन्तिख़ाब सैय्यदना अलीउल मुर्तज़ा पर पड़ी, यही इन्तिख़ाबो इन्तिसाब हज़रत शेरे ख़ुदा के लिए इनायातो इनआमाते इलाहिया का वह बाब साबित हुआ जो कभी बन्द हुआ है न होगा ।

अली का मतलब है ऊँचा और बुलन्द, यह असमाए हसना में से एक इस्म भी है, आपकी वालदा माजदा ने आपका इस्मे गिरामी अपने वालिद असद बिन हाशिम की मुनासिबत से हैदर रखा, जिसका माना है असद यानी शेर, एक

क़ौल यह है कि क़ुरैश आपको हैदर कहकर पुकारते थे लेकिन पहला क़ौल राजेह है, फिर आपके वालिदे गिरामी ने यह नाम बदलकर आपका नाम अली रखा । आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्मे बा मुसम्मा थे । ख़ालिक़े अली ओ कबीर ने सैय्यदना अली अलैहिस्सलाम को हर लिहाज़ से उरूज, रिफ़अतें और बुलन्दियां अता फ़रमाईं, क़ुरबते मुस्तफ़ा ने इन रिफ़अतों को औजे कमाल पर पहुँचा दिया और तरबियते शहे कौनेन सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बदौलत आपके क़ल्बो रूह पर अनवारे रिसालत की वह तजल्लियां साया फ़िगन हुईं कि आपकी ज़ात सरचश्मए विलायत व सरापा रूश्दो हिदायत बन गई, और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाहिरी व बातिनी ख़िलाफ़त का ताज आपके सर सजा ।

आपकी कुन्नियत अबुल हसन और अबू तुराब है । कौन अबूतुराब ? मुक़तदाए कामिलीन, मरजए वासिलीन, मौलाए कायनात, साहिबे कश्फ़ो करामात, जो विलायत का जौहरो ख़ुलासा क़रार पाए । आप अलैहिस्सलाम को अपनी यह कुन्नियत इतनी पसन्द थी कि इससे पुकारा जाना अज़हद महबूब रखते थे । तुराब मिट्टी को कहते हैं, इंसान तुराब से है, और फ़ना होकर तुराब यानी मिट्टी में मिल जाएगा । मालूम हुआ कि अबू तुराब आपकी फ़नाइयतो विलायत की तरफ़ इशारा है । हज़रत मुहद्दिस देहलवी के नज़दीक ''लफ़्ज़े तुराब से अहले तौहीदो फ़ना की तरफ़ इशारा है पस लफ़्ज़ अबू तुराब का हासिल यह निकला कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गिरोहे फ़ुक़रा व अरबाबे फ़ना और अहले कमाल हज़रात के मुक़्तदा व इमाम और मरजअ हैं, चुनान्चे मशाइख़े तरीक़त के जितने भी सिलसिले हैं (सिलसिलए नक़्शबन्दिया के अलावा कि इसके मुन्तहा सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं) उनकी आख़िरी कड़ी सैय्यदना मौला अलीउल मुर्तज़ा की ज़ाते गिरामी है ।

अहादीस दर मनाक़िबे सैय्यदना अली

1.

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ : أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ ، مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رضى الله عنه.

ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर सबसे पहले ईमान लाने वाले हज़रत अली हैं।

2. عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَحِمَ اللهُ عَلِيًّا اَللّٰهُمَّ أَدِرِ الْحَقَّ مَعَهُ حَيْثُ دَارَ.

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! अली पर रह्म फ़रमा और हक़ को उधर मोड़ दे जिधर अली हों।

3.

عَنْ أَبِي بَرْزَةَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: لَا يَنْعَقِدُ قَدَمَا عَبْدٍ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ أَرْبَعَةٍ عَنْ جَسَدِهِ فِيْمَا أَبْلَاهُ، وَعُمُرِهِ فِيْمَا أَفْنَاهُ، وَمَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيْمَا أَنْفَقَهُ، وَعَنْ حُبِّ أَهْلِ الْبَيْتِ فَقِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم ! فَمَا عَلَامَةُ حُبِّكُمْ فَضَرَبَ بِيَدِهِ عَلٰى مَنْكَبِ عَلِيٍّ. (رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي الْأَوسَط أخرجه الطبراني في المعجم الأوسط.)"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : आदमी के दोनों क़दम उस वक़्त तक अगले जहान में नहीं पड़ते जब तक कि उससे चार चीज़ों के बारे में सवाल न कर लिया जाए, उसके जिस्म के बारे में कि उसने उसे किस तरह के आमाल में बोसीदा किया , और उसकी उम्र के बारे में कि किस हाल में उसे ख़त्म किया ? और उसके माल के बारे में कि उसने यह कहाँ से कमाया और कहाँ कहाँ ख़र्च किया ? और अहलेबैत की महब्बत के बारे में ? अर्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! आप की (यानी अहलेबैत की) महब्बत की क्या अलामत है ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दस्ते अक़दस हज़रत अली के शाने पर मारा (कि यह महब्बत की अलामत है) इस हदीस को इमाम तिबरानी ने ‘‘अलमोजमुल औसत’’ में रिवायत किया है।

4. عَنِ ابْنِ عُمَرَ ، قَالَ: آخَى رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ بَيْنَ أَصْحَابِهِ، فَجَاءَ عَلِيٌّ عليه السَّلامِ تَدْمَعُ عَيْنَاهُ، فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ آخَيْتَ بَيْنَ أَصْحَابِكَ وَلَمْ تُوَآخِ بَيْنِي وَبَيْنَ أَحَدٍ، فَقَالَ لَه رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وَسَلَّمَ: أَنْتَ أَخِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ. (وہذا رواه الحاكم أيضاً في مستدركہ)

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने असहाब के दरमियान मवाख़ात करवाई, पस हज़रत अली अलैहिस्सलाम इस हाल में आए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे, पस कहने लगे : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम आपने अपने असहाब के दरमियान भाई चारा क़ायम फ़रमाया और मुझे किसी का भाई नहीं बनाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो। (इसे हाकिम ने भी मुस्तदरक में रिवायत किया है)

5. عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ رضي الله عنه، قَالَ: خَلَّفَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فِي غَزْوَةِ تَبُوْكَ. فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَتُخَلِّفُنِي فِي النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ؟ فَقَالَ: أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُوْنَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوْسَى؟ إِلَّا أَنَّه لَا نَبِيَّ بَعْدِي. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ.

हज़रत साद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक के मौक़े पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना में (अपना नायब बनाकर) छोड़ा तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! क्या आप मुझे औरतों और बच्चों में पीछे छोड़कर जा रहे हैं ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि मेरे साथ तुम्हारी वही निस्बत हो जो हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से थी। अलबत्ता मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा। यह हदीस मुत्तफ़क़ अलैह है और मज़कूरा

अलफ़ाज़ मुस्लिम के हैं।

6. عَنْ حَبْشِيِّ بِنْ جُنَادَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: عَلِيٌّ مِنِّيْ وَأَنَا مِنْهُ، وَلَا يُؤَدِّيْ عَنِّيْ إِلَّا عَلِيٌّ.

हज़रत हबशी बिन जुनादा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अली मुझसे और मैं अली से हूँ, और मेरी तरफ़ से (अह्दो पैमान) में मेरे और अली के सिवा कोई दूसरा (ज़िम्मेदारी) अदा नहीं कर सकता।

7. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ): أَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا فَمَنْ أَرَادَ الْعِلْمَ فَلْيَأْتِ بَابَهُ.

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है पस जो इल्म का इरादा करे उसे चाहिए कि दरवाज़े से आए।

8. عَنْ زَيْدِ ابْنِ أَرْقَمَ قَالَ نَزَلَ النَّبِيُّ بِغَدِيْرِ خُمٍّ... ثُمَّ قَالَ: إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ مَوْلَايَ وَأَنَا وَلِيُّ كُلِّ مُؤْمِنٍ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِ عَلِيٍّ، وَقَالَ: مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ.

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जब ग़दीरे ख़ुम में उतरे। फिर फ़रमाया : बेशक अल्लाह मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का मौला हूँ और जिसका मैं मौला हूँ उसका अली मौला है।

9. عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم بَعَثَ إِلَيَّ وَأَنَا أَرْمَدُ الْعَيْنِ، يَوْمَ خَيْبَرَ، فَقُلْتُ: يَارَسُوْلَ اللهِ! إِنِّيْ أَرْمَدُ الْعَيْنِ، قَالَ: فَتَفَلَ فِيْ عَيْنِيْ وَقَالَ: اللَّهُمَّ! أَذْهِبْ عَنْهُ الْحَرَّ وَالْبَرْدَ فَمَا وَجَدْتُ حَرًّا وَلَا بَرْدًا مُنْذُ يَوْمَئِذٍ. وَقَالَ: لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلًا يُحِبُّ اللهَ وَرَسُوْلَهُ، وَيُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُوْلُهُ.. رَوَاهُ أَحْمَدُ."

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने फ़रमाया : हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने जंगे ख़ैबर के दौरान मुझे बुला भेजा और मुझे आशोबे चश्म था, मैंने अर्ज़ किया, या रसूलललाह ! मुझे आशोबे चश्म है । पस हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरी आंखों में लुआबे दहन डाला और फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! इससे गर्मी व सर्दी को दूर कर दे । पस उस दिन के बाद मैंने न तो गर्मी और न ही सर्दी महसूस की और हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह भी फ़रमाया : मैं ज़रूर बिल ज़रूर यह झण्डा उस आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता होगा और अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उससे महब्बत करते होंगे । इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है ।

10. عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاص قَالَ : أَمَرَ مُعَاوِيَة سَعْدًا فَقَالَ : مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسُبَّ أَبَا تُرَاب ؟ فَقَالَ : أَنَا ذَكَرْتُ ثَلَاثًا قَالَهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَنْ أَسُبَّهُ لأَنْ تَكُونَ لِي وَاحِدَةٌ مِنْهَا أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ ؛ سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ لَهُ وَخَلَّفَهُ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ، فَقَالَ عَلِيٌّ : يَا رَسُولَ اللهِ أَتُخَلِّفُنِي مَعَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ موسىٰ إِلَّا أَنَّه لَا نُبُوَّةَ بَعْدِي وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ : لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ غَدًا رجلاً يُحِبُّ اللهَ وَ رَسُولَهُ، وَيُحِبُّهُ اللهُ وَرَسُولُهُ، فَتَطَاوَلْنَا إِلَيهَا، فَقَالَ : ادْعُوا لِي عَلِيًّا، فَأُتِيَ بِهِ أَرْمَدٍ، فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ وَدَفَعَ الرَّايَةَ إِلَيْهِ.. وَلَمَّا نَزَلَتْ (إِنَّمَا يُرِيدُ اللهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيراً) دَعَا رسولُ اللهِ ﷺ عَلِيًّا وَ فَاطِمَةَ وَحَسَناً وَحُسَيْناً فَقَالَ : اَللّٰهُمَّ هٰؤُلَاءِ أَهْلُ بَيْتِي.

साद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्हें हज़रत मुआविया ने अमीर मुक़र्रर किया, फिर उनसे पूछा, अबूतुराब को बुरा कहने से तुम्हें क्या

चीज़ मानेअ है, उन्होंने कहा जब तक मुझे वह तीन बातें याद हैं जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनकी शान में इरशाद फ़रमाई थीं मैं उन्हें हरगिज़ बुरा नहीं कहूँगा, अगर उनमें से कोई एक बात भी मेरे अन्दर होती तो वह मुझे सुर्ख़ ऊँटों से ज़्यादा महबूब होती। मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना आप हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमा रहे थे जबकि आपने उन्हें बाज़ ग़ज़वात में पीछे छोड़ा था, तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपसे अर्ज़ किया था, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम क्या आप मुझे औरतों और बच्चों में छोड़ रहे हैं तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम्हारी मंज़िलत मेरे साथ ऐसी है जैसी हारून अलैहिस्सलाम की मूसा अलैहिस्सलाम के साथ थी मगर यह कि मेरे बाद नुबूवत नहीं है। और मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़ैबर के दिन फ़रमाते हुए सुना : कल मैं ऐसे शख़्स को परचम अता करूँगा जो अल्लाह और उसके रसूल को महबूब रखता है और अल्लाह और उसका रसूल उसे महबूब रखते हैं, पस हम सब उस परचम के उम्मीदवार थे कि आपने फ़रमाया अली को मेरे पास लाओ, उन्हें लाया गया तो वह आशोबे चश्म में मुब्तिला थे, आपने उनकी आंखों में लुआबे दहन डाला, और परचम उनके सुर्पुद कर दिया और जब यह आयत नाज़िल हुई (अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुमसे दूर करदे पलीदी को, ऐ नबी के घर वालो ! और तुमको पूरी तरह पाक साफ़ कर दे) तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली, फ़ातमा, हसन और हुसैन (अलैहिमुस्सलाम) को बुलाया फिर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! यह हैं मेरे घर वाले।

11. عَنْ جَابِرٍ رضی اللہ عنہ : أَنَّ عَلِيًّا رضی اللہ عنہ حَمَلَ الْبَابَ يَوْمَ خَيْبَرَ حَتَّى صَعِدَ الْمُسْلِمُوْنَ فَفَتَحُوْهَا وَأَنَّهُ جُرِّبَ فَلَمْ يَحْمِلْهُ إِلاَّ أَرْبَعُوْنَ رَجُلا. رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ."

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि ग़ज़वए ख़ैबर के रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़िलअए ख़ैबर का दरवाज़ा उठा लिया, यहाँ तक कि मुसलमान क़िलआ पर चढ़ गए और उसे फ़तह कर लिया और यह आज़मूदा बात

है कि उस दरवाज़े को चालीस आदमी मिलकर उठाते थे। इस हदीस को इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है।

12.

عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ اِذَا غَضِبَ لَمْ يَجْتَرِئْ اَحَدٌ مِّنَّا اَنْ يُّكَلِّمَهٗ اِلَّا عَلِيٌّ.

हज़रत उम्मे सलमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जब गुस्से में होते तो हम में से कोई भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से कलाम करने की जुरअत नहीं रखता था सिवाए हज़रत अली के। (इसे तिबरानी और हाकिम ने भी रिवायत किया है)

13.

عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: كَانَ لِنَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم أَبْوَابٌ شَارِعَةٌ فِي الْمَسْجِدِ، قَالَ: فَقَالَ يَوماً: سُدُّوْا هَذِهِ الْأَبْوَابَ إِلَّا بَابَ عَلِيٍّ، قَالَ: فَتَكَلَّمَ فِي ذَلِكَ النَّاسُ، قَالَ: فَقَامَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم فَحَمِدَ الله تعالىٰ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أُمِرْتُ بِسَدِّ هَذِهِ الْأَبْوَابِ إِلَّا بَابَ عَلِيٍّ، وَقَالَ فِيْهِ قَائِلُكُمْ وَإِنِّي وَاللهِ مَا سَدَدْتُ شَيْئًا وَلَا فَتَحْتُهُ وَلَكِنِّي أُمِرْتُ بِشَيْءٍ فَاتَّبَعْتُهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَالْحَاكِمُ."

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के कई सहाबए किराम के घरों के दरवाज़े मस्जिदे नबवी के सहन में खुलते थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक दिन फ़रमाया : अली का दरवाज़ा छोड़कर बाक़ी तमाम दरवाज़ों को बन्द कर दो। रावी ने कहा कि इस बारे में लोगों ने चेह मीगोइयाँ कीं तो हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम खड़े हुए पस आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की फिर फ़रमाया : मैंने अली के दरवाज़े को छोड़कर बाक़ी सब दरवाज़ों को बन्द करने

का हुक्म दिया है । तुम में से कुछ लोगों ने इसके मुताल्लिक़ बातें की हैं । बख़ुदा मैंने अपनी तरफ़ से किसी चीज़ को बन्द किया न खोला मैंने तो बस उस अम्र की पैरवी की जिसका मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से हुक्म मिला । इस हदीस को इमाम अहमद बिन हम्बल, निसाई और हाकिम ने रिवायत किया है ।

14.

عَنْ اَبِیْ رَافِعٍ أَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِعَلِیٍّ: أَنْتَ وَشِیْعَتُكَ تَرِدُوْنَ عَلَی الْحَوْضِ رَوَّاءً مَرْوِیِّیْنَ مُبْیَضَّةً وُجُوْهُكُمْ وَإِنَّ عَدُوَّكَ یَرِدُوْنَ عَلَی الْحَوْضِ ظَمَاءً مُقْمَحِیْنَ.

अबू राफ़ेअ से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया : ऐ अली तू और तेरे (चाहने वाले) मददगार (क़यामत के रोज़) मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी के साथ और सैराब होकर आएँगे और उनके चेहरे नूर की वजह से सफ़ेद होंगे और तेरे दुशमन मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा चेहरों के साथ और सख़्त प्यास की हालत में आएंगे।

15.

عَنْ رَبِیْعَةَ بْنِ نَاجِذٍ، عَنْ عَلِیٍّ علیه السلام قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ یَا عَلِیُّ اِنَّ فِیْكَ مَثَلاً مِنْ عِیْسٰی، اَبْغَضَتْهُ الْیَهُوْدُ حَتّٰی بَهَتُوْا اُمَّهٗ وَاَحَبَّتْهُ النَّصَارٰی حَتّٰی اَنْزَلُوْهُ الْمَنْزِلَ الَّذِیْ لَیْسَ لَهٗ، قَالَ: وَقَالَ عَلِیٌّ عَلَیْهِ السَّلَامُ یَهْلِكُ فِیَّ رَجُلَانِ مُحِبٌّ یُقَرِّظُنِیْ بِمَا لَیْسَ فِیَّ وَمُبْغِضٌ یَحْمِلُهٗ شَنَاٰنِیْ عَلٰی اَنْ یَبْهَتَنِیْ"

रबीआ बिन नाजिज़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ अली ! तुम्हारे अन्दर ईसा अलैहिस्सलाम की मानिन्द मिसाल मौजूद है । उनके साथ यहूद ने बुग़्ज़ रखा हत्ता कि उनकी वालिदा पर तोहमत लगा दी और ईसाइयों ने उनसे महब्बत की और उन्हें उस मर्तबे पर पहुँचा दिया जिसके वह मुस्तहक़ न थे । सैय्यदना अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे मुताल्लिक़ दावा करने वाले दो शख़्स हलाक

होंगे एक वह मुहिब्ब जो मेरे ऐसे फ़ज़ायल बयान करे जो मुझमें नहीं। और दूसरा वह मुबग़िज़ जिसको मेरी अदावत मुझपर बोहतान बांधने पर उभारेगी।

16.

عَنْ عَائِشَةَ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ذِكْرُ عَلِيٍّ عِبَادَةٌ.

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अली का ज़िक्र करना इबादत है।

17.

عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ أَسْعَدَ ابْنِ زُرَارَةَ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أُوْحِیَ إِلَیَّ فِی عَلِيٍّ ثَلَاثٌ : أَنَّهُ سَيِّدُ الْمُسْلِمِيْنَ، وَإِمَامُ الْمُتَّقِيْنَ، وَقَائِدُ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन असद बिन ज़रारह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने मेरी तरफ़ अली के मुताल्लिक़ तीन बातों की वहयी की, बेशक वह (अली) मुसलमानों के सरदार हैं, और मुत्तक़ीन के इमाम हैं और (क़यामत के दिन) नूरानी चेहरे वालों के क़ायद हैं।

18.

عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم يَقُوْلُ : عَلِيٌّ مَعَ الْقُرْآنِ، وَالْقُرْآنُ مَعَ عَلِيٍّ لَا يَفْتَرِقَانِ حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الْحَوْضَ. رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ.

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि अली और क़ुरआन का चोली दामन का साथ है। यह दोनों कभी भी जुदा नहीं होंगे यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े कौसर पर (इकट्ठे) आएंगे। इस हदीस को तिबरानी ने ''अलमोजमिल औसत'' में रिवायत किया है।

19.

عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ الصِّدِّيْقَةَ ابْنَةِ الصِّدِّيْقِ، حَبِيْبَةِ حَبِيْبِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : قُلْتُ لِأَبِيْ : إِنِّيْ أَرَاكَ تُطِيْلُ النَّظَرَ إِلَى عَلِيِّ ابْنِ أَبِيْ طَالِبٍ؟ فَقَالَ لِيْ : يَا بُنَيَّةَ، سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: النَّظْرُ فِيْ وَجْهِ عَلِيٍّ عِبَادَةٌ.

हज़रत उरवा से रिवायत है कि आयशा सिद्दीक़ा बिन्ते सिद्दीक़, महबूबए महबूबे ख़ुदा फ़रमाती हैं, मैंने अपने वालिद से कहा मैं देखती हूँ कि आप देर तक हज़रत अली बिन अबी तालिब की तरफ़ देखते रहते हैं, तो उन्होंने मुझे कहा, ऐ बेटी ! मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अली के चेहरे की तरफ़ देखना इबादत है ।

20. عَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ: يَا عَلِيُّ طُوْبَى لِمَنْ أَحَبَّكَ وَصَدَّقَ فِيْكَ، وَوَيْلٌ لِمَنْ أَبْغَضَكَ وَ كَذَّبَ فِيْكَ

हज़रत अम्मार बिन यासिर से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया : ऐ अली ! मुबारक हो उसे जो तुझसे महब्बत करता है और तेरी तसदीक़ करता है और हलाकत हो उसके लिए जो तुझसे बुग़्ज़ रखता है और तुझे झुठलाता है ।

21.

عَنْ جَابِرٍ قَالَ دَعَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيًّا يَوْمَ الطَّائِفِ فَانْتَجَاهُ فَقَالَ النَّاسُ لَقَدْ طَالَ نَجْوَاهُ مَعَ ابْنِ عَمِّهِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا انْتَجَيْتُهُ وَلٰكِنَّ اللهَ انْتَجَاهُ.

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने ग़ज़वए ताइफ़ के मौक़े पर हज़रत अली को बुलाया और उनसे सरगोशी की, लोग कहने लगे आज आपने अपने चचा के बेटे से बहुत देर तक सरगोशी की । सो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही ने फ़रमाया : मैंने नहीं बल्कि ख़ुद अल्लाह ने उनसे सरगोशी की है ।

मनाक़िबे सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा

सलामुल्लाह अलैहा

मख़दूमए कायनात, शहज़ादिए कौनेन, बिन्ते सैय्यदुल अम्बिया वल मुरसलीन, ज़ौजए असदुल्लाहुल ग़ालिब, अली इब्ने अबी तालिब, मादरे हसनैन करीमैन अज़ीमैन, आबिदा ज़ाहिदा, तैय्येबा, ताहिरा, ज़ाकिया, शाने इसमत, जाने इफ़्फ़त, ख़ातूने जन्नत, सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा व रज़ियल्लाहु तआला अन्हा गुलशने रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की वह कली हैं कि जिनके ज़िक्रे ख़ैर से महब्बतो मुवद्दत की अक़ीदतख़ेज़ ख़ुशबू फूटती है, आपके वजूदे मसऊद में कायनात की तमामतर तहारतें सिमट गईं, क्यों न हो कि सरवरे इंसो जाँ सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने आप सलामुल्लाह अलैहा को अपनी चादरे मुबारको मुक़द्दस में लेकर दुआए ततहीर फ़रमाई, आपको अपने जिस्मे पाक का हिस्सा फ़रमाया, शजरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की टहनी आप, क़ुरअते ऐनैने महबूबे ख़ुदा आप, इल्तिफ़ाते शहे अबरार की मरकज़ीयत आप, आपकी ख़ुशी और राहत रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का मक़सूदो मतलूब, आपकी अदना तकलीफ़ रसूले पाक के लिए बाइसे ईज़ा, सब्रो शुक्र आपका ज़ेवर, तसलीमो रज़ा आपका लिबास, मलायका आपके ख़ुद्दामे दर, आपकी पैज़ारे मुबारक से जुदा होने वाले ज़र्रे शम्सो क़मर को ताबानियाँ बाँटते हैं, और ऐसी शान कि अहले महशर गर्दनें डाले, नज़रें झुकाए खड़े होंगे और सैय्यदा की सवारी कमाले इज़्ज़ो शान से गुज़र रही होगी, सुब्हान अल्लाह, यह अज़मत, यह रिफ़अत, यह मक़ाम, यह मर्तबा, यही नहीं आप ही के वसीलए जलीला से नस्ले मुस्तफ़ा अलैहित तहीयतु वस्सना चली और यह तैय्यब घराना ख़ूब फला फूला, और फिर अल्लाह ने इस मन्सबे अज़ीम के लिए भी आप

ही को मुन्तख़ब फ़रमाया कि आप इस दुनिया की तमाम औरतों की सरदार हैं और जन्नती औरतों की सैय्यदा भी ।

आपका इस्मे गिरामी फ़ातमा रखा गया । फ़ातमा, फ़तम से है, लिसानुल अरब में इब्ने मंज़ूर अफ़्रीक़ी रक़मतराज़ हैं कि ''फ़तामुस सिब्बी'' का मतलब है बच्चे का माँ से दूर होना इसी तरह ''फ़तमतुल वलदोउम्महा'' उस वक़्त कहा जाता है जब माँ बच्चे को दूध छुड़ाती है । दूध छोड़ने वाले लड़के को फ़तीम और लड़की को फ़तीमा कहते हैं । यानी फ़तम का माद्दा दूर होने और छुड़ाने के मानी में इस्तेमाल होता है । इस तौर से फ़ातमा का मतलब यह है ''वह जिसे दूर किया गया हो और छुड़ाया गया हो'' लिहाज़ा आप सलामुल्लाह अलैहा कई जिहात से फ़ातमा हैं कि अल्लाह ने आपको शर, शैतानी असरात, जेहल, नजासत, अदमे इताअत और जहन्नम से दूर और महफ़ूज़ फ़रमाया । हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की हदीसे मुबारका भी इसी मानी पर दलालत करती है, इरशाद फ़रमाया : ''इसलिए मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातमा रखा है क्योंकि अल्लाह ने इसे और इसके चाहने वालों को जहन्नम से बचा लिया है ।''

आपकी कुन्नियतें कई हैं जैसे उम्मे अबीहा, उम्मे हसन, उम्मे हुसैन, उम्मे सैय्यदा शबाबा अहलुल जन्नह वग़ैरह । आपके कई अलक़ाब हैं जैसे बुतूल, ज़हरा, सैय्यदा, ख़ातूने जन्नत, राज़िया, मरज़िया, सिद्दीक़ा, तैय्येबा ताहिरा वग़ैरह। आपके असमा व अलक़ाब और कुन्नियात सबके सब फ़ुयूज़ो बरकात का मुरक़्क़ा हैं, आपकी ज़ात सवादे कुन फ़काँ में नूर अफ़शाँ है, आपकी हयाते तैय्यबा इलाजे तलख़िए दौराँ भी है और निशाते क़ल्बो रूह का सामाँ भी। अलग़रज़ आपकी सीरते मुक़द्दसा ख़्वातीने इसलाम के लिए मिशअले राह और बेहतरीन नमूनए अमल है ।

1. عَنْ جَابِرِ ابْنِ عَبْدِاللهِ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِنَّمَا سَمَّيْتُ ابْنَتِيْ فَاطِمَةَ لِأَنَّ اللهَ تَعَالٰى فَطَمَهَا وَ فَطَمَ مَنْ أَحَبَّهَا مِنَ النَّارِ.

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मैंने अपनी बेटी का नाम फ़ातमा रखा है क्योंकि अल्लाह ने उसे और उसके चाहने वालों को दोज़ख़ की आग से बचा लिया है।

2.

عَنْ جُمَيْعِ بْنِ عُمَيْرٍ، قَالَ : دَخَلْتُ مَعَ عَمَّتِي عَلَى عَائِشَةَ، فَسَأَلَتْ : أَيُّ النَّاسِ كَانَ أَحَبُّ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ - صلى الله عليه وسلم - قَالَتْ : فَاطِمَةَ. فَقِيْلَ: مِنَ الرِّجَالِ؟ قَالَتْ: زَوْجُهَا إِنْ كَانَ مَا عَلِمْتُ صَوَّاماً قَوَّامًا. (رواه الترمذی)

जमीअ बिन उमैर से रिवायत है कि मैं अपनी फूफी के साथ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया, और पूछा, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम को कौन सबसे ज़्यादा महबूब था ? उन्होंने कहा, फ़ातमा। फिर पूछा गया और मर्दों में ? फ़रमाया : उनके शौहर और जहाँ तक मैं जानती हूँ वह लोगों में सबसे ज़्यादा रोज़ा रखने वाले और रातों को क़याम करने वाले थे।

3.

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَبْطَأَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عليهِ وَسَلَّمَ عَنَّا يَوْمَ صَدْرَ النَّهَارِ، فَلَمَّا كَانَ الْعَشِيُّ قَالَ لَهُ قَائِلُنَا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، قَدْ شَقَّ عَلَيْنَا لَمْ نَرَكَ الْيَوْمَا؟ قَالَ: "إِنَّ مَلِكاً مِنَ السَّمَاءِ لَمْ يَكُنْ رَآنِي، فَاسْتَأْذَنَ اللهَ فِي زِيَارَتِي، فَأَخْبَرَنِي أَوْ بَشَّرَنِي أَنَّ فَاطِمَةَ ابْنَتِي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أُمَّتِي، وَإِنَّ حَسَنًا وَّحُسَيْنًا سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْجَنَّةِ.

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम ने हमारे हाँ जलवा अफ़रोज़ होने में ताख़ीर फ़रमाई, पस जब शाम का वक़्त हुआ, तो हम में से किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हम पर यह बात बहुत गराँ गुज़री है कि आज हम आपकी ज़ियारत से महरूम रहे, फ़रमाया : आसमान के एक फ़रिशते ने हमारी ज़ियारत नहीं की थी तो उसने अल्लाह से हमारी ज़ियारत के लिए इजाज़त मांगी। फिर उसने मुझे ख़बर दी और ख़ुशख़बरी सुनाई कि मेरी बेटी फ़ातमा मेरी उम्मत की ख़्वातीन की सैय्यदा

हैं, और हसन व हुसैन नौजवानाने अहले जन्नत के सैय्यद ।

4.

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ أَقْبَلَتْ فَاطِمَةُ تَمْشِي كَأَنَّ مِشْيَتُهَا مَشَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عليهِ وسلّم فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرْحباً بِابْنَتِي ثُمَّ أَجْلَسَهَا عَنْ يَمِينِهِ أَوْ عَنْ شَمَالِهِ ثُمَّ أَسَرَّ إِلَيْهَا حَدِيْثاً فَبَكَتْ فَقُلْتُ لَها لِمَ تَبْكِيْنَ ثُمَّ أَسَرَّ إِلَيْهَا حَدِيْثًا فَضَحِكَتْ فَقُلْتُ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ فَرَحاً أَقْرَبُ مِنْ حُزْنٍ فَسَأَلْتُهَا عَمَّا قَالَ فَقَالَتْ مَا كُنْتُ لِأُفْشِيَ سِرَّ رَسُوْلَ اللهِ صلّى اللهُ عليهِ وَسَلَّمَ حَتّٰى قُبِضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عليهِ وَسَلَّم فَسَأَلْتُهَا فَقَالَتْ أَسَرَّ إِلَيَّ إِنَّ جِبْرِيلَ كَانَ يُعَارِضُنِي الْقُرْآنَ كُلَّ سَنَةٍ مَرَّةً وَإِنَّهُ عَارَضَنِي الْعَامَ مَرَّتَيْنِ وَلَا أَرَاهُ إِلَّا حَضَرَ أَجَلِي وَإِنَّكِ أَوَّلُ أَهْلِ بَيْتِي لَحَاقاً بِي فَبَكَيْتُ فَقَالَ أَمَا تَرْضِيْنَ أَنْ تَكُوْنِي سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَوْ نِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ فَضَحِكْتُ لِذٰلِكَ.

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि सैय्यदा फ़ातमा तशरीफ़ लाईं उनकी चाल यूँ थी गोया रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की चाल है, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मेरी बेटी को खुश आमदीद, फिर उनको अपने दायें या बायें जानिब बिठा लिया फिर उनसे राज़दाराना तौर पर कुछ बात की तो वह रोने लगीं । मैंने कहा आप क्यों रो रही हैं ? फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनसे राज़दाराना तौर पर कुछ बात की तो वह हंसने लगीं, मैंने कहा : आजकी तरह मैंने ख़ुशी को ग़म के क़रीब नहीं देखा, मैंने उनसे दरयाफ़्त किया कि उनसे क्या कहा गया ? तो वह बोलीं कि मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का राज़ अफ़शा नहीं कर सकती, हत्ता कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हुआ तो मैंने उनसे पूछा तो वह बोलीं : आपने मुझसे सरगोशी करते हुए फ़रमाया था कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम मेरे साथ

हर साल कुरअन मजीद का एक दौर करते थे और इस साल उन्होंने दो मर्तबा दौर किया और मैं इस बात को अपने विसाल के कुर्ब का इशारा समझता हूँ और तुम मेरे अहलेबैत में सबसे पहली होगी जो मुझसे आ मिलोगी तो मैं रो पड़ी, फिर आपने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम जन्नत की तमाम औरतों या मोमिनों की तमाम औरतों की सरदार हो।

5.

عَنْ مِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ اَنَّ النَّبِيَّ صَلّٰى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ فَاطِمَةَ بَضْعَةٌ مِنِّي، مَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبَنِي.

मिसवर बिन मिख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : फ़ातमा मेरे जिस्म का टुकड़ा है जो उसे ग़ज़बनाक करता है वह मुझे ग़ज़बनाक करता।

6.

عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرِمَةِ (رَضِيَ اللّٰهُ عَنْه) قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ عليهِ وَسَلَّمَ) : إِنَّمَا فَاطِمَةُ شَجْنَةٌ مِنِّي يَبْسُطُنِي مَا يَبْسُطُهَا، وَيَقْبِضُنِي مَا يَقْبِضُهَا.

मिसवर बिन मिख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हुं से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : फ़ातमा तो मेरी टहनी है जो चीज़ उसे खुश करती है वह चीज़ मुझे भी खुश करती है, और जिस चीज़ से उसे तकलीफ़ पहुँचती है उस चीज़ से मुझे भी तकलीफ़ पहुँचती है।

7.

عَنْ عَائِشَةَ - رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا - قَالَتْ : مَا رَأَيْتُ أَحَدًا كَانَ أَشْبَهُ سَمْتًا وَ هَدْيًا وَ دَلًّا . وَفِي رِوَايَةٍ : حَدِيْثًا وَ كَلَامًا بِرَسُوْلِ اللّٰهِ - صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ - مِنْ فَاطِمَةَ ، كَانَتْ إِذَا دَخَلَتْ عَلَيْهِ ، قَامَ إِلَيْهَا ، فَأَخَذَ بِيَدِهَا فَقَبَّلَهَا وَأَجْلَسَهَا فِي مَجْلِسِه، وَكَانَ إِذَا دَخَلَ عَلَيْهَا ، قَامَتْ إِلَيْهِ، فَأَخَذَتْ بِيَدِهٖ فَقَبَّلَتْهُ وَأَجْلَسَتْهُ فِي مَجْلِسِهَا . رواه أبو داود.

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि मैंने किसी को राहे रास्त पर क़ायम होने के लिहाज़ से और हैअतो हिदायतो हालत के लिहाज़ से, एक रिवायत में है कि गुफ़्तुगू और कलाम के लिहाज़ से सैय्यदा फ़ातमा अलैहस्सलाम से बढ़कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मुशाबह नहीं देखा, जब भी वह बारगाहे रिसालत में हाज़िर होतीं, नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उनके लिए खड़े हो जाते, उनका हाथ पकड़ते, बोसा लेते, और अपनी जगह बिठाते और जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उनके हाँ तशरीफ़ ले जाते तो वह खड़ी हो जातीं उनका हाथ पकड़तीं, बोसा लेतीं और अपनी जगह बिठातीं। (इसे अबूदाऊद ने रिवायत किया है)

8.
عَنْ عَبْدِاللهِ بْنِ عُمَرَ ، أَنَّهُ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ إِذَا سَافَرَ ، كَانَتْ آخِرُ النَّاسِ عهدًا بِه فَاطِمَةَ ، وَإِذَا رَجَعَ مِنْ سَفَرِهِ كَانَتْ عَلَيْهَا أَفْضَلُ الصَّلَاةُ وَالتَّحِيَّاتِ أَوَّلُ النَّاسِ عهدًا بِهِ.

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जब सफ़र पे जाते तो अपने अहलो अयाल में से जिससे सबसे आख़िर में गुफ़्तुगू करके रवाना होते वह सैय्यदा फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा होतीं और जब किसी सफ़र से लौटते जिससे सबसे पहले गुफ़्तुगू फ़रमाते वह सैय्यदा फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा होतीं।

9.
عَنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ اللهَ أَمَرَنِي أَنْ أُزَوِّجَ فَاطِمَةَ مِنْ عَلِيٍّ. (رواه الطبرانی)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया कि मैं फ़ातमा का निकाह अली से कर दूँ। (इसे तिबरानी ने रिवायत किया है)

10. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ رَسُولِ اللهِ قَالَ لِعَلِيٍّ : هٰذَا جِبْرِيْلُ يُخْبِرُنِي أَنَّ اللهَ زَوَّجَكَ فَاطِمَةَ ، وَأَشْهَدَ عَلَى تَزْوِيجِكَ أَرْبَعِينَ أَلْفَ مَلَكٍ

وَأَوْحَىٰ الى شَجَرَةِ طُوبَىٰ أَنْ أَنْثِرِي عَلَيْهِمُ الدُّرَّ وَالْيَاقُوتَ فَابْتَدَرَتْ الَيْهِ الْحُورُ الْعَيْنِ يَلْتَقِطْنَ فِي أَطْبَاقِ الدُّرِّ وَالْيَاقُوتِ فَهُمْ يَتَهَادُوْنَهُ بَيْنَهُمْ الى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने सैय्यदना अली से इरशाद फ़रमाया कि यह जिब्रील हैं जो मुझे बता रहे हैं कि अल्लाह तआला ने फ़ातमा से तुम्हारी शादी कर दी है और तुम्हारे निकाह पर चालीस हज़ार फ़रिशतों को बतौर गवाह मजलिसे निकाह में शरीक किया है और शजरहाए तूबा से फ़रमाया : इन पर मोती और याक़ूत निछावर करो और फिर दिलकश आंखों वाली हूरें इन मोतियों और याक़ूत से अपने थाल भरने लगीं जिन्हें फ़रिशते क़यामत तक एक दूसरे को बतौर तोहफ़ा देंगे।

11. عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُوْلَ اللهِ صلى الله عليه وسلم عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُوْلُ إِنَّ بَنِي هِشَامِ بْنِ الْمُغِيْرَةَ اسْتَأْذَنُوْنِي أَنْ يَنْكَحُوا ابْنَتَهُمْ عَلِيَّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ فَلَا آذَنُ لَهُمْ ثُمَّ لَا آذَنُ لَهُمْ ثُمَّ لَا آذَنُ لَهُمْ وَقَالَ فَإِنَّمَا ابْنَتِي بِضْعَةٌ مِنِّي يُرِيْبُنِي مَا رَابَهَا وَيُؤْذِيْنِي مَا آذَاهَا.

मिसवर बिन मिख़रमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बरसरे मिम्बर यह फ़रमाते हुए सुना बनी हिशाम बिन मुग़ीरा ने अपनी बेटी का रिशता अली से करने की मुझसे इजाज़त मांगी है। मैं उन्हें इसकी इजाज़त नहीं देता, मैं दोबारा उन्हें इसकी इजाज़त नहीं देता, मैं सह बारा उन्हें इसकी इजाज़त नहीं देता। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि फ़ातमा मेरे जिस्म का हिस्सा है उसकी परेशानी मुझे परेशान करती है और उसकी तकलीफ़ मुझे तकलीफ़ देती है।

12.

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: خَطَّ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ خُطُوطٍ، قَالَ: تَدْرُوْنَ مَا هٰذَا؟ فَقَالُوا:

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ . فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَفْضَلُ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ : خَدِيْجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ ، وَفَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ ، وَآسِيَةُ بِنْتُ مُزَاحِمٍ امْرَأَةُ فِرْعَوْنَ ، وَمَرْيَمُ ابْنَةُ عِمْرَانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُنَّ اَجْمَعِيْنَ.

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने ज़मीन पर चार लकीरें खींचीं, और फ़रमाया तुम जानते हो यह क्या है ? सहाबए किराम ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं । फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अहले जन्नत की औरतों में अफ़ज़ल तरीन चार हैं, ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद, फ़ातमा बिन्ते मुहम्मद, फ़िरऔन की बीवी आसिया बिन्ते मज़ाहिम और मरयम बिन्ते इमरान रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना अजमईन ।

13. قَالَتْ عَائِشَةُ: مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ أَصْدَقَ مِنْ فَاطِمَةَ غَيْرَ أَبِيْهَا .

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं : मैंने फ़ातमा से बढ़कर किसी को सच्चा न पाया सिवाए उनके बाबा के ।

14.

عَنْ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِكُلِّ بَنِيْ أُنْثٰى عُصْبَةٌ يَنْتَمُوْنَ إِلَيْهِ اِلَّا وُلْدُ فَاطِمَةَ فَأَنَا وَلِيُّهُمْ وَأَنَا عُصْبَتُهُمْ .

हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हर औरत के बच्चों का उसबा होता है जिसकी तरफ़ वह मन्सूब होते हैं, सुनो ! फ़ातमा की औलाद का वली भी मैं हूँ और उसबा भी ।

15.

عَنْ أُمِّ سَلْمٰى قَالَتْ: "اِشْتَكَتْ فَاطِمَةُ شَكْوَاهَا الَّتِيْ قُبِضَتْ فِيْهِ ، فَكُنْتُ أُمَرِّضُهَا ، فَأَصْبَحَتْ يَوْمًا كَأَمْثَلِ مَا رَأَيْتُهَا فِيْ شَكْوَاهَا تِلْكَ ، قَالَتْ: وَخَرَجَ عَلِيٌّ لِبَعْضِ حَاجَتِهِ ، فَقَالَتْ: يَا أُمَّهُ اسْكُبِيْ لِيْ غُسْلًا ، فَسَكَبْتُ لَهَا غُسْلًا ، فَاغْتَسَلَتْ كَأَحْسَنِ مَا رَأَيْتُهَا تَغْتَسِلُ ، ثُمَّ

قَالَتْ: يَا أُمَّهْ أَعْطِنِي ثِيَابِي الْجُدُدَ. فَأَعْطَيْتُهَا فَلَبِسَتْهَا، ثُمَّ قَالَتْ يَا أُمَّهْ قَدِّمِي لِي فِرَاشِي وَسَطَ الْبَيْتِ، فَفَعَلْتُ وَاضْطَجَعَتْ وَاسْتَقْبَلَتِ الْقِبْلَةَ، وَ جَعَلَتْ يَدَهَا تَحْتَ خَدِّهَا، ثُمَّ قَالَتْ: يَا أُمَّهْ إِنِّي مَقْبُوضَةٌ الْآنَ إِنِّي مَقْبُوضَةٌ الْآنَ، وَقَدْ تَطَهَّرْتُ، فَلَا يُكْشِفُنِي أَحَدٌ، فَقُبِضَتْ مَكَانَهَا، قَالَتْ: فَجَاءَ عَلِيٌّ فَأَخْبَرْتُهُ".

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है जब सैय्यदा फ़ातमा सलामुल्लाह अलैहा अपने मरज़े मौत में मुब्तिला हुईं तो मैं उनकी तीमारदारी करती थी । बीमारी के इस पूरे अर्से के दौरान जहाँ तक मैंने देखा उनकी हालत एक सुबह क़दरे बेहतर थी, हज़रत अली अलैहिस्सलाम किसी काम से बाहर गए, सैय्यदए कायनात ने फ़रमाया : ऐ अम्मा ! मेरे गुस्ल के लिए पानी लाएं, मैं पानी लाई, जहाँ तक मैंने देखा आपने बेहतरीन गुस्ल किया, फिर बोलीं, अम्मा जी मुझे नया लिबास दें, मैंने ऐसा ही किया फिर आप क़िबला रूख़ होकर लेट गईं, हाथ अपने रूख़सार के नीचे कर लिया, फिर फ़रमाया : अम्मा जी ! अब मेरी वफ़ात हो जाएगी, मैं (गुस्ल करके) पाक हो चुकी हूँ, मुझे कोई न खोले, लिहाज़ा उसी जगह आपकी वफ़ात हो गई, हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं फिर हज़रत अली आए तो मैंने उनको सारी बात बताई ।

16. عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِفَاطِمَةَ: إِنَّ اللهَ يَغْضِبُ لِغَضَبِكِ وَيَرْضَى لِرِضَاكِ.

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया : बेशक अल्लाह तेरी नाराज़गी पर नाराज़ और तेरी रज़ा पर राज़ी होता है ।

17.

عَنْ عُمَرَ ابْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ فَاطِمَةَ وَعَلِيًّا وَ الْحَسَنَ وَ الْحُسَيْنَ فِي حَظِيْرَةِ الْقُدْسِ فِي قُبَّةٍ بَيْضَاءَ سَقْفُهَا عَرْشُ الرَّحْمٰنِ.

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : बेशक आख़िरत में फ़ातमा, अली, हसन, हुसैन (जन्नतुल फ़िरदौस) में सफ़ेद गुम्बद में मुक़ीम होंगे, जिसकी छत अर्शे ख़ुदावन्दी होगा ।

18.

عَنِ ابْنِ عَبَّاس قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَنَا مِيْزَانُ الْعِلْمِ , وَعَلِيٌّ كِفَّتَاهُ , وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ خُيُوْطُهُ , وَفَاطِمَةُ عِلَاقَتُهُ , وَالْأَئِمَّةُ مِنْ أُمَّتِي عُمُوْدُهُ , تُوْزَنُ فِيهِ أَعْمَالُ الْمُحِبِّيْنَ لَنَا وَالْمُبْغِضِيْنَ لَنَا.

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मैं इल्म का तराज़ू हूँ, अली उसका पलड़ा है, हसन और हुसैन उसकी रस्सियाँ हैं, फ़ातमा उसका दस्ता है, और मेरी उम्मत के अइम्मए अतहार उसकी अमूदी सलाख़ें हैं जिसके ज़रिया हमसे महब्बत करने वालों और बुग़्ज़ रखने वालों के आमाल तौले जाएंगे ।

19.

عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ، قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ نَادَى مُنَادٍ مِنْ بُطْنَانِ الْعَرْشِ، يَا أَهْلَ الْجَمْعِ نَكِّسُوا رُءُوسَكُمْ ، وَغُضُّوا أَبْصَارَكُمْ , حَتَّى تَمُرَّ فَاطِمَةُ بِنْتُ مُحَمَّدٍ عَلَى الصِّرَاطِ , قَالَ : فَتَمُرُّ مَعَ سَبْعِيْنَ أَلْفَ جَارِيَةٍ مِنَ الْحُوْرِ الْعِيْنِ كَمَمَرِّ الْبَرْقِ".

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं रोज़े क़ियामत अर्श की गहराइयों से एक निदा देने वाला निदा देगा, ऐ महशर वालो ! अपने सरों को झुका लो और अपनी निगाहें नीची कर लो ताकि फ़ातमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पुल सरात से गुज़र जाएं । फिर वह सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में बिजली की तेज़ी से पुल सरात से गुज़र जाएंगी ।

20.

عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأى عَلى فَاطِمَةَ كَسَاءٌ مِنْ أَوْبَارِ الْإِبِلِ وَ هِيَ تُطْحِنُ فَبَكى وَ قَالَ : يَا فَاطِمَةَ اصْبِرِيْ عَلى مَرَارَةِ الدُّنْيَا لَنَعِيْمُ الْآخِرَةِ غَداً، وَ نَزَلَتْ {وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضى.

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत फ़ातमा को देखा कि उनके जिस्मे अक़्दस पर ऊँट की ऊन का लिबास था और वह चक्की पीस रही थीं, इसपर आप रो पड़े और फ़रमाया : ऐ फ़ातमा ! कल आख़िरत की नेमतों के लिए दुनिया की तलख़ियों पर सब्र करो और यह आयत नाज़िल हुई, और अनक़रीब आपका रब आपको अता फ़रमाएगा तो आप राज़ी हो जाएंगी।

हसनैन करीमैन
अलैहिमस्सलाम
के
फ़ज़ायलो मनाक़िब

आफ़ताबे सिपहरे शहादत, माहताबे उफ़ुक़े हिदायत, शमए बज़्मे इमामत,तुर्रए अज़मते किरदार, शौकते किशवरे ईसार, साहिबाने इज़्ज़ो इफ़्तिख़ार, सिबतैने शहे अबरार, शहज़ादगाने आली वक़ार हज़रत सैय्यदना इमाम हसन और सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिमस्सलाम की मकानतो मरतबत और फ़ज़ायलो ख़सायल हुदूदे ज़बानो बयान और बिसाते क़िरतासो क़लम से मावरा हैं कि यह मेरे आक़ा व मौला अहमदे मुजतबा मुहम्मदे मुस्तफ़ा अलैहित्तहीयतु वस्सना के नूरे नज़र, मख़दूमए कायनात के पिसर और शेरे ख़ुदा के लख़्ते जिगर हैं । जिनकी अज़मतों के चर्चे ज़मीन की तहों से अफ़लाक़े शरफ़ो मज्द की रिफ़अतों से बहुत आगे फैले हुए हैं, यही वह चश्मो चराग़े ख़ातूने जन्नत हैं जिन्हें क़ुरबते रसूल का वाफ़र हिस्सा मिला, जिन पर दिन रात रसूले ख़ुदा का ज़िल्ले आतिफ़त साया फ़िगन रहता और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़क़त उनके गिर्द एक मुबारक हाले की सूरत में जलवागर रहती, जो उस ज़ाते सतूदा सिफ़ात से बराहे रास्त मुस्तफ़ीज़ो मुस्तफ़ीद होते रहे जो ख़ुलासए शराफ़तो नजाबत, जौहरे इल्मो हिकमत और साहिबे ख़त्मे नुबूवत हैं, जिन्हें उस सीने से लिपटने का एज़ाज़ मिला जो हामिले वहिए इलाही और मादने उलूमो मुआरिफ़ है, हसनैन करीमैन के मुक़ामाते रफ़ीआ पर ग़ौर कीजिए कि जब रसूले कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हसनैन करीमैन को अपने सीने से लगाते होंगे तो क्या क्या अनवारो तजल्लियात, असरारो रूमूज़ और हिकमो मवाइज़ सीना ब सीना मुनतक़िल होते होंगे और जब शहे कौनो मकाँ अपने प्यारे बेटों को अपनी ज़बान

चुसवाते होंगे तो नुत्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की हलावतो शीरीनी, फ़साहतो बलाग़त और फ़ज़्लो कमाल का कैसा कैसा इन्जिज़ाब होता होगा और महब्बत की इन्तिहा तो देखिए कि अगर सिबतैन शरीफ़ैन अलैहिमस्सलाम नमाज़ के दौरान बहालते सजदा पुश्ते मुबारक पर सवार हो जाएं तो हुज़ूर सजदा तवील कर लेते हैं मगर नवासों की कबीदगीए ख़ातिर तबीअते अक़दस को गवारा नहीं, अगर बहालते रूकूअ यह नन्हें शहज़ादे हुज़ूर की टांगों से लिपटते तो हुज़ूर अपनी टांगें कुशादा फ़रमा लेते, दौराने ख़ुतबा उनको आता देखते तो ख़ुतबा छोड़कर उन्हें उठा लेते, उनको मुस्कुराते देखकर मसरूर रहते और अगर उन्हें रोता देखते तो बेक़रार हो जाते और फ़रमाया करते थे ऐ फ़ातमा ! उनको रोने मत दिया करो, उनके रोने से मुझे तकलीफ़ होती है ।

बिला शुब्हा हसनैन करीमैन उलूमो मुआरिफ़, हिम्मतो शुजाअत, जूदो सख़ावत बल्कि हर शोबए ज़िन्दगी में अदीमुन्नज़ीर और मुनफ़रिदुल मिसाल हैं और क्यों न हों कि उनकी तरबियत मुअल्लिमे कायनात, फ़ातेहे बाबे विलायत और सैय्यदा ख़ैरून निसा जैसी अज़ीमो जलील हस्तियों ने फ़रमाई, और यह तरबियत इस अम्र पर मुनतज हुई कि गुलशने ज़हरा के यह फूल कमसिनी में ही नक़ीबाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सफ़ में सरे फ़ेहरिस्त नज़र आते हैं । बिला शुब्हा हसनैन करीमैन वह रीहानतैन हैं जिनसे ख़ुशबूए मुस्तफ़ा करीम फूटती है और वह सिबतैन हैं कि जिनकी सियरे मुक़द्दसा के शफ़्फ़ाफ़ आइनों में ज़ाते मुस्तफ़ा झलकती है, जो हू ब हू शबीहे मुस्तफ़ा हैं, इमाम हसन अलैहिस्सलाम सर से सीने तक और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम सीने से क़दमों तक रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मुशाबह थे हत्ता कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे ।

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى أَشْبَهِ النَّاسِ بِرَسُولِ اللهِ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) مَا بَيْنَ عُنُقِهِ إِلَى وَجْهِهِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ، وَمَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى أَشْبَهِ النَّاسِ بِرَسُولِ اللهِ (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) مَا بَيْنَ عُنُقِهِ إِلَى كَعْبِهِ خَلْقاً وَلَوْناً فَلْيَنْظُرْ إِلَى الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ.

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहुहू से रिवायत है कि जिस शख़्स की यह ख़्वाहिश हो कि वह लोगों में से ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से चेहरे तक रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की कामिल शबीह हो तो वह हसन बिन अली (अलैहिस्सलाम) को देख ले और जिस शख़्स को यह ख़्वाहिश हो कि वह लोगों में ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से टख़नों तक रंगत और सूरत दोनों में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की कामिल शबीह हो तो उसे चाहिए कि वह हुसैन बिन अली (अलैहिस्सलाम) को देख ले।

सुब्हानल्लाह क्या शानो अज़मत है उन मुबारक हस्तियों की कि जिनकी ज़ियारत दीदारे मुस्तफ़ा है, जिनको मेरे आक़ा व मौला अहलो बैती और इबनी फ़रमाते हैं और जिनको चूमना, शिकमे मुबारक पर लिटाना, कंधों पर सवार करना, लिपटाना और उनके मुतहहर अजसाम से जन्नत की ख़ुशबू पाना नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम को महबूब था, उनकी महब्बत से अल्लाह की महब्बत हासिल होती है, उनका बुग़्ज़ महज़ बर्बादी व हलाकत, उनकी मवद्दत दुख़ूले जन्नत की कुंजी, उनका उसवा निजाते दारैन का वसीला, उनका क़ुर्ब क़ुर्बे मुस्तफ़ा, उनसे दूरी फ़लाह से दूरी है। और ऐसा रूतबा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَقَالَ بِأَبِي وَأُمِّي أَنْتُمَا مَا أَكْرَمَكُمَا عَلَى اللهِ

आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, मेरे माँ बाप तुम दोनों पर क़ुर्बान, तुम अल्लाह के हाँ कितने मुअज़्ज़ज़ हो।

यह तीन हिजरी पन्द्रह रमज़ानुल मुबारक की सुबह थी कि जब सहने सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा विलादते इमाम हसन से मुनव्वर हुआ और चार हिजरी पांच शाबान का दिन मदीना मुनव्वरा में विलादते इमाम हुसैन की नवेद लेकर आया, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की मसरूफ़ मुजाहिदाना ज़िन्दगी में इन नन्हे शाहज़ादों की आमद से मसर्रतों की लाज़वाल बहार आ गई, और रसूले ख़ुदा का आंगन उनकी किलकारियों से भर गया, उनकी दिलरूबा अदाएं और मीठी मुस्कुराहटें सरवरे कौनो मकाँ का क़रारे जाँ क़रार पाईं, यह ख़ुशियाँ और मसर्रतें "कौसर" की अमली तस्वीर बन गईं, सरवरे कायनात

अलैहि अफ़ज़लुत्तसलीम वस्सलात को अबतर कहने वालों ने मुँह की खाई और ज़लीलो ख़्वार हुए।

सैय्यदना इमाम हसन और सैय्यदना इमाम हुसैन के असमाए गिरामी अल्लाह के हुक्म से रखे गए हैं। रिवायात की रू से पहले हज़रत सैय्यदना हसन का नाम हमज़ा और सैय्यदना हुसैन का नाम जाफ़र रखा गया फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने बहुक्मे इलाही यह नाम तब्दील फ़रमा दिए और असमाए गिरामी हसन व हुसैन रखे। इन दोनों असमा का माद्दा हुस्न है जो ख़ूबसूरती, भलाई और हर तरह की कामरानी के मानों में आता है, हसन व हुसैन में "हुसना" मुशतरिक है और हुसना का तर्जुमा अरबी की मारूफ़ लुग़त "अलक़ामूसुल मुहीत" में कुछ यूँ है।

اَلْحُسْنٰى بِالضَّمِّ : ضِدُّ السُّوْءِ وِ الْعَاقِبَةُ الْحَسَنَةُ وَالنَّظْرُ اِلَى اللّٰهِ وَالظَّفْرُ وَالشَّهَادَةُ وَمِنْهُ {اِلَّا اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ

"अलहुसना" हा पर पेश के साथ "अस्सू" का मुतज़ाद है, (जिसके मानी हैं) अच्छा अंजाम, अल्लाह की तरफ़ नज़र करना, फ़तहयाबी और शहादत, और इसी से इरशादे बारी तआला है इल्ला इहदल हुसनैन।

अलमोजमुल वसीत में है,

مؤنث الْأَحْسَنَ وَفِي التَّنْزِيل الْعَزِيز {وَلِلّٰهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى} وَالْعَاقِبَة الْحَسَنَةُ وَفِي التَّنْزِيل الْعَزِيزِ {فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنٰى} وَالْحُسْنَيَانِ الظَّفْرُ وَالشَّهَادَةُ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ وَفِي التَّنْزِيلِ الْعَزِيزِ {قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَا إِلَّا إِحْدَى الْحَسْنَيَيْنِ

"अलहुसना" अहसन की तानीस है, कुरआन मजीद में है व लिल्लाहिल असमाइल हुसना इसका मानी अच्छा अंजाम भी है, कुरआन पाक में है,,

فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنٰى

इसका मानी फ़तह और अल्लाह की राह में शहादत भी है, कलामे पाक में है,,

قُلۡ هَلۡ تَرَبَّصُوۡنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحۡدَى الۡحُسۡنَيَيۡنِ

गोया हसन व हुसैन दोनों असमाए मुबारका में शहादत के मानी मुशतरिक हैं, लिहाज़ा यह नाम रखने में एक लतीफ़ इशारा यह भी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को हसनैन करीमैन की शहादत की इत्तिलाअ दे दी गई थी, दूसरा यह कि अल्लाह ने अपने हबीब अलैहिस्सलातु वस्सलाम को तमाम अम्बिया के ख़सायस का जामेअ बनाया और उन्हें हर ख़सलते महमूदा और हर वस्फ़े कमाल से मुज़ैय्यिन किया सिवाए शहादत के, आपका यह वस्फ़ आपकी औलाद में रखा गया, सैय्यदना इमाम हसन को आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सिर्री शहादत अता हुई जभी तो आपकी शहादत का इतना चर्चा नहीं होता, और सैय्यदना इमाम हुसैन को जेहरी शहादत अता हुई, आक़ाए नामदार ने इमाम हसन अलैहिस्सलाम को अपना हिल्म और सयादत बख़्शी और इमाम हुसैन को अपनी ताक़तो शुजाअत, यक़ीनन औसाफ़ की यह तक़सीम बहुक्मे इलाही बमुताबिक़े मरातिब थी। इमाम हसन ने इसी हिल्म के ज़रिया नाज़ुक हालात में उम्मते मुस्लिमा को फ़सादो ख़ूँ रेज़ी से बचाया और बिलआख़िर सिर्री शहादत से सरफ़राज़ हुए, और इमाम हुसैन ने इसी ताक़तो शुजाअत के ज़रिया मैदाने कर्बला में बातिल का डट का मुक़ाबला किया, अहले फ़िस्क़ो फ़िजूर के क़दम उखाड़ दिए, वादए इलाही पूरा हुआ और आप शहादते जेहरी से सरफ़राज़ होकर सैय्यदुश्शोहदा के आला तरीन मर्तबे पर फ़ायज़ हुए।

हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की कुन्नियत अबू मुहम्मद और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। इमाम हसन अलैहिस्सलाम का लक़ब मुजतबा है और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का लक़ब सैय्यदुश्शोहदा है, सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम कई अलक़ाब में मुशतरिक हैं जैसे सिब्तुर्रसूल, सैय्यद, सैय्यदे अशबाबे अहलुल जन्नह, तैय्यिब, ज़की ताहिर वग़ैरह।

फ़ज़ायले हसनैन करीमैन
और
अहादीसे रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम

1.

عِنْ عِمْرَانَ بْنِ سُلَيْمَانَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْحَسَنُ وَ الْحُسَيْنُ اِسْمَانِ مِنْ اَسْمَاءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ مَا سُمِّيَتِ الْعَرَبُ بِهِمَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ.

हज़रत इमरान बिन सुलेमान से मरवी है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम अहले जन्नत के नामों में से हैं। यह दोनों नाम जाहिलीयत के ज़माने में किसी के न थे।

2.

عَنْ عَلِيٍّ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ: لَمَّا وُلِدَ الْحَسَنُ سَمَّاهُ حَمْزَةَ، فَلَمَّا وُلِدَ الْحُسَيْنُ سَمَّاهُ بِاسْمِ عَمِّهِ جَعْفَرَ، قَالَ فَدَعَانِي رَسُولُ اللهِ صلّى الله عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ وَ قَالَ: إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أُغَيِّرَ اسْمَ هٰذَيْنِ، فَقُلْتُ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَمَّاهُمَا حَسَناً وَحُسَيْناً.

हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि जब हसन पैदा हुए तो उन्होंने उनका नाम हमज़ा रखा, और जब हुसैन पैदा हुए तो उनका नाम अपने चचा के नाम पर जाफ़र रखा, पस रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे बुलाया और फ़रमाया : बेशक अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं इन दोनों के यह नाम तब्दील कर दूँ, मैंने कहा : अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं, फिर आप

सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उनके नाम हसन और हुसैन रखे।

3.

عَنْ عُمَرِ ابْنِ شُعَيْبٍ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَدِّهٖ اَنَّ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ عَقَّ عَنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا كَبْشَيْنِ مِثْلَيْنِ مُتَكَافِئَيْنِ۔

उमर बिन शुऐब अपने बाप और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हसन व हुसैन में से हर एक की तरफ़ एक ही जैसे दो-दो दुम्बे अक़ीक़े में ज़िबह किए।

4.

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضی الله عنه قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صلی الله عليه وآله وسلم وَمَعَهُ حَسَنٌ وَحُسَيْنٌ هٰذَا عَلٰى عَاتِقِهٖ، وَهٰذَا عَلٰى عَاتِقِهٖ، وَهُوَ يَلْثِمُ هٰذَا مَرَّةً، وَيَلْثِمُ هٰذَا مَرَّةً، حَتّٰى انْتَهٰى إِلَيْنَا، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، إِنَّكَ تُحِبُّهُمَا. فَقَالَ: مَنْ أَحَبَّهُمَا فَقَدْ أَحَبَّنِي، وَمَنْ أَبْغَضَهُمَا فَقَدْ أَبْغَضَنِي۔

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं : रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के एक कंधे पर इमाम हसन अलैहिस्सलाम और दूसरे कंधे पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम सवार थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम कभी एक को चूमते कभी दूसरे को चूमते यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे पास आकर रूक गए। एक शख़्स ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! यक़ीनन आप इनसे (बेपनाह) महब्बत करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने इन दोनों से महब्बत रखी उसने मुझसे महब्बत रखी और जिसने इन दोनों से बुग़्ज़ रखा उसने मुझसे बुग़्ज़ रखा।

5.

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ رضی الله عنه، قَالَ: كَانَ النَّبِیُّ صلی الله عليه وآلِهٖ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ يَثِبَانِ عَلٰى ظَهْرِهٖ، فَيُبَاعِدُهُمَا النَّاسُ،

فَقَالَ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم: دَعُوهُمَا، بِأَبِي هُمَا وَأُمِّي، مَنْ أَحَبَّنِي، فَلْيُحِبَّ هٰذَيْنِ.

अब्दुल्लाह (बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरवी है, उन्होंने बयान किया : हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़ अदा कर रहे थे कि हज़रत हसन और हुसैन दोनों, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की पुश्ते मुबारक पर सवार हो गए । लोगों ने उन्हें हटाना चाहा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : इन दोनों को छोड़ दो, मेरे माँ बाप इन दोनों पर क़ुर्बान, जो मुझसे महब्बत करता है उसे चाहिए कि इन दोनों से भी महब्बत करे ।

6.
عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رضی اللہ عنهما، قَالَ: طَرَقْتُ النَّبِيَّ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ذَاتَ لَيْلَةٍ فِي بَعْضِ الْحَاجَةِ، فَخَرَجَ النَّبِيُّ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم وَهُوَ مُشْتَمِلٌ عَلٰى شَيْءٍ، لَا أَدْرِي مَا هُوَ. فَلَمَّا فَرَغْتُ مِنْ حَاجَتِي. قُلْتُ: مَا هٰذَا الَّذِي أَنْتَ مُشْتَمِلٌ عَلَيْهِ؟ فَكَشَفَهُ فَإِذَا حَسَنٌ وَحُسَيْنٌ عَلٰى وِرْكَيْهِ، فَقَالَ: هٰذَانِ ابْنَايَ وَابْنَا ابْنَتِي، اَللّٰهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا وَأَحِبَّ مَنْ يُحِبُّهُمَا.

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है, उन्होंने फ़रमाया : एक रात मैं किसी काम की ग़रज़ से हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ । आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम इस हाल में बाहर तशरीफ़ लाए कि किसी चीज़ को अपने जिस्म के साथ कपड़े से लपेटे हुए थे । मैं न जान सका कि वह क्या चीज़ है ? जब मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हो गया तो अर्ज़ किया : (या रसूलल्लाह !) यह क्या चीज़ है जिस पर आपने चादर ओढ़ रखी है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने कपड़ा उठाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की पुश्ते मुबारक पर हसन और हुसैन थे । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने

फ़रमाया : यह दोनों मेरे बेटे और नवासे हैं। ऐ अल्लाह ! मैं इनसे महब्बत करता हूँ तू भी इनसे महब्बत फ़रमा और जो इनसे महब्बत करता है उससे भी मुहब्बत फ़रमा।

7. عَنْ عَلِيٍّ (عليه السلام) قَالَ: زَارَنَا رَسُوْلُ اللهِ (صلى الله عليه واله وسلم) وَبَاتَ عِنْدَنَا وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ (عليهما السلام) نَائِمَانِ فَاسْتَسْقَى الْحَسَنُ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى قِرْبَةٍ لَنَا يَعْصِرُهَا فِي الْقَدَحِ ثُمَّ جَاءَ يُسْقِيهِ فَنَاوَلَ الْحَسَنُ، فَتَنَاوَلَ الْحُسَيْنُ لِيَشْرِبَ فَمَنَعَهُ وَبَدَأَ بِالْحَسَنِ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ (عليها السلام) يَا رَسُوْلَ اللهِ كَأَنَّهُ أَحَبُّهُمَا إِلَيْكَ، قَالَ: إِنَّهُ اسْتَسْقَى أَوَّلَ مَرَّةٍ، ثُمَّ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ (صلى الله عليه واله وسلم) إِنِّي وَإِيَّاكَ وَهٰذَيْنِ وَهٰذَا الرَّاقِدُ. يَعْنِي عَلِيّاً. يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي مَكَانٍ وَاحِدٍ۔

हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे पास आए और हमारे हाँ रात बसर की, हसन और हुसैन (अलैहिमस्सलाम) सो रहे थे, हसन ने पानी माँगा, पस रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे पास खड़े हुए और एक प्याले में पानी डाला और हज़रत हसन (अलैहिस्सलाम) को थमाया, हज़रत हुसैन (अलैहिस्सलाम) ने लेकर पीना चाहा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें रोका और इमाम हसन से इब्तिदा की, हज़रत फ़ातमा ज़हरा बोलीं गोया कि आप इस (हसन) से ज़्यादा महब्बत करते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया इसने पहले पानी मांगा था, फिर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बेशक मैं और तुम (फ़ातमा ज़हरा) और यह दोनों (हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम) और यह सोने वाला (सैय्यदना अली अलैहिस्सलाम) जन्नत में एक ही मक़ाम पर होंगे।

8. عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: دَخَلْتُ أَوْ رُبَّمَا دَخَلْتُ عَلَى رَسُوْلِ اللهِ

صلی اللہ علیہ وسلم وَالْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ يَنْقَلِبَانِ عَلٰى بَطْنِهِ وَيَقُوْلُ :
رَيْحَانَتَيَّ مِنْ هٰذِهِ الْاُمَّةِ.

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास दाख़िल हुआ या जब भी दाख़िल होता तो देखता कि हसन व हुसैन (अलैहिमस्सलाम) नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के शिकमे मुबारक पर लोट पोट हो रहे हैं और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम यह फ़रमाया करते, यह तो मेरी उम्मत के फूल हैं।

9.
عَنْ يَعْلَى بْنِ مُرَّةَ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صَلّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدُعِيْنَا إِلَى طَعَامٍ فَإِذَا الْحُسَيْنُ يَلْعَبُ فِي الطَّرِيْقِ فَأَسْرَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ واله وَسَلَّمَ أَمَامَ الْقَوْمِ، ثُمَّ بَسَطَ يَدَيْهِ فَجَعَلَ إِحْدٰى يَدَيْهِ فِي ذَقْنِهِ وَالْأُخْرٰى بَيْنَ رَأْسِهِ وَأُذُنَيْهِ، ثُمَّ اعْتَنَقَهُ، فَقَبَّلَهُ، ثُمَّ قَالَ: (حُسَيْنٌ مِنِّيْ وَأَنَا مِنْهُ أَحَبَّ اللهُ مَنْ أَحَبَّهُ، الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ سِبْطَانِ مِنَ الْأَسْبَاطِ۔

याला बिन मुर्रा से रिवायत है कि हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ किसी दावत पर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को देखा आप खेल में मशगूल थे। रसूलल्लाह जल्दी से आगे बढ़े फिर अपने दस्ते मुबारक फैलाए उसके बाद एक हाथ उनकी ठोढ़ी पर और दूसरा हाथ उनके सर और कानों के दरमियान रखा फिर उन्हें गले लगाया और बोसा लिया उसके बाद फ़रमाया : "हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ ख़ुदा उससे महब्बत करता है जो हुसैन से महब्बत करता हो। हसन और हुसैन (अलैहिमस्सलाम) मेरे नवासों में से दो नवासे हैं या अहले ख़ैर की जमाअतों में से दो जमाअतें हैं।

10.
وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: صَلَّى رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّم صَلَاةَ الْعَصْرِ فَلَمَّا كَانَ فِي الرَّابِعَةِ أَقْبَلَ الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ حَتّٰى رَكِبَا عَلٰى ظَهْرِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِه وَسَلَّم فَلَمَّا سَلم وَضَعَهُمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَقْبَلَ الْحُسَيْنُ فَحَمَلَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عليه وَآلِهِ وَسَلَّم الْحَسَنَ عَلٰى عَاتِقِه الْأَيْمَنِ وَالْحُسَيْنَ عَلٰى عَاتِقِهِ الْأَيْسَرِ ثُمَّ قَالَ أَيُّهَا النَّاسُ أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ النَّاسِ جَدًّا وَجَدَّةً أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ النَّاسِ عَمًّا وَعَمَّةً أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ النَّاسِ خَالاً وَخَالَةً أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ النَّاسِ أَبًا وَ أُمًّا هُمَا الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ جَدُّهُمَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِه وَسَلَّم وَجَدَّتُهُمَا خَدِيْجَةُ بِنْتُ خُوَيْلِدٍ وَ أُمُّهُمَا فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِه وَسَلَّم وَأَبُوْهُمَا عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَعَمُّهُمَا جَعْفَرُ بْنِ أَبِي طَالِبٍ وَعَمَّتُهُمَا أُمُّ هَانِيءٍ بِنْتِ أَبِي طَالِبٍ وَخَالُهُمَا الْقَاسِمُ بْنُ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِه وَسَلَّم وَخَالَاتُهُمَا زَيْنَبُ وَرُقَيَّةُ وَأُمُّ كُلْثُوْمُ بَنَاتُ رسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِه وَسَلَّم جَدُّهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَأَبُوْهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَعَمُّهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَعَمَّتُهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَخَالَاتُهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَهُمَا فِي الْجَنَّةِ وَمَنْ أَحَبَّهُمَا فِي الْجَنَّةِ۔

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अस्र की नमाज़ अदा कर रहे थे, जब आप चौथी रकअत में थे तो इमाम हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम आपकी पुश्ते मुबारक पर सवार हो गए, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने सलाम फेरा तो उनको अपने सामने बिठा लिया फिर हसन को अपने दायीं कंधे और हुसैन को बायीं कंधे पर सवार कर लिया फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! क्या मैं तुम्हें उनकी ख़बर न दूँ जो नाना और नानी के लिहाज़ से सब लोगों से बेहतर हैं ? क्या मैं तुम्हें उनकी ख़बर न दूँ जो चचा और फूफी के एतबार से सब लोगों से बेहतर हैं ? क्या

मैं तुम्हें उनकी ख़बर न दूँ जो ख़ाला और मामूं के एतबार से तुम सबसे बेहतर हैं? क्या मैं तुम्हें उनकी ख़बर न दूँ जो माँ और बाप के लिहाज़ से तुम सबसे बेहतर हों, वह हसन और हुसैन हैं, उनके नाना रसूलल्लाह, उनकी नानी ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलद, उनके बाबा अलीयुल मुर्तज़ा, उनकी वालिदा फ़ातमतुज़्ज़हरा, उनके चचा जाफ़र और उनकी फूफी उम्मे हानी, उनके मामूं क़ासिम और उनकी ख़ाला ज़ैनब व कुलसूम व रूक़ैया बिनाते रसूल हैं, उनके नाना, बाबा, चचा, फूफी, ख़ाला सब जन्नत में होंगे और वह दोनों जन्नत में होंगे और उनके चाहने वाले जन्नत में होंगे।

11.

عَنْ عَلِيٍّ، قَالَ : الْحَسَنُ أَشْبَهُ رَسُوْلِ اللهِ. صلّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. بَيْنَ الصَّدْرِ إِلَى الرَّأْسِ، وَالْحُسَيْنُ أَشْبَهُ النَّبِي. صلّى الله عليه وسلّم. مَا كَانَ أَسْفَلَ مِنْ ذٰلِكَ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : हसन सीने से सर तक रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मुशाबह हैं और हुसैन सीने से नीचे तक रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मुशाबह हैं ।

12.

عَنْ اَبِيْ بُرَيْدَه قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللهِ يَخْطُبُنَا اِذَا جَاءَ الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ عَلَيْهِمَا قَمِيْصَانِ أَحْمَرَانِ يَمْشِيَانِ وَيَعْثِرَانِ فَنَزَلَ رَسُوْلُ اللهِ مِنَ الْمِنْبَرِ فَحَمَلَهُمَا وَوَضَعَهُمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ قَالَ صَدَقَ اللهُ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ نَظَرْتُ اِلَى هٰذَيْنِ الصَّبِيَّيْنِ يَمْشِيَانِ وَ يَعْثِرَانِ فَلَمْ أَصْبِرْ حَتّٰى قَطَعْتُ حَدِيْثِيْ وَرَفَعْتُهُمَا.

हज़रत बुरैदा से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हमें ख़ुतबा दे रहे थे इसी असना में हज़रत हसन व हुसैन दोनों सुर्ख़ लिबास में मलबूस तशरीफ़ लाए दोनों गिरते पड़ते आ रहे थे । रसूले अकरम ने उनको देखा मिम्बर से उतर आए और दोनों को उठाकर अपने साथ बिठाते हुए इरशाद फ़रमाया, अल्लाह ने सच फ़रमाया, मालो औलाद दोनों आज़माइश हैं मैंने

जब दोनों को गिरते उठते हुए देखा तो मुझसे रहा न गया यहाँ तक कि बात को अधूरा छोड़कर उन्हें उठा लिया।

13.

عَنْ اَبِیْ سَعِیْدِ الْخُدْرِیْ رَضِیَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ (صلی الله علیه وآله وسلم): اَلْحَسَنُ وَ الْحُسَیْنُ سَیِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ۔

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : हसन और हुसैन नौजवानाने जन्नत के सरदार हैं।

14.

عَنْ أَبِیْ عُوَانَةَ یَرْفَعُهُ إِلَی النَّبِیِّ صلی الله علیه وآله وسلم قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : إِنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَیْنَ شَنَفَا الْعَرْشِ وَإِنَّ الْجَنَّةَ قَالَتْ : یَا رَبِّ أَسْکَنْتَنِی الضُّعَفَاءَ وَالْمَسَاکِیْنَ، فَقَالَ لَهَا اللهُ تَعَالٰی: تَرْضِیْنَ أَنِّیْ زَیَّنْتُ أَرْکَانَكِ بِالْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ.

अबू उवाना रज़ियल्लाहु अन्हु से मरफ़ूअन रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बेशक हसन व हुसैन (अलैहिमस्सलाम) जन्नत के सुतून हैं। जन्नत ने अर्ज़ कि ऐ अल्लाह ! तूने मेरे अन्दर मसाकीन और ज़ोफ़ा को आबाद किया, अल्लाह ने फ़रमाया क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि मैंने तेरे अरकान को हसन व हुसैन के ज़रिया ज़ीनत बख़्शी।

15.

عَنْ سَلْمَانَ قَالَ : کُنَّا حَوْلَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ آلِهٖ وَ سَلَّمَ فَجَاءَتْ أُمُّ أَیْمَنَ فَقَالَتْ یَا رَسُوْلَ اللهِ لَقَدْ ضَلَّ الْحَسَنُ وَ الْحُسَیْنُ وَ ذٰلِكَ عِنْدَ ارْتِفَاعِ النَّهَارِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّی اللهِ عَلَیْهِ وَ آلِهٖ وَسَلَّمَ: قُوْمُوْا فَاطْلُبُوْا ابْنَیَّ فَأَخَذَ کُلُّ رَجُلٍ تُجَاهَ وَجْهِهٖ وَ أَخَذْتُ نَحْوَ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ آلِهٖ وَسَلَّمَ فَلَمْ یَزَلْ حَتّٰی أَتٰی سَفْحَ الْجَبَلِ وَ

إِذَا الْحَسَنُ وَ الْحُسَيْنُ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ مُلْتَزِقٌ كُلٌّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِصَاحِبِهِ
وَ إِذَا شُجَاعٌ قَائِمٌ عَلَى ذَنَبِهِ يَخْرُجُ مِنْ فِيهِ شِبْهُ النَّارِ فَأَسْرَعَ إِلَيْهِ
رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ فَالْتَفَتَ مُخَاطِبًا لِرَسُوْلِ اللهِ
صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ انْسَابَ فَدَخَلَ بَعْضَ الْأَجْحِرَةِ ثُمَّ
أَتَاهُمَا فَأَفْرَقَ بَيْنَهُمَا وَ مَسَحَ وُجُوهَهُمَا وَ قَالَ بِأَبِي وَ أُمِّي أَنْتُمَا مَا
أَكْرَمَكُمَا عَلَى اللهِ۔

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास थे, पस उम्मे ऐमन आईं और अर्ज़ किया : हसन व हुसैन अलैहिमस्सलाम गुम हो गए हैं, रावी कहते हैं दिन ख़ूब निकला हुआ था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : चलो मेरे बेटों को तलाश करो, रावी कहता है सबने अपना-अपना रास्ता लिया, और मैं नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ चल पड़ा, आप मुसलसल चलते रहे हत्ता कि पहाड़ के दामन में पहुँच गए, (देखा कि) हसन और हुसैन एक दूसरे से चिमटे खड़े हैं, और एक अज़दहा अपनी दुम पर खड़ा है और उसके मुँह से आग के शोले निकल रहे हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़े तो वह अज़दहा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ मुतवज्जे होकर सिकुड़ गया, फिर खिसक कर पत्थरों में छुप गया, फिर आप हसनैन करीमैन की तरफ़ मुतवज्जे हुए और दोनों को अलग-अलग किया और उनके चेहरों को पोंछा और फ़रमाया : मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान, तुम अल्लाह के हाँ कितनी इज़्ज़त वाले हो।

16.
عَنْ عَلِيٍّ (عليه السلام) قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ
سَلَّمَ اِنَّ كُلَّ نَبِيٍّ اُوْتِيَ سَبْعَ نُجَبَاءَ اَوْ نُقَبَاءَ، وَ اُعْطِيْتُ اَنَا اَرْبَعَةَ عَشَرَ،
قُلْنَا: مَنْ هُمْ؟ قَالَ اَنَا، وَ ابْنَایَ، وَ جَعْفَرُ وَ حَمْزَةُ وَ اَبُوْ بَكْرٍ وَ عُمَرُ وَ
مُصْعَبُ ابْنُ عُمَيْرٍ وَ بِلَالٌ وَ سَلْمَانُ وَ الْمِقْدَادُ وَ حُذَيْفَةُ وَ عَمَّارٌ وَ عَبْدُ
اللهِ ابْنِ مَسْعُوْدٍ.

हज़रत अली अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : हर नबी को सात नजीब या नक़ीब दिए गए और मुझे चौदह नक़ीब दिए गए। हमने कहा : वह कौन हैं तो हज़रत अली ने फ़रमाया : मैं, मेरे दोनों बेटे और जाफ़र और हमज़ा और अबूबक्र और उमर और मुसअब बिन उमैर और बिलाल और सलमान और मिक़दाद और हुज़ैफ़ा और अम्मार और अब्दुल्लाह बिन मसऊद।

17.

عَنْ اَبِیْ رَافِعٍ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ: جَاءَتْ فَاطِمَۃُ بِنْتُ رَسُوْلِ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بِحَسَنٍ وَ حُسَیْنٍ اِلٰی رَسُوْلِ اللہِ فِیْ مَرَضِہِ الَّذِیْ قُبِضَ فِیْہِ فَقَالَتْ ھٰذَانِ ابْنَاکَ فَوَرِّثْھُمَا شَیْئاً فَقَالَ لَھَا : اَمَّا حَسَنٌ فَاِنَّ لَہٗ ثَبَاتِیْ وَ سُؤْدَدِیْ، وَ اَمَّا حُسَیْنٌ فَاِنَّ لَہٗ حَزَامَتِیْ وَ جُوْدِیْ.

अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि सैय्यदा फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मरज़े विसाल में अपने बेटों हसन व हुसैन (अलैहिमस्सलाम) के हमराह बारगाहे नुबूवत में हाज़िर हुई और अर्ज़ की कि यह आपके बेटे हैं इन्हें कुछ विरासत अता फ़रमाइए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हसन के लिए मेरी साबित क़दमी और सरदारी की विरासत है और हुसैन के लिए ताक़तो सख़ावत की विरासत।

18.

عَنْ جَابِرٍ ، رَضِیَ اللہُ عَنْہُ. قَالَ: دَخَلْتُ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَھُوَ یَمْشِیْ عَلٰی أَرْبَعَۃٍ ، وَالْحَسَنُ وَالْحُسَیْنُ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا عَلٰی ظَھْرِہٖ، وَھُوَ یَقُوْلُ: "نِعْمَ الْجَمَلُ جَمَلُکُمَا ، وَنِعْمَ الْحِمْلَانِ أَنْتُمَا".

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास हाज़िर हुआ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम चार टांगों पर चल रहे थे (घुटनों और दोनों हाथों के बल) और आपकी पुश्ते मुबारक पर हसनैन करीमैन सवार थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमा रहे थे तुम्हारा ऊँट क्या ख़ूब है और तुम दोनों क्या ख़ूब

सवार हो।

19. عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ أَبِي حَبِيْبَةَ مَوْلَى رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ أَتَى أَبَا هُرَيْرَةَ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيْهِ، فَقَالَ مَرْوَانُ لِأَبِي هُرَيْرَةَ: مَا وَجَدْتُ عَلَيْكَ فِي شَيْءٍ مُنْذُ اصْطَحَبْنَا إِلَّا فِي حُبِّكَ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ. قَالَ: فَتَحَفَّزَ أَبُوْ هُرَيْرَةَ فَجَلَسَ، فَقَالَ: أَشْهَدُ لَخَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم حَتَّى إِذَا كُنَّا بِبَعْضِ الطَّرِيْقِ سَمِعَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم صَوْتَ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ وَهُمَا يَبْكِيَانِ وَهُمَا مَعَ أُمِّهِمَا، فَأَسْرَعَ السَّيْرَ حَتَّى أَتَاهُمَا، فَسَمِعْتُهُ يَقُوْلُ لَهَا: مَا شَأْنُ ابْنَيَّ؟ فَقَالَتِ: الْعَطَشُ. قَالَ: فَأَخْلَفَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم إِلَى شَنَّةٍ يَبْتَغِي فِيْهَا مَاءً، وَكَانَ الْمَاءُ يَوْمَئِذٍ أَغْدَارًا، وَالنَّاسُ يُرِيْدُوْنَ الْمَاءَ. فَنَادَى: هَلْ أَحَدٌ مِنْكُمْ مَعَهُ مَاءٌ؟ فَلَمْ يَبْقَ أَحَدٌ إِلَّا أَخْلَفَ بِيَدِهِ إِلَى كُلَابِهِ يَبْتَغِي الْمَاءَ فِي شَنَّةٍ، فَلَمْ يَجِدْ أَحَدٌ مِنْهُمْ قَطْرَةً. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم: نَاوِلِيْنِي أَحَدَهُمَا. فَنَاوَلَتْهُ مِنْ تَحْتِ الْخِدْرِ، فَرَأَيْتُ بَيَاضَ ذِرَاعَيْهَا حِيْنَ نَاوَلَتْهُ، فَأَخَذَهُ فَضَمَّهُ إِلَى صَدْرِهِ وَهُوَ يَطْغُوْ، مَا يَسْكُتُ، فَأَدْلَعَ لَهُ لِسَانَهُ فَجَعَلَ يَمُصُّهُ حَتَّى هَدَأَ أَوْ سَكَنَ، فَلَمْ أَسْمَعْ لَهُ بُكَاءً، وَالْآخَرُ يَبْكِي كَمَا هُوَ مَا يَسْكُتُ، فَقَالَ: نَاوِلِيْنِي الْآخَرَ. فَنَاوَلَتْهُ إِيَّاهُ فَفَعَلَ بِهِ كَذٰلِكَ، فَسَكَتَا فَمَا أَسْمَعُ لَهُمَا صَوْتًا. ثُمَّ قَالَ: سِيْرُوْا فَصَدَعْنَا يَمِيْنًا وَشِمَالًا عَنِ الظَّعَائِنِ حَتَّى لَقِيْنَاهُ عَلَى قَارِعَةِ الطَّرِيْقِ، فَأَنَا لَا أُحِبُّ هٰذَيْنِ وَقَدْ رَأَيْتُ هٰذَا مِنْ رَسُوْلِ اللهِ صلى الله عليه وآله وسلم.

हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के आज़ाद कर्दा गुलाम

इसहाक़ बिन अबी हबीबा, हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि मरवान बिन हिकम हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के मरज़े विसाल में उनके पास आया। मरवान ने हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा : जब से हमारी दोस्ती और मेल मुलाक़ात है मुझे आप पर किसी मामले में इतना गुस्सा नहीं आया जितना आपकी हसन और हुसैन (अलैहिमस्सलाम) के लिए महब्बत पर आता है। रावी बयान करते हैं कि (यह सुनकर) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु उठ के बैठ गए। फिर फ़रमाया : मैं ख़ुद गवाह हूँ कि हम हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ सफ़र पर रवाना हुए, हम रास्ते में जा रहे थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हसन और हुसैन अलैहिमस्सलाम दोनों के रोने की आवाज़ सुनी और वह दोनों अपनी वालदा माजदा (सैय्यदा फ़ातमा) के साथ थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम तेज़ चलते हुए उनके पास पहुँच गए। (हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि) मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को सैय्यदा फ़ातमा से यह फ़रमाते हुए सुना : मेरे बेटों को क्या हुआ ? उन्होंने अर्ज़ किया : इन्हें सख़्त प्यास लगी है। हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पानी लेने के लिए पीछे मशकीज़े की तरफ़ गए। उन दिनों पानी की सख़्त क़िल्लत थी और लोगों को पानी की शदीद ज़रूरत थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने आवाज़ दी : क्या किसी के पास पानी मौजूद है ? हर एक ने कजावों से लटकते हुए मशकीज़ों में पानी देखा मगर उनमें से किसी एक को भी क़तरा तक न मिला। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने सैय्यदा फ़ातमा से फ़रमाया : एक बच्चा मुझे दो उन्होंने एक को पर्दे के नीचे से पकड़ाया। मैंने उनकी मुबारक कलाइयों की सफ़ेदी को देखा। जब उन्होंने शहज़ादे को पर्दे के नीचे से पकड़ाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसे पकड़कर अपने सीने से लगा लिया मगर वह सख़्त प्यास की वजह से मुसलसल रो रहा था और ख़ामोश नहीं हो रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसललम ने उसके मुँह में अपनी ज़बाने मुबारक डाल दी। बच्चा उसे चूसने लगा यहाँ तक कि सैराबी के बाद पुरसुकून हो गया। मैंने फिर उसके रोने की आवाज़ न सुनी, जबकि दूसरा उसी

तरह मुसलसल रो रहा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : दूसरा भी मुझे दे दो । सैय्यदए कायनात ने दूसरे बच्चे को भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के हवाले कर दिया । हुज़ूर नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उसके साथ भी वही मामला किया (यानी ज़बाने मुबारक उसके मुँह में डाल दी), वह दोनों (सैराब होकर) ऐसे ख़ामोश हुए कि मैंने दोबारा उनके रोने की आवाज़ न सुनी । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : चलो, तो हम ख़वातीन के दायीं बायीं जानिब बिखर गए । यहाँ तक कि हमने वस्त राह में आपको आ लिया । लिहाज़ा मैं उन दोनों से (शहज़ादों) से यूँही महब्बत नहीं करता बल्कि मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ऐसा करते देखा है । (यानी हसनैन करीमैन से महब्बत दीन में सुन्नते मुवक्कदा का दर्जा इख़्तियार कर चुकी है।)

अज़मते शहादत
और
शहीद के मआनी व मफ़हूम

यह दुनयावी ज़िन्दगी दरअस्ल उख़रवी ज़िन्दगी का मुक़दमा और पेशख़ेमा है, जिस तरह ज़िन्दगी अल्लाह तआला की बेशबहा और गराँक़द्र नेमत है उसी तरह मौत भी नेमते ख़ुदावन्दी है क्योंकि मौत ख़ुदाए ज़ुलजलाल की तरफ़ इन्तिक़ाल व इरतिहाल का एक ज़रिया है और आख़िरत की नेमतों के हुसूल का बेहतरीन वसीला है, सबसे बेहतरीन मौत शहादत की मौत है । शहादत मक़सूदो मतलूबे मोमिन भी है और इम्तिहानगाहे इश्क़ भी, शहादत इताअतो फ़रमाँबरदारी की हद्दे कमाल का नाम है, यह इताअत गुज़ारी तसलीमो रज़ा की बिना और अस्ल है, कफ़न बरदोश मैदाने कारज़ार में जाना और बारगाहे समदीयत में नज़रानए जाँ पेश करना ख़ुशबख़्ती का वह ज़ीना है जो तक़र्रुबे इलल्लाह का मुवक़्क़र ज़रीआ व वसीला है, यानी यही वह रूतबए अज़ीमो रफ़ीअ है जिसके लिए अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम दस्त ब दुआ रहे, और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

"اَشْرَفُ الْمَوْتِ قَتْلُ الشَّهَادَةِ"

बेहतरीन मौत शहादत की मौत है और इस बात से भी शहादत की अहम्मीयत व अफ़ादियत मुतरश्शेह है कि तबई मौत माँगना नाजायज़ व हराम जबकि शहादत की मौत माँगना जायज़ और मुस्तहब क़रार दिया गया है ।

सुब्हानल्लाह तआला, उससे अच्छी मौत कौन सी होगी जो अल्लाह के दीन की ख़ातिर आए, और उससे बेहतर नज़अ कौन सी होगी कि मलाइकए

रहमत रूहे शहीद के इस्तिक़बाल में खड़े हों और उससे अच्छी कौन सी रेहलत होगी कि जान निकलते ही जलवए बारी तआला का मुशाहिदा हो जाए। क़ुरआन मजीद में शहीद का ज़िक्र कई मक़ामात पर आया है, सूरए बक़र आयत **154** में अल्लाह तबारको तआला का इरशाद है।

وَلَا تَقُولُوا لِمَن يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ

जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वह ज़िन्दा हैं लेकिन तुम (उनकी ज़िन्दगी का) शऊर नहीं रखते।

सूरए आले इमरान की आयत **169** में हैं,,

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ

जो अल्लाह की राह में शहीद किए गए उनको हरगिज़ मुर्दा न समझो बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास (जन्नत की नेमतों का) रिज़्क़ दिए जाते हैं।

सूरए आले इमरान की आयत **157** में अल्लाह तआला का इरशाद है,,

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ

अगर तुम अल्लाह तआला की राह में शहीद किए जाओ या अपनी मौत मरो तो बेशक अल्लाह तआला की बख़्शिशो रहमत उस (माल) से बेहतर है जिसे यह जमा कर रहे हैं।

सूरतुन निसा की आयत **74** में शहीद का ज़िक्र कुछ यूँ आया है,,

وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا

और जो भी अल्लाह की राह में जिहाद करेगा वह क़त्ल हो जाए या ग़ालिब आ जाए, दोनों सूरतों में हम उसे अज्रे अज़ीम अता करेंगे।

सूरतुत्तौबा की आयत **111** में है,,

إِنَّ اللهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ

बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनके जानो अमवाल (वादए) जन्नत के बदले ख़रीद लिए हैं, वह अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं पस वह (दुशमन को) मारते हैं और (ख़ुद भी) शहीद होते हैं।

इन आयात में युक़तलु, क़ुतिलू, युक़तलून और क़ुतिलतुम वग़ैरह से वह वफ़ा शिआर, शौक़े जाँ निसारी से सरशार और इताअत गुज़ार लोग मुराद हैं जो अल्लाह के दीन की ख़ातिर मैदाने जंग में कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन से लड़ते हुए मताए जाँ लुटा दें, कोई शख़्स महज़ रियाज़त के ज़रिया इस शरफ़े अज़ीम की गर्द भी नहीं पा सकता, इस रूतबए आली को शहादत, और इस मसनदे रफ़ीअ पर मुतमक्किन होने वाले को शहीद कहते हैं। अल्लाह जल्ला मजदहू ने क़ुरआन मजीद में कसीर मक़ामात पर उन इताअतकेश हस्तियों का ज़िक्र किया और उनको मुर्दा कहने की सख़्त मुमानिअत फ़रमाई है।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ....الخ

में शहीद को मुर्दा कहने की आम नफ़ी थी जबकि सूरते आले इमरान में वला तहसबन्ना कहकर इस मुमानिअत की सख़्त ताकीद फ़रमा दी, नूने मुशद्दद जिसे नूने सक़ीला भी कहते हैं यह उस वक़्त इस्तेमाल होता है जब किसी अम्र की ख़ास ताकीद मक़सूद होती है, और यह बात भी ग़ौर तलब है कि पिछली आयत में शहीद को सिर्फ़ मुर्दा कहने से मना किया गया था जबकि यहाँ वला तहसबन्ना कहकर यह वाज़ेह कर दिया कि शोहदा को मुर्दा कहना तो दूर की बात, उन्हें मुर्दा समझना भी मत, अपनी सोच पर पहरे बिठा लेना और हरगिज़ उन्हें मुर्दा गुमान भी मत करना, वह ज़िन्दा हैं, रिज़्क़ पाते हैं, मगर तुम्हारा नाक़िस फ़हमो शऊर उनकी हयाते अबदी के इदराक से क़ासिरो मान्दा है।

जिस तरह ग़ुरूबे आफ़ताब, आफ़ताबे के ज़वाल या फ़ना का पैग़ामबर नहीं है बल्कि यह तो अगले दिन नई आबो ताब से उजालों की नवेद सुनाता है, बिला तशबीह मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह भी शहादत पाकर पहले से भी ज़्यादा आबो ताब से बामे जिनां पर जगमगाता है और अबदी हयात से सरफ़राज़ हो जाता है। अहादीसे मुबारका में भी क़तीले फ़ी सबीलिल्लाह के लिए "शहीद" का लफ़्ज़ आया है।

इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम है,,

عَنِ ابْنِ عَبَّاس - رضى الله عنهما - قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ - صلى الله عليه وسلم: "اَلشُّهَدَاءُ عَلٰى بَارِقٍ نَهْرٍ بِبَابِ الْجَنَّةِ, فِىْ قُبَّةٍ خَضْرَاءِ يَخْرُجُ عَلَيْهِمْ رِزْقُهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ بُكْرَةً وَ عَشِيًّا".

इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : शोहदाए किराम जन्नत के दरवाज़े पर नहरे बारिक़ पर सब्ज़ कुब्बा में हैं और उनका रिज़्क़ उन्हें सुब्हो शाम पहुँचता है । इस तम्हीद के बाद ज़रूरी है कि हम शहीद के चन्द लुगवी व इस्तिलाही मानी और वजहे तस्मिया पर भी एक नज़र डालते चलें । शहीद, शहिदा, यशहदु, शुहूदन से बरवज़्ने फ़ईल सिफ़ते मुशब्बा का सेग़ा है । यह असमाए हुसना में से एक इस्म भी है जिसका मानी हर चीज़ का मुशाहिदा करने वाला, कुरआन मजीद में है,,

وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ

और अल्लाह तुम्हारे आमाल का मुशाहिदा करने वाला और गवाह है । इसी से ''शाहिद'' है जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सिफ़ाती असमा में से एक इस्म है, बमानी गवाह, हाज़िर वग़ैरह । इरशादे रब्बानी है,,

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

''ऐ नबी (मुकर्रम) बेशक हमने आपको (हक़ और ख़ल्क़ का) मुशाहिदा करने वाला और (हुस्ने आख़िरत की) ख़ुशख़बरी देने वाला और (अज़ाबे आख़िरत का) डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है ।

इसी से ''मशहूद'' है, रोज़े क़यामत या जुमा को कुरआन पाक में यौमे मशहूद कहा गया है व ज़ालिका यौमुम मशहूद और यही वह दिन है जब सबको हाज़िर किया जाएगा ।

अल्लामा फ़िरोज़ाबादी ने शहीद के मुन्दरजा ज़ेल मानी बयान किए हैं ।

اَلشَّاهِدُ وَالْاَمِيْنُ وَالَّذِىْ لَا يَغِيْبُ مِنْ عِلْمِهٖ شَىْءٌ وَالْقَتِيْلُ فِىْ سَبِيْلِ اللهِ

1. शहीद बमानी शाहिद
2. गवाही देने में अमीन

3. वह ज़ात जिसके इल्म से कुछ ग़ायब न हो
4. अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाने वाला
शहीद को इसलिए शहीद कहा जाता है कि वह जान निकलते ही तजल्लियाते इलाही का मुशाहिदा कर लेता है। तजल्लिए इलाही का यह नज़्ज़ारा शहीद को मिलने वाले तमाम एज़ाज़ात की जान है, यही वह नेमत है जिसकी ख़्वाहिश शहीद जन्नत में जाने के बाद भी करेगा कि उसे दुनिया में लौटा दिया जाए और वह बार-बार अल्लाह की ख़ातिर शहीद किया जाए और हर बार जमाले ज़ुलजलाल का बेहिजाब मुशाहिदा करे।
हदीसे मुबारका है,,

وقال رسول الله صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ لِمَا يَرَى مِنَ الْكَرَامَةِ

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ''कोई शख़्स भी ऐसा न होगा जो जन्नत में दाख़िल होने के बाद दुनिया में दोबारा आना पसन्द करे, ख़्वाह उसे सारी दुनिया मिल जाए सिवाए शहीद के, उसकी यह तमन्ना होगी कि दुनिया में दोबारा वापस जाकर दस मर्तबा और क़त्ल हो (अल्लाह के रास्ते में) क्योंकि वह शहादत की इज़्ज़त वहाँ देखता है।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाह अलैह ने ''फ़तहुल बारी'' में शहीद की वजहे तसमिया के बारे में कई अक़्वाल ज़िक्र किए हैं, जिनमें से चन्द अहम दर्जेज़ेल हैं। (1) इब्ने अम्बारी ने कहा : (शहीद को शहीद) इसलिए (कहते हैं) कि अल्लाह तआला और उसके फ़रिशते उसके लिए जन्नत की गवाही देते हैं। (2) इसलिए कि वह रूह निकलते वक़्त उन इनआमात को देखता है जो उसके लिए तैयार किए गए हैं। (3) इसलिए कि उसके लिए जहन्नम की आग से अमान की गवाही दी गई है। (4) नस्र बिन शमील ने कहा : इसलिए कि शोहदा ज़िन्दा हैं गोया कि उनकी रूहें शाहिद यानी हाज़िर हैं। (5) इसलिए कि उसकी मौत के वक़्त

सिर्फ़ रहमत के फ़रिशते ही आते हैं। (6) इसलिए कि वह क़यामत के दिन रसूलों की तब्लीग़े दीन की गवाही देने वाला होगा। (7) इसलिए कि फ़रिशते उसके हुस्ने ख़ातमा की गवाही देतें हैं। (8) इसलिए कि अल्लाह तआला उसके हुस्ने नीयतो इख़लास की गवाही देने वाला है। (9) इसलिए कि वह दुनिया व आख़िरत के मलकूत का मुशाहिदा करता है।

शहीद की अक़साम

अहादीसे सहीहा की रू से शहीद की दो अक़साम हैं, (1) शहीदुल मारका (2) फ़ी हुक्मुश्शहीद ।

शहीदुल मारका यानी अल्लाह के लिए नेक नियती से मैदाने जिहाद में काफ़िरों, मुशरिकों के साथ लड़ते हुए क़त्ल होने वाला । इसे शहीदे हक़ीक़ी भी कहते हैं ।

फ़ी हुक्मुश्शहीद : शहादत की मौत का दर्जा पाने वाला, यानी मैदाने जिहाद के अलावा ऐसी मौत पाने वाला जिसे शहादत की मौत क़रार दिया गया और जिसपर शहादत के अज्र का वादा किया गया है । उसे शहीदे हुक्मी, शहीदे आख़िरत और शहीदे सवाब भी कहा जाता है । मसलन ज़ुलमन क़त्ल किया जाने वाला, पेट की बीमारी में मरने वाला, ताऊन से फ़ौत होने वाला, डूब कर फ़ौत होने वाला, आग से जलकर मरने वाला, फेफड़ों की बीमारी (सिल) की वजह से मरने वाला, जो अपने दीन की हिफ़ाज़त करते हुए क़त्ल किया गया ।

अहादीसे मुबारका और फ़ज़ीलते शहीद

शहीद और शहादत की फ़ज़ीलत पर चन्द अहादीस पेशे ख़िदमत हैं।

1.

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الشَّهِيدُ لَا يَجِدُ مَسَّ الْقَتْلِ إِلَّا كَمَا يَجِدُ أَحَدُكُمُ الْقَرْصَةَ يُقْرَصُهَا "۔

अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ''शहीद को क़त्ल के वार से बस इतनी ही तकलीफ़ महसूस होती है जितनी तुम में से किसी को च्युंटी के काटने से महसूस होती है (फिर उसके बाद तो आराम ही आराम है)''

2.

عَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ أَعْرَابِيًّا جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ الرَّجُلَ يُقَاتِلُ لِلذِّكْرِ، وَيُقَاتِلُ لِيُحْمَدَ، وَيُقَاتِلُ لِيَغْنَمَ، وَيُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: مَنْ قَاتَلَ حَتَّى تَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ أَعْلَى فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ۔

अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि एक देहाती रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास आया और उसने अर्ज़ किया : कोई शोहरत के लिए जिहाद करता है कोई जिहाद करता है ताकि उसकी तारीफ़ की जाए, कोई इसलिए जिहाद करता है ताकि माले ग़नीमत पाए और कोई इसलिए जिहाद करता है ताकि उसके मर्तबे का इज़हार हो सके, तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने सिर्फ़ इसलिए जिहाद किया ताकि अल्लाह का कलमा

सरबुलन्द रहे तो वही अस्ल मुजाहिद है ।

3. عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : لَمَّا أُصِيبَ إِخْوَانُكُمْ بِأُحُدٍ جَعَلَ اللهُ أَرْوَاحَهُمْ فِي جَوْفِ طَيْرٍ خُضْرٍ تَرِدُ أَنْهَارَ الْجَنَّةِ: تَأْكُلُ مِنْ ثِمَارِهَا، وَتَأْوِي إِلَى قَنَادِيْلَ مِنْ ذَهَبٍ مُعَلَّقَةٍ فِي ظِلِّ الْعَرْشِ، فَلَمَّا وَجَدُوْا طِيْبَ مَأْكَلِهِمْ وَمَشْرَبِهِمْ وَمَقِيْلِهِمْ قَالُوْا: مَنْ يُبَلِّغُ إِخْوَانَنَا عَنَّا أَنَّا أَحْيَاءٌ [فِي الْجَنَّةِ] نُرْزَقُ لِئَلَّا يَزْهَدُوْا فِي الْجِهَادِ وَلَا يَنْكُلُوْا عِنْدَ الْحَرْبِ، فَقَالَ اللهُ سُبْحَانَهُ: أَنَا أُبَلِّغُهُمْ عَنْكُمْ قَالَ: فَأَنْزَلَ اللهُ: {وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِي سَبِيْلِ اللهِ.... إِلَى آخِرِ-

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम्हारे भाई उहद के दिन शहीद हो गए तो अल्लाह ने उनकी अरवाह सब्ज़ चिड़ियों के पेट में रख दीं, जो जन्नत की नहरों पर फिरती हैं, उसके मेवे खाती हैं और अर्श के साये में मुअल्लक़ सोने की क़िन्दीलों में बसेरा करती हैं, जब उन रूहों ने अपने खाने, पीने और सोने की खुशी हासिल कर ली तो वह कहने लगीं : कौन है जो हमारे भाइयों को हमारे बारे में यह ख़बर पहुँचा दे कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं और रोज़ी दिए जाते हैं ताकि वह जिहाद से बे रग़बती न करें और लड़ाई के वक़्त सुस्ती न करें तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "मैं तुम्हारी जानिब से उन्हें यह ख़बर पहुँचाऊंगा" रावी कहते हैं: तो अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा वला तहसबन्नल लज़ीना क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाह....अख़ीर आयत तक नाज़िल फ़रमाई ।

शहादत की इस मन्ज़िलते उज़मा और फ़ज़ीलते कुबरा की वजह से हर मोमिन यह आरज़ू रखता है कि अल्लाह उसे शहादत का दर्जा नसीब फ़रमाए । यह भी पेशे नज़र रहे कि हर कोई शहादत के इस मक़ामे रफ़ीअ का मुतहम्मिल नहीं हो सकता, यह तो उन रहरवाने शौक़ का नसीब है कि जिनका जज़्बा बर तर अज़ सूदो ज़ियाँ हो, जिनका ईमान कमाल की इन्तिहाओं पर हो, जिनका नफ़स-नफ़स जलवाहाए किरदिगार के लिए बेक़रार हो, जिनके पुरसोज़ कुलूबो अरवाह ज़ौक़े शहादत से सरशार हों । अल्लाह जल्ला मजदहू जिन बख़्तावर शख़्सियतों को

मक़ामे शहादत पर फ़ायज़ कर देता है, सुर्ख़रूई और अबदी सरफ़राज़ी उन लोगों का मुक़द्दर बन जाती है, क्योंकि नुबूवतो सदाक़त के बाद शहादत ही है कि जिसके ज़रिया बयक जस्त मनाज़िले तकर्रुब तय होती हैं। कुरआन मजीद में है,,

أُولٰئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الشُّهَدَاءِ وَ الصَّالِحِيْنَ

यही लोग (उन हस्तियों के) साथ होंगे जिनपर अल्लाह तआला ने इनआम फ़रमाया यानी अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालिहीन।

लेकिन ग़ौर कीजिए कि जब हम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की हयाते तैय्येबा का मुतालआ करें तो बज़ाहिर हमें आपकी मुबारक ज़िन्दगी में यह नेमत नज़र नहीं आती हालांकि नेमतों के मसदरो क़ासिम आप, वल्लाहु मोअती व इन्नमा अना क़ासिमुन,, अल्लाह अता करने वाला, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम क़ासिमे निअम, और हर नेमत पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दामने करम में आई और मोतबर हुई, फिर ख़ल्क़ का मुक़द्दर बनी, तो यह कैसे मुमकिन था कि अफ़ज़लुन नेअम यानी शहादत जिसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम दुआगो भी हों, शदीद आरज़ू भी रखते हों, मैदाने जंग में जाकर जिसके हुसूल का सामान भी करते हों, वह आली मर्तबा आपको न मिला हो। शहादत के लिए मुस्तफ़ा करीम अलैहि अफ़ज़लिस्सलातु वत्तसलीम की तड़प का अन्दाज़ा इस हदीस से लगाइए जो सैय्यदना अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने रिवायत की है।

لَوَدِدْتُ أَنِّيْ أَغْزُوْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَأُقْتَلُ، ثُمَّ أَحْيَا ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أَحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ"

और मुझे यह आरज़ू है कि अल्लाह की राह में जिहाद करूँ फिर मारा जाऊँ फिर जिलाया जाऊँ फिर मारा जाऊँ, फिर जिलाया जाऊँ फिर मारा जाऊँ।

यह कैसे मुमकिन है कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम आरज़ू फ़रमाएं और ख़ालिक़े कायनात अज़्ज़ा व जल्ल मन्ज़ूर न फ़रमाए, मगर इन्नलल्लाहा ला युख़लिफ़ुल मीआद की शान वाला ख़ुदा यह वादा कर

चुका था कि वल्लाहु यासिमुका मिनन्नास अल्लाह लोगों (के शर और नुक़सान) से आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा मगर तमन्नाए हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पूरी करना भी ज़रूरी ठहरा, अब अगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मैदाने जंग में शहीद होते तो अल्लाह का हिफ़ाज़त का वादा आड़े आता और अगर शहादत न मिलती तो दीगर शोहदा का इस मर्तबे में तफ़व्वुक़ दिखाई देता जो ज़ाते बारी तआला को भी गवारा नहीं है। लिहाज़ा अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का दामन शहादत से ख़ाली न रखा बल्कि शहादत की दोनों क़िस्में यानी शहादते सिर्री व जेहरी आपको अता फ़रमाईं जिनकी इब्तिदा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की हयाते मुतहहरा में ही हो चुकी थी मगर ज़हूरे कामिल उन अजसाम पर हुआ जिनकी महब्बत दरअस्ल हुज़ूर से महब्बत है जिनका बुग़्ज़ हुज़ूर का बुग़्ज़ है जिनसे सुलह हुज़ूरे अकरम से सुलह और जिनसे जंग रसूले करीम से जंग है जो ज़ाहिरन भी शबीहे मुस्तफ़ा हैं और बातिनन भी हामिले औसाफ़े शहे दोसरा हैं,, कौन हैं वह नुफ़ूस जिनके ज़रिया रसूलल्लाह की आरज़ूए शहादत पूरी हुई ? यह हसनैन करीमैन अलैहिमस्सलाम हैं कि जिनकी मुबारक शहादतें दरअस्ल रसूले अकरम की दुआए शहादत की क़ुबूलियत और आरज़ूए जाँ निसारी की तकमील के मज़ाहिर हैं। अगर किसी के ज़ह्न में यह सवाल आए कि हसनैन करीमैन अलैहिमस्सलाम की शहादतें रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शहादत कैसे हो सकती हैं। इसका जवाब यह है कि हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम के गले पर छुरी फिर रही है लेकिन वफ़ात मक़सूद नहीं, अब एक मेंढा हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का फ़िदया बन जाता है और इरशाद होता है,

{وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ}

और हमने एक बहुत बड़ी कुर्बानी के साथ उसका फ़िदया कर दिया, अगर एक मेंढा हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का फ़िदया बन सकता है तो हसनैन करीमैन अलैहिमस्सलाम सरकार का फ़िदया क्यों नहीं बन सकते। मालूम हुआ कि हसनैन करीमैन अलैहिमस्सलाम की शहादतें शहादते मुस्तफ़ा हैं, यह दोनों सिर्री व जेहरी

शहादतें रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सीरते तैय्यबा के दो ऐसे बाब हैं जो अपनी ज़ौफ़शानी, हमःगीरियत और इनफ़िरादियत में बेमिस्ल हैं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शहादते सिर्री का आग़ाज़ तो उस वक़्त ही हो गया था जब ग़ज़वए ख़ैबर के मौक़े पर ज़ैनब नामी यहूदिया के ज़रिया आपको ज़हर दिया गया, रसूलल्लाह ने अपने मरज़े विसाल के दौरान इरशाद फ़रमाया कि ख़ैबर में मुझे जो ज़हर दिया गया था उसकी तकलीफ़ मुझे महसूस हो रही है मगर मुहाफ़िज़ते इलाही की बदौलत वह ज़हर अपना असर न दिखा सका यानी शहादते सिर्री की इब्तिदा तो हुई, सबब तो पाया गया, मगर यह शहादत उस वक़्त पायए तकमील को पहुँची जब हज़रत इमाम हसन को पै दर पै ज़हर दिया गया हत्ता कि आप शदीद बीमार हो गए और हालत यह हो गई कि आपका जिगरे मुबारक टुकड़े-टुकड़े होकर दस्त की सूरत में निकलता रहा, चालीस दिन तक यही कैफ़ियत रही हत्ता कि आप शहादत से सरफ़राज़ हुए और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शहादते सिर्री का बाब पूरा हुआ। आपकी उम्रे मुबारक बवक़्ते शहादत पैंतालीस बरस छः माह और चन्द दिन थी। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शहादते जेहरी के लिए सैय्यदना इमाम हुसैन का इन्तिख़ाब हुआ। शहादते जेहरी का दर्जा ब हर एतबार शहादते सिर्री से बहुत ऊँचा है और कहा जाता है कि दर्जा जिस क़दर बड़ा हो इम्तिहान भी उसी क़दर कड़ा होता है। तारीख़े आलम व तारीख़े इसलाम ऐसे मुख़लिसीन से भरी पड़ी है कि जिन्होंने अल्लाह के दीन की ख़ातिर अज़ीमुश्शान कुर्बानियां पेश कीं और अपनी जानें जाँ आफ़रीं के सुपुर्द कीं मगर जो शोहरत व आलमगीरियत शहादते इमाम हुसैन को नसीब हुई वह बेमिसाल भी है और लाज़वाल भी कि आज भी इस शहादत का तज़किरा और चर्चा रोज़े अव्वल की तरह ताज़ा है। इस शोहरत की कई वुजूहात हैं जिनमें से सबसे पहली और अहम वजह यही है कि शहादते हुसैन दरअस्ल शहादते मुस्तफ़ा है जभी तो बाज़ सहाबए किराम ने ख़्वाब में आपको मैदाने कर्बला में देखा और आपने आलमे रोया में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और सैय्यदा उम्मे सलमा

रज़ियल्लाहु अन्हा को शहादते इमाम हुसैन की ख़बर दी।

أَخْرَجَ الْحَاكِمُ وَ الْبَيْهَقِيُّ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ رَأَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَنَامِ وَعَلَى رَأْسِهِ وَلِحْيَتِهِ التُّرَابُ فَقُلْتُ مَا لَكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ قَدْ شَهِدْتُ قَتْلَ الْحُسَيْنِ اٰنِفاً.

हाकिम और बैहक़ी ने उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की है, आप फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके सरे मुबारक और रीशे मुबारक में गर्द लगी है, मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम यह क्या है ? आप ने फ़रमाया कि मैं अभी शहादते हुसैन में मौजूद था। एक रिवायत में इन अलफ़ाज़ का इज़ाफ़ा है कि हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि जागने के बाद मैंने वह मिट्टी देखी जो मुझे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने दी थी तो वह मिट्टी ख़ून हो चुकी थी।

أَخْرَجَ اَحْمَدُ وَ الْبَيْهَقِيُّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّوْمِ ذَاتَ يَوْمٍ نِصْفَ النَّهَارِ أَشْعَثَ أَغْبَرَ بِيَدِهِ قَارُوْرَةٌ فِيْهَا دَمٌ فَقُلْتُ: مَا هٰذِهٖ؟ قَالَ دَمُ الْحُسَيْنِ وَأَصْحَابِهٖ لَمْ أَزَلْ أَلْتَقِطُهُ مُنْذُ الْيَوْمِ فَأَحْصِيْ ذٰلِكَ الْوَقْتُ فَوَجَدْتُ قَدْ قُتِلَ ذٰلِكَ الْيَوْمِ.

अहमद और बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि एक दिन आपने दोपहर के वक़्त आराम करते हुए ख़्वाब में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को इस हाल में देखा कि आप परागन्दा व ग़ुबार आलूद थे और हाथ में एक शीशी पकड़े हुए थे। मैंने अर्ज़ की, यह क्या है ? फ़रमाया यह हुसैन और उसके साथियों का ख़ून है जिसे मैं आज इसमें जमा करता रहा हूँ, मैंने हिसाब लगाया तो पता चला कि उसी दिन इमाम हुसैन शहीद किए गए थे।

शहादते इमाम हुसैन की शोहरत की दूसरी वजह वादए इलाही है। इरशादे ख़ुदावन्दी है

{فَاذْكُرُوْنِيْ اَذْكُرْكُمْ}

तुम मुझे याद करो मैं तुम्हें याद करूँगा यानी तुम्हारा चर्चा करूँगा, इंसानों में, फ़रिशतों में और तमाम मख़लूक़ाते आलम में, ग़ौर कीजिए इमाम हुसैन ने कैसी कैसी आज़माइशों में भी यादे इलाही नहीं छोड़ी, कर्बला के रेतीले मैदान में प्यास बरदाश्त करते हुए और हर तरह के आलाम सहते हुए भी अल्लाह का शुक्र अदा किया और अल्लाह का ज़िक्र करते रहे हत्ता कि जब बहालते सजदा आपकी शहादत हुई तो ज़बाने मुबारक पे यही विर्द था, सुब्हाना रब्बियल आला, सुब्हाना रब्बियल आला, और जब आपका सर नोके नेज़ा पर बुलन्द किया गया तब भी सरे मुबारक से तिलावते कुरआन की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जब सैय्यदना इमाम हुसैन ने अल्लाह का इतना ज़िक्र किया और ऐसी इबादतो रियाज़त की, फिर अल्लाह ने भी अपना वादा पूरा किया और ज़िक्रे शहादते इमाम हुसैन अतराफ़ो अकनाफ़े आलम में ऐसा जारी कर दिया कि जब भी आशूरा आता है शहादते नवासए रसूल की याद में दिल फ़िगार और आंखें अश्कबार हो जाती हैं और यूँ लगता है गोया यह सानेहा बिल्कुल अभी पेश आया हो।

तीसरी वजह यह है कि यह शहादत तमाम आज़माइशों की जामेअ है। लारैब सैय्यदुश्शोहदा का लक़ब पाकर मतलए हस्ती पर अबदी तलअत बिखेरने वाले नवासए रसूल की आज़माइश तमाम आज़माइशों की जामेअ थी, कुरआन मजीद में अल्लाह ने अपने बन्दों पर पेश आने वाली तमाम आज़माइशों का ज़िक्र कुछ यूँ फ़रमाया।

وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ. الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ. أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ۔

और हम ज़रूर बिज़्ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ और भूख से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़सान से, और (ऐ हबीब !) आप (इन) सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दें, जब उन्हें कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं कि बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं। उन लोगों पर अपने रब की तरफ़ से दरूद, और रहमत है और यही लोग हिदायत पाने

वाले हैं।

ग़ौर किया जाए तो महसूस होता है गोया इन आयतों बल्कि सूरते बक़र के इस सारे रूकूअ में वाक़अए कर्बला बयान किया जा रहा है कि पहले नमाज़ और सब्र से मदद मांगने की तलक़ीन फ़रमाई अगर सिर्फ़ नमाज़ का ज़िक्र होता तो नमाज़ तो यज़ीदियों की सफ़ों में भी पढ़ी जा रही थी लेकिन नमाज़ और सब्र का इज्तिमाअ तो ख़यामे अहलेबैत में ही दिखाई देता है। फिर अहले ज़िक्र के चर्चे का वादा, फिर मसायबे अहलेबैत की तरफ़ वाज़ेह इशारे। जिन आज़माइशों और मसायब का महवला बाला आयात में ज़िक्र है वह सब की सब कर्बला में सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को पेश आईं कि बैअत के लिए डराया धमकाया भी गया, भूक प्यास का सामना किया, ख़यामे अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम को लूटा गया और अपना बेहतरीन माल यानी अहलो अयाल, भाई भतीजे और अपने दिल का फल यानी अपना छः माह का बच्चा तक भी कुर्बान कर दिया। और फिर सबसे आख़िर में अपनी जान ख़ालिक़े कायनात के सुर्पुद फ़रमा दी और सैय्यदुश्शोहदा के लक़ब से मुलक़्क़ब हुए। बेशक रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शहादते जेहरी की इब्तिदा तो मैदाने उहद में ही हो चुकी थी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जंगी लिबास ज़ेबेतन फ़रमाके मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ ले गए और शदीद ज़ख़्म भी खाए, दन्दाने मुबारक शहीद हो गए (मगर दन्दाने मुबारक का सिर्फ़ उतना हिस्सा शहीद हुआ कि ज़ाहिरी हुस्न में कमी न आए) हत्ता कि शहादत की अफ़वाह भी फैल गई मगर वादए मुहाफ़िज़त का हिसार था कि शहादत न हुई, इस शहादत की तकमील तब हुई जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अपना कुम्बा लेकर ज़ौक़े शहादत से सरशार मैदाने कर्बला आए, आपको रास्ते में हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील की शहादत की ख़बर मिल चुकी थी, लोग वापसी का इसरार कर करके हार चुके थे मगर क़दमैने सैय्यदना हुसैन वापसी के लिए न उठे, उठते भी कैसे ? कि बचपन से नाना जान की ज़बानी शहादत की ख़बरें समाअत फ़रमाते रहे थे, शहादत का मक़ामो मर्तबा जानते थे बल्कि उसकी तड़प में बेक़रार थे, और उस तक़र्रुब के तलबगार थे जो शहीद ही का ख़ास्सा है। ज़ैल में चन्द अहादीस पेश की जा रही हैं जिनमें साबित है कि इमाम हुसैन

अलैहिस्सलाम की शहादत की ख़बर आपकी विलादत के साथ ही मशहूर हो गई थी।

1. عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَخْبَرَنِيْ جِبْرِيْلُ اَنَّ ابْنِيَ الْحُسَيْنُ يُقْتَلُ بَعْدِيْ بِأَرْضِ الطَّفِّ وَ جَاءَنِيْ بِهٰذِهِ التُّرْبَةِ فَأَخْبَرَنِيْ أَنَّهَا مَضْجِعُه

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे जिब्रील अलैहिस्सलाम ने ख़बर दी कि मेरे बाद मेरा यह बेटा हुसैन सरज़मीने तफ़ में शहीद होगा और वह मेरे पास यह मिट्टी लाए हैं और उन्होंने मुझे बताया कि यह मक़तले हुसैन की मिट्टी है।

2. وَ أَخْرَجَ الْبَغْوِيُّ فِيْ مُعْجَمِهِ عَنْ أَنَسِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ اسْتَأْذَنَ مَلِكُ الْمَطَرِ رَبَّهُ أَنْ يَزُوْرَ النَّبِيَّ (صلى الله عليه وسلم) فَأَذِنَ لَهُ وَكَانَ فِيْ يَوْمِ أُمِّ سَلَمَةَ فَقَالَ النَّبِيُّ (صلى الله عليه وسلم) : يَا أُمَّ سَلَمَةَ احْفِظِيْ عَلَيْنَا الْبَابَ, لَا يَدْخُلْ عَلَيْنَا أَحَدٌ قَالَ: فَبَيْنَا هِيَ عَلَى الْبَابِ إِذْ جَاءَ الْحُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ فَاقْتَحَمَ فَفَتَحَ الْبَابَ فَدَخَلَ فَجَعَلَ النَّبِيُّ (صلى الله عليه وسلم) يَلْتَزِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ فَقَالَ الْمَلِكُ: أَتُحِبُّهُ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: إِنَّ أُمَّتُكَ سَتَقْتُلُهُ إِنْ شِئْتَ أَرِيْتُكَ الْمَكَانَ الَّذِيْ يُقْتَلُ فِيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَقَبَضَ قَبْضَةً مِنَ الْمَكَانِ الَّذِيْ قُتِلَ فِيْهِ فَأَرَاهُ فَجَاءَ بِسَهْلَةٍ أَوْ تُرَابٍ أَحْمَرَ فَأَخَذَتْهُ أُمُّ سَلَمَةَ فَجَعَلَتْهُ فِيْ ثَوْبِهَا. قَالَ ثَابِتٌ: فَكُنَّا نَقُوْلُ إِنَّهَا كَرْبَلَاءُ.

इमाम बग़वी ने अपनी मोजम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि बारिश के फ़रिशते ने अल्लाह तआला से इजाज़त चाही कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत करना चाहता है। चुनान्चे उसे इजाज़त मिल गई, और उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ फ़रमा थे, आपने फ़रमाया,

ऐ उम्मे सलमा हम पर दरवाज़े की हिफ़ाज़त करना, और किसी को भी अन्दर न आने देना, चुनान्चे उसी दौरान जबकि आप दरवाज़े पर थीं हज़रत इमाम हुसैन अला जद्दिही व अलैहिस्सलातु वस्सलाम तिफ़लाना महब्बत में अन्दर दाख़िल हो गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से लिपट गए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम उन्हें गोद में लेकर चूमने लगे। फ़रिशता कहने लगा, आप इनसे महब्बत करते हैं ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, हाँ। फ़रिशता कहने लगा, अनक़रीब आपकी उम्मत इनको शहीद कर देगी। अगर आप चाहें तो इनकी शहादतगाह आपको दिखा दी जाए तो उन्होंने आपको रेतीली या सुर्ख़ मिट्टी लाकर दिखाई जिसे हज़रत उम्मे सलमा ने लेकर कपड़े में रख लिया। हज़रत साबित ने कहा हम उसे कर्बला कहते हैं।

3. عَنْ أُمِّ سَلْمَةَ قَالَتْ: كَانَ الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ يَلْعَبَانِ بَيْنَ يَدَيْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ بَيْتِيْ، فَنَزَلَ جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ، إِنَّ أُمَّتَكَ تَقْتُلُ ابْنَكَ هٰذَا مِنْ بَعْدِكَ، وَأَوْمَأَ إِلَى الْحُسَيْنِ، وَ اٰتَاهُ بِتُرْبَةٍ فَشَمَّهَا رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: رِيْحُ كَرْبٍ وَبَلَاءٍ وَقَالَ يَا أُمَّ سَلْمَةَ إِذَا تَحَوَّلَتْ هٰذِهِ التُّرْبَةُ دَمًا فَاعْلَمِيْ أَنَّ ابْنِيَ قَدْ قُتِلَ فَجَعَلَتْهَا فِيْ قَارُوْرَةٍ.

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन दोनों मेरे घर में खेल रहे थे कि जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने हज़रत इमाम हुसैन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि आपके बाद आपकी उम्मत इन्हें शहीद कर देगी और आपको उस जगह की मिट्टी पेश की, आपने उसे सूंघा और कहा कि यह कर्बो बला की महक है, साथ ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ उम्मे सलमा जब यह मिट्टी ख़ून में तब्दील हो जाए तो जान लेना कि मेरा यह बेटा शहीद हो गया है। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने उसे एक शीशी में बन्द करके रख दिया।

इसके साथ-साथ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह ख़बर भी दे दी थी कि उम्मत में फ़ितना व फ़साद बरपा करने वाला यह शख़्स कौन होगा। अबूज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

"إِنَّ أَوَّلَ مَنْ يُبَدِّلُ سُنَّتِيْ رَجُلٌ مِنْ بَنِيْ أُمَيَّةَ"

वह पहला शख़्स जो मेरी सुन्नतों को तब्दील करेगा वह बनी उमैया का एक आदमी होगा । इमाम बैहक़ी इस रिवायत को लिखकर फ़रमाते हैं, ''ऐसा लगता है यह शख़्स यज़ीद बिन मुआविया है ।''

सरवरे कायनात अलैहि अफ़्ज़लुत्तसलीम वस्सलात ने सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत, जाए शहादत और सने शहादत की ख़बर भी दे दी थी और उस फ़ितना परवर शख़्स की तरफ़ भी वाज़ेह इशारा फ़रमा दिया था जो सुन्नत को तब्दील करेगा जभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने **60** हिजरी से पनाह मांगने का हुक्म दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम शहादते इमाम हुसैन को याद फ़रमाकर रोया करते थे और इमाम हुसैन के लिए सब्रो इस्तिक़ामत की दुआ फ़रमाया करते थे क्योंकि आप देख रहे थे कि सुन्नत की पामाली और इक़्दारे दीन की बदहाली के इस पुरफ़ितन दौर में अपने ख़ून से चराग़े हक़्क़ो सदाक़त जलाने वाले और गुलशने दीन की आबयारी करने वाले यही हुसैन होंगे जो अपनी बेबदल और अदीमुन्नज़ीर शहादत से अहयाए इसलाम का कारे अज़ीम सर अंजाम देंगे, यही वजह थी कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना सरमायए शुजाअत इमाम हुसैन को बख़्शा ताकि वह हर इब्तिला व आज़माइश में कामरान हों । नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की दी हुई यह अख़बारे ग़ैबिया अपने मुक़र्ररा वक़्त पर पूरी हुई और **60** हिजरी का तारीक साल कायनाते जब्रो इस्तिबदाद का निशान बनकर नुमूदार हुआ, और यज़ीद पलीद जैसा तागूते अस्र, फ़िरऔने वक़्त और फ़ासिक़े मोलिन इसलामी हुकूमत के तख़्त पर क़ाबिज़ हुआ जो अलल एलान शराब, बदकारी, लहव व लअब और दीगर अफ़आले क़बीहा का इरतिकाब करता था, हराम चीज़ों को हलाल क़रार देना और हुदूदे इलाही को पामाल करना उसके लिए

एक आम सी बात थी, नाच, गाने का शौक़ीन था, सौतेली माँ से निकाह को जायज़ क़रार देता था, मुतकब्बिरो बेईमान था । ग़रज़ मजमए कबायर और मसदरे मआयब था, यह कैसे मुमकिन था कि पेशवाए मोमिनीन, इमामे अस्र, नक़ीबे मुस्तफ़ा सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अपना दस्ते मुबारक उसके नापाक हाथ में दे देते क्योंकि इमामे पाक की बसीरतो फ़रासत यह मुलाहिज़ा फ़रमा रही थी कि यज़ीद जैसा फ़ाजिरो मलऊन और बेईमान अहले इसलाम के ईमानी ज़मीर को भी कुचल देगा और इक़्दारे इसलामी को पामाल करेगा और लोगों के क़दम फ़िस्क़ो फ़िजूर, हवाए नफ़सानी और आमाले शैतानी की तरफ़ उठेंगे और इसलाम का हुलिया यकसर बदल जाएगा, इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने मक़ामे बैज़ा पर अपने जाँ निसारान को जो खुतबा इरशाद फ़रमाया था उसमें भी इन्हीं ख़राबियों का ज़िक्र है ।

तारीख़े तिबरी में है आपने फ़रमाया : ‘‘मैं तुम लोगों को आगाह करता हूँ कि उन लोगों ने शैतान (बनी उमैया) की इताअत कुबूल कर ली है और रहमान की इताअत छोड़ दी है, ख़ुदा की ज़मीन पर फ़ितना व फ़साद फैला रखा है, हुदूदे इलाही पर अमल करना छोड़ दिया है, माले ग़नीमत में अपनों को तरजीह देते हैं, अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल और हलाल की हुई चीज़ों को हराम कर दिया है ।’’

इन हालात में वह लोग भी थे जिन्होंने राहे रूख़सत इख़्तियार की थी कि उनको कलमए हक़ बोलने पर अपनी गर्दन कटती दिखाई दे रही थी मगर इब्ने रसूलल्लाह और जिगर गोशए असदुल्लाह के लिए यह मुमकिन नहीं था कि आप इसलाम को दरपेश इन ख़तरात को भांप कर भी ख़ामोश रहते, आपने राहे अज़्मो अज़ीमत इख़्तियार की और जाबिरो बातिल हुक्मराँ के ख़िलाफ़ कलमए हक़ बुलन्द कर दिया। यज़ीद पलीद भी इस बात से बख़ूबी आगाह था कि दीगर मुस्लिमीनो मोमिनीन तो किसी तरह क़ाबू कर ही लिए जाएंगे लेकिन अहलेबैते पाक और ख़ुसूसन इमाम हुसैन को मुतीअे बातिल करना मुश्किल है लिहाज़ा उसने हुक्म नामए जौरो सितम जारी कर दिया कि किसी भी तरह इन नुफ़ूसे कुदसिया को ज़ेर किया जाए । मदीना से रख़्ते सफ़र बांधना और रौज़ए रसूल से फ़ुरक़त सैय्यदना

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के क़ल्बे मुबारक के लिए बहुत गराँ थी। इस मौक़े पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआए सब्रो इस्तिक़ामत ने सहारा दिया और आप आज़िमे मक्का हुए, यज़ीद मलऊन ने अपने कारिन्दे हाजियों के भेस में मक्का रवाना कर दिए और हुक्म दिया कि अगर हुसैन (अलैहिस्सलाम) काबा के पर्दों के पीछे भी मिलें तो उन्हें (मआज़ल्लाह) क़त्ल कर दिया जाए। सैय्यदना इमाम हुसैन ने काबे की बेहुरमती के अन्देशे के पेशे नज़र ग़मगीन दिल और अश्कबार आंखें लिए रूए सफ़र कूफ़ा की तरफ़ मोड़ा, जहाँ के बाशिन्दे आपकी मसीहाई के मुन्तज़िर थे, लेकिन दुनिया की ज़ाहिरी चकाचौंध ने कूफ़ियों के जज़बाते ईमानी को कुचल दिया। यज़ीद की अफ़वाज ने इमाम आली मुक़ाम को ज़ुल्मो सितम और मसायब के ज़रिया दबाना चाहा हत्ता कि कौसर के वारिसों पर पानी बन्द कर दिया गया मगर आग़ोशे रसूल के परवरदा के पाए अज़्म और क़दमे सबात मुतज़लज़िल न हुए, लिहाज़ा तीन दिन की प्यास बरदाश्त करने के बाद अपने अहलो अयाल को शहीद होते देखा, और यह सब सितम उठाने के बाद फिर खुद बेजिगरी से लड़ते हुए शहीद हुए, और सितम बालाए सितम यह कि आपका सर तन से जुदा कर दिया गया और नेज़ों पर बुलन्द किया गया और जिस्मे अतहर को पामाल किया गया, यूँ रसूलल्लाह की शहादते जेहरी का बाब पूरा हुआ और इसलाम को सरबलन्दी हासिल हुई और हुसैनो मिन्नी व अना मिन हुसैन की अमली तफ़सीर सफ़हए कायनात पर जलवागर हुई गोया मेरे आक़ा फ़रमा रहे हों हुसैनु मिन्नी यानी तुम हुसैन में जो कमालात देख रहे हो उनका मसदरो मम्बअ मैं हूँ और अना मिन हुसैन यानी मेरी शहादते जेहरी की तकमील, मेरी सुन्नतों की अहया और दीन की बक़ा हुसैन (अलैहिस्सलाम) से है।

फ़रमूदाते अहलेबैते अतहार
अलैहिमुस्सलाम

ज़ैल में इफ़ादए ख़वासो अवाम के लिए चन्द बसीरत अफ़रोज़, मुदब्बिराना और हकीमाना फ़रमूदाते अहलेबैत पेश किए जा रहे हैं।

अक़्वाले मौलाए कायनात सैय्यदना अलीयुल मुर्तज़ा अलैहिस्सलाम :

1. हक़ और अहलेहक़ का दामन मत छोड़ो, जो शख़्स हमारे अहलेबैत को छोड़ कर किसी दूसरे का साथ देगा वह दुनिया व आख़िरत में नुक़सान उठाएगा।
2. बेशक जो शख़्स बुराई करे उसके साथ भलाई कर और लोगों के क़ुसूर बख़शिश से ढांप क्योंकि माफ़ करना बहुत तारीफ़ की बात और फ़ज़ीलत का उन्सुर है।
3. तीन ख़सायस ऐसे हैं कि जिस शख़्स के अन्दर हों वह ज़रूर कामिलुल ईमान होगा। गुस्से और ख़ुशी की हालत में इंसाफ़ करे। फ़क़्रो ग़िना में मियाना रवी इख़्तियार करे। अल्लाह तआला के अज़ाब का ख़ौफ़ और रहमत की उम्मीद बराबर रखे।
4. जब तक मोमिन ख़ुशहाली को फ़ितना और नेमत को बला न समझे वह कामिलुल ईमान नहीं हो सकता।
5. ख़बरदार, होशयार, तुम में से कोई अल्लाह के सिवा किसी से क़तअन उम्मीद न रखे और अपने गुनाहों के सिवा किसी ने न डरे, और कोई चीज़ न आती हो तो सीखने में शर्म महसूस न करे, और अगर उससे कोई ऐसी बात दरयाफ़्त की जाए जिसे न जानता हो तो कह दे कि मुझे मालूम नहीं।
6. बुरा कस्ब हराम, बुरी सिफ़त लम्बी उम्मीदें बांधना और बुरी ग़िज़ा यतीम का माल चखना है।

7. आख़िरत की याद नफ़्स के अमराज़ की दवा और नुस्ख़ए शिफ़ा है, और दुनिया की याद लाइलाज बीमारी है।

8. हम हौज़े कौसर पर बड़ी रग़बत से उसका पानी पी रहे होंगे, अपने दुशमनों को उससे हटाएंगे और दोस्तों को प्याले भर-भर कर पिलाएंगे जो उसका एक घूंट पी लेगा वह कभी प्यासा न होगा।

9. जो शख़्स अन्जामेकार को सोचता है वह आफ़तों और मसायब से बचा रहता है और जो शख़्स तर्जुबाकारी में मज़बूत होता है वह हलाकतों से नजात पा लेता है।

10. जो शख़्स इस बात की ख़्वाहिश करता है कि वह बग़ैर दौलत के ग़नी और बग़ैर हुकूमत के साहिबे इज़्ज़त और बग़ैर कुम्बे के साहिबे जमाअत हो जाए तो उसे चाहिए कि अल्लाह की नाफ़रमानी से निकल कर उसकी इताअत में आ जाए, उसे यह सब चीज़ें मयस्सर होंगी।

11. मुझे उस शख़्स की हालत पर तअज्जुब है जो लोगों की इसलाह का बीड़ा उठाता है और ख़ुद उसकी हालत ख़राब है।

12. नाकारा होना एक आफ़त है, सब्र बहादुरी है, ज़ोहद ख़ज़ाना है, और ख़ौफ़े ख़ुदा ढाल है।

13. यह कैसा अच्छा है कि मालदार लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए फ़क़ीरों की तवाज़ोअ करें और फ़क़ीर अल्लाह पर भरोसा करें, और उनके हक़ में हुस्ने नीयत से काम लें। अगर तू फ़ितरतन हलीम और बुर्दबार नहीं है तो तकल्लुफ़न बुर्दबारी की आदत इख़्तियार कर क्योंकि बहुत कम ऐसा होता है कि इंसान जिनकी मुशाबिहत इख़्तियार करे और वह उनमें शामिल न हो।

14. अहले बसीरत के लिए हर निगाह में इबरत और हर तर्जबे में नसीहत है। जिस शख़्स से मौत के तीर का वार ख़ता जाता है वह बुढ़ापे की ज़ंजीर में जकड़ा जाता है।

15. पाकदामनी का समरा सयानत, दीन का समरा अमानत और ग़ौरो फ़िक्र का समरा आफ़ियत है।

16. अक़्ल निहायत मज़बूत असास और परहेज़गारी बेहतरीन लिबास है।

17. मोमिन का जमाल परहेज़गारी, ग़ुलाम का जमाल आक़ा की ख़िदमत

गुज़ारी और ज़िन्दगी का जमाल क़िनाअत शिआरी है।

फ़रमूदाते सैय्यदा ख़ातूने जन्नत सलामुल्लाह अलैहा :

1. औरत की सबसे बेहतरीन सिफ़त यह है कि वह किसी ग़ैर मर्द को न देखे और न किसी ग़ैर मर्द की उसपर निगाह पड़े।
2. तकब्बुर की गन्दगी को दिल से दूर करने का बेहतरीन तरीक़ा नमाज़ है।
3. अगर मैं फ़रायज़ की अदायगी के दौरान मर भी जाऊँ तो मुझे कुछ परवा नहीं है।
4. मैं इस ख़ौफ़ से रोती हूँ कि कहीं मेरी उम्र दराज़ न हो जाए।
5. माल की मुसीबत और उसका ज़ाए हो जाना कोई बड़ी मुसीबत नहीं है, अच्छे लोगों का जुदा हो जाना बड़ी मुसीबत है।
6. पहला हक़ बाहर वालों का होता है उसके बाद घर वालों का हक़ होता है।
7. हम ख़ुदा की रज़ा के तालिब हैं, दुनयावी मालो मताअ की हमें कोई हाजत नहीं और न ही हम उसकी ख़्वाहिश रखते हैं।
8. ख़ुद भूका प्यासा रहना पड़े तो रह लो मगर सायल को ख़ाली हाथ न लौटाओ।
9. हमने दुनिया के बदले आख़िरत को क़ुबूल कर लिया है इसलिए ग़ुरबतो इफ़लास के सदमे हमें उठाना पड़ते हैं।

फ़रामीने सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम :

1. दानाइयों में आला दर्जे की दानाई तक़्वा है और कमज़ोरियों में सबसे बड़ी कमज़ोरी बद अख़लाक़ी और बद आमाली है।
2. मकारिमे अख़लाक दस हैं। (1) ज़बान की सच्चाई (2) हुस्ने ख़ुल्क़ (3) मेहमान नवाज़ी (4) हक़दार की हक़ शनासी (5) सायल को देना (6) एहसान का बदला देना (7) हुक़ूक़ुल इबाद (8) शर्मो हया (9) सिला रहमी (10) बातिल से जंग के वक़्त हमले में शिद्दत।

3. मोमिन वह है जो ज़ादे आख़िरत मुहैया करे और काफ़िर वह है जो दुनिया के मज़े उड़ाने में मशगूल हो।

4. तुम्हारी उम्र बराबर कम होती जा रही है, जो कुछ तुम्हारे हाथ में है उससे किसी की मदद कर जाओ।

5. जिस काम की अन्जाम दिही तुम्हारे लिए मुश्किल हो और तुम उस पर क़ादिर न हो उसकी ज़िम्मेदारी अपने सर न लो।

6. अक़्ल के साथ दुनिया व आख़िरत दोनों हासिल हो जाती हैं जो अक़्ल से महरूम रहा वह इन दोनों से महरूम रहा।

7. लोगों की हलाकतें तीन अशया में है। तकब्बुर, हिर्स और हसद, तकब्बुर से दीन जाता रहता है, इसीलिए शैतान मलऊन हुआ। हिर्सो तमअ नफ़्स का दुशमन है इसी वजह से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से बाहर गए। हसद बुराई तलाश करता है इसी वजह से क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया।

8. जिसमें अक़्ल नहीं उसमें अदब नहीं, जिसमें हिम्मत नहीं उसमें महब्बत नहीं, जिसका दीन नहीं उसमें शर्मो हया नहीं।

9. लोगों से अच्छा सुलूक करना बेहतरीन अक़्लमन्दी है।

सैय्यदुश्शोहदा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के चन्द कलमाते तैय्येबा :

1. अगर तुम अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से डरो और हक़दार के हक़ को पहचानो तो तुम्हें यक़ीनन अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल होगी।

2. आपने एक मौक़े पर फ़रमाया : ऐ अल्लाह ! हर कर्ब में तुझपर ही मेरा भरोसा है, और हर शिद्दत में तू ही मेरी उम्मीद है, हर मामले में मुझे अपना यक़ीन अता फ़रमा, हर नेमत का तू मालिक है, हर भलाई तेरे लिए है।

3. माल का सबसे बड़ा मसरफ़ यही है कि उससे किसी की आबरू महफ़ूज़ हो जाए।

4. अपने गिरेबानों में झांको और अपना मुहासबा ख़ुद करो।

5. अनक़रीब जब हमारी रूहें हमारे जिस्मों का साथ छोड़ जाएंगी तो तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आग में जलने का मुस्तहक़ कौन है।

6. अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल हर मुसीबत में बेहतरीन पनाहगाह है और हर सख़्ती में बेहतरीन सहारा है।

7. साहिबे अक़्लो ख़िरद वही शख़्स है जो मेहरबान के हुक्म की पैरवी करे और उसकी शफ़क़त को मलहूज़े ख़ातिर रखे।

8. मैंने अपनी हर मुसीबत में अल्लाह ही को पुकारा और उसने मेरी हर मुश्किल आसान कर दी।

9. सख़ावत दौलतमन्दी है बुख़्ल इफ़लास है।

10. सिला रहमी नेमत है।

11. जल्दबाज़ी नादानी है, इल्म ज़ीनत है, रास्तबाज़ी इज़्ज़त है।

12. अपनी तारीफ़ ज़्यादा करना हलाकत का बाइस है।

13. जो सख़ावत करता है सरदार बनता है, जो कंजूसी करता है ज़लील होता है।

14. गुमराही के ज़रिया शोहरत पैदा न करो, अता के ज़रिया नेकनामी पैदा करो।

15. हुस्ने ख़ुल्क़ इबादत है, अमल तर्जबा है, इमदाद दोस्ती है।

16. इमाम हुसैन से अदब के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया कि अदब यह है कि जब तुम अपने घर से निकलो तो हर एक को ख़ुद से अफ़ज़ल समझो।

मवद्दते अहलेबैत और अकाबिरीने उम्मत

हुब्बे अहलेबैत मिफ्ताहे सआदत और कन्ज़े विलायत है, असहाबे रसूल रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन जैसे वाकिफ़ाने हक़ायक़ इस हक़ीक़ते साबिता से बख़ूबी मुत्तेला और आगाह थे और वह अहलेबैते पाक से रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत के अमली मज़ाहिर देखते रहते थे और मुहिब्बीने अहलेबैत के हक़ में सरवरे कायनात की दुआएं भी समाअत फ़रमाते रहते थे, वह जानते थे कि किताबुल्लाह के साथ हबीबुल्लाह ने हमारी हिदायत व सयानत के लिए जो सरमाया छोड़ा है वह अहलेबैते अतहार ही हैं । लिहाज़ा असहाबे रसूल "अलमवद्दता फ़िल कुरबा" के हुक्मे कुरआनी के इत्तिबाअ की अमली तफ़सीर थे, क़राबते रसूल की हुरमत का बेहद पासो लिहाज़ रखते थे और अहलेबैते अतहार का हद दर्जा एज़ाज़ो इकराम किया करते थे ।तमस्सुको इत्तिसाले अहलेबैत का यह आलम था कि वह अहलेबैत को अपने अक़ारिब हत्ता कि अपनी जानों पर भी मुक़द्दम रखते थे, उनसे शदीद महब्बत करना, उनकी दस्तबोसी करना, उनके लिए मजलिस में जगह छोड़ना, उनकी ताज़ीम में सवारी से उतर आना, और अपने अहलो अयाल को तकरीमो मवद्दते अहलेबैत की वसीअत करना सहाबए किराम का आम मामूल था, और क्यों न होता कि दस्तूरो तक़ाज़ाए महब्बत भी यही है कि महबूब के मुताल्लिक़ीन से भी महब्बत की जाए, इस रस्मे उलफ़त की ज़ियाबारी असहाबे बासफ़ा की मुबारक ज़िन्दगियों में साफ़ नज़र आती है । सहाबए किराम के बाद ताबईन, तब्ए ताबईन, अइम्मए मुजतहदीन, औलियाए कामिलीन और दीगर अकाबिरीने उम्मतो सलासिले तरीक़त का यही वतीरा व तरीक़ा रहा है कि वह अहलेबैत से ताज़ीमो तौक़ीर और मवद्दतो जाँ निसारी का मिसाली व ख़ास मामला रखते हैं, अइम्मए अरबआ का जुज़वी मसायल में इख़्तिलाफ़ एक तरफ़ मगर मवद्दतो महब्बते अहलेबैत के बाब में उन सबका

इत्तिफ़ाक़ो इजतिमाअ था और इसी को वह फ़लाहो नजाह का वाहिद वसीला गरदानते थे, रहा विलायत का मामला, वह तो है ही महब्बते अहलेबैत से मशरूत कि अहलेबैत के दरे पाक की गुलामी व जारूब कशी के बग़ैर औरंगे विलायत का हुसूल नामुमकिन है। ख़ातूने जन्नत सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा की तौसीक़ और मौलाए कायनात की मोह्रे तसदीक़ के बग़ैर कोई शख़्स वली हो ही नहीं सकता। ज़ैल में अकाबिर असहाब, ताबईन, अइम्मए फ़िक़्ह, मुफ़स्सिरीने किराम और औलियाए एज़ाम की महब्बते अहलेबैत का मुख़्तसर अहवाल पेश किया जा रहा है ताकि यह हक़ीक़त मज़ीद रोशनो ताबाँ हो जाए कि हमारे असलाफ़ के ख़मीर ही महब्बते अहलेबैत से उठे थे और उनके हाँ अहलेबैत की महब्बत, मवद्दत, निस्बत और हुरमत किस दर्जा अहम थी और आज के पुर फ़ितन दौर में हमारे लिए वाबस्तगीए अहलेबैत किस क़दर ज़रूरी है।

महब्बते अहलेबैत और सिद्दीक़े अकबर :

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सफ़रो हज़र और ग़ारो मज़ार में रफ़ीक़े मुस्तफ़ा होने का एज़ाज़े ख़ास रखने के साथ-साथ नब्ज़े शनासे मुस्तफ़ा भी थे। आपसे बढ़कर मुहिब्बे रसूल और मुहिब्बे अहलेबैत कौन होगा कि आप उन पाकीज़ा नुफ़ूस के लिए रसूलल्लाह के जज़्बात और उनके हक़ में किए गए वसाया को ख़ूब जानते और समझते थे जभी तो कुतुबे अहादीस व सियरो तारीख़ में सैय्यदना अबूबक्र का अपने बच्चों को कंधे पर उठाना तो साबित नहीं मगर यह जा ब जा मिलता है कि सिद्दीक़े अकबर हसनैन करीमैन में से एक को दायें और दूसरे को बायें कंधे पर बिठा लेते और उनके नाज़ उठाते। उम्मत के लिए सिद्दीक़े अकबर ने अहलेबैत के हक़ में जो पैग़ाम छोड़ा वह भी उनके इन्हीं जज़्बात की अक्कासी करता है। फ़रमाया,,

عَنِ ابْنِ عُمَرَ. رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا. قَالَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ ارْقُبُوا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَهْلِ بَيْتِه.

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अहलेबैत के मुताल्लिक़ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का

ख़याल रखा करो।
उरकुबू, फ़ेअले अम्र हाज़िर जमा मुज़क्कर है, यह रक़ब, यरक़बु, रक़बन, से बना है जिसके मानी हैं हिफ़ाज़त करना, निगरानी करना, नज़र रखना, इन्तिज़ार करना, इसी से रक़ीब है जो असमाए हुसना में से एक इस्म है बमानी मुहाफ़िज़, जिसके दायरए हिफ़ाज़त से कुछ बाहर नहीं, और यहाँ हज़रत अबूबक्र की मुख़ातिब सारी उम्मते मुस्लिमा है, यानी हयाते नबवी में तुम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के जिन हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त करते थे, विसाल के बाद उन हुक़ूक़ की अदायगी उन हस्तियों के ज़रिया करो यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वस्सलम के विसाल के बाद हुज़ूर का नज़ारा उन अहलेबैत में करो जो मुस्तफ़ा करीम का ख़ून हैं और शबीहे रसूल हैं। उनकी ताज़ीमो तकरीम मवद्दत और हुक़ूक़ की पासदारी के ज़रिया रसूल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व आलिह वसल्लम की ख़ुशी व रज़ा हासिल करो। मज़ीद फ़रमाया,,

فَقَالَ وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَقَرَابَةُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَصِلَ مِنْ قَرَابَتِيْ

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है सिला रहमी करने में मुझे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के क़राबतदार अपने क़राबतदारों से ज़्यादा महबूब हैं।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और ताज़ीमे अहलेबैत :

ख़लीफ़ए सानी हज़रत सैय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी अपनी औलाद से भी ज़्यादा अहलेबैते अतहार से मुहब्बत फ़रमाया करते थे और हर मौक़े पर उनको फ़ौक़ियत दिया करते थे, एक मर्तबा आपने माले ग़नीमत तक़सीम फ़रमाया। हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हज़ार-हज़ार दरहम दिए और अपने फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सिर्फ़ पांच सौ दरहम दिए तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा : या अमीरूल मोमिनीन ! मैं हुज़ूर सैय्यदे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के अहदे मुबारक में जवान था और आपके हुज़ूर जिहाद किया करता था। उस वक़्त हज़रात हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा बच्चे थे और मदीना मुनव्वरा की गलियों में खेला करते थे। आपने उनको हज़ार-हज़ार दरहम दिए और मुझे सिर्फ़ पांच सौ दरहम दिए। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : बेटा ! पहले वह मक़ाम और फ़ज़ीलत तो हासिल करो जो हज़राते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को हासिल है फिर हज़ार दरहम का मुतालबा करना। उनके बाप हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, माँ हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा, नाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम, नानी हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हैं। यह सुनकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ामोश हो गए।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह की अहलेबैत के हक़ में वसीयत :

अबूलैस समरक़न्दी ने "तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन" में रिवायत किया है,,

عَنْ عَطِيَّةَ الْعَوْفِيِّ قَالَ: قَالَ جَابِرُ بْنُ عَبْدِاللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: يَا عَطِيَّةَ احْفِظْ وَصِيَّتِيْ مَا أَرَاكَ بِصَاحِبِيْ غَيْرَ سَفَرِيْ هٰذَا، أَحِبِّ آلَ مُحَمَّدٍ وَ مُحِبِّيْ آلِ مُحَمَّدٍ وَأَبْغِضْ مُبْغِضِيْ آلِ مُحَمَّدٍ (صلی اللہ علیہ وآلہ) وَلَوْ كَانُوْا صَوَّامًا قَوَّامًا.

अतीया बिन औफ़ी से रिवायत है उन्होंने कहा कि मुझसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : ऐ अतीया ! मेरी वसीयत याद रखना, क्योंकि मैं इस सफ़र के अलावा तुम्हें अपना रफ़ीक़ो हमनशीं नहीं देखता, आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम और मुहिब्बीने अहलेबैत से महब्बत रखना, और आले मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम से बुग़्ज़ रखने वालों से बुग़्ज़ रखना, अगरचे वह कसरत से रोज़े रखने वाले और शब बेदारी करने वाले हों।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ और तकरीमे ख़ानवादए रसूल :

उमरे सानी हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की महब्बतो वाबस्तगीए अहलेबैत का मुँह बोलता सुबूत यह है कि जब आपके अहलेबैते नबवी में से कोई आता तो आप ताज़ीमन अपनी नशिस्त से उठकर खड़े हो जाते और उसकी तमाम हाजात पूरी फ़रमाते, आपको इस बात से हया आती थी कि अहलेबैत को किसी हाजत के लिए आपके दरवाज़े पर आना पड़े, शेफ़तगी का यह आलम था कि

अकसर फ़रमाया करते,

مَا عَلٰى ظَهْرِ الْاَرْضِ بَيْتٌ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْكُمْ ، وَلَأَنْتُمْ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَهْلِ بَيْتِيْ

रूए ज़मीन पर इस वक़्त कोई घर मेरे नज़दीक आपसे ज़्यादा महबूब नहीं और आप मुझे अपने घर वालों से ज़्यादा महबूब हैं। एक रिवायत में है,,

عَنْ سَعِيْدِ ابْنِ أَبَانَ الْقَرَشِيْ أَنَّ عَبْدَ اللهِ ابْنَ حَسَنِ ابْنِ عَلِيٍّ دَخَلَ يَوْمًا عَلٰى عُمَرِ ابْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ وَهُوَ حَدَثُ السِّنِّ وَلَهُ وَفْرَةٌ فَرَفَعَ عُمَرُ مَجْلِسَهُ وَأَقْبَلَ إِلَيْهِ وَقَضٰى حَوَائِجَهُ،

सईद बिन अबानल क़ुरशी से रिवायत है कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन बिन अली हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास आए जबकि अभी आप नौउम्र थे उनके सर पर ज़ुल्फ़ें थीं, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी नशिस्त से उठकर उनका इस्तिक़बाल किया और उनकी तमाम हाजात पूरी कीं।

इकरामे आले रसूल और इमामे आज़म :

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह तआला अलैह की हयाते मुबारका हुब्बे अहलेबैत के सबब नूर अफ़शाँ थी, आपके दादा साबित ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर दुआ की दरख़्वास्त की, सैय्यदना अली अलैहिस्सलाम ने उनके ख़ानदान के हक़ में दुआए ख़ैर फ़रमाई थी, दुआए अली मक़बूले बारगाहे रब्बे जली हुई, इमामे आज़म का फ़ज़्लो कमाल यक़ीनन उसी दुआए ख़ैर का समरा था, आप अहलेबैते अतहार से ग़ायत दर्जा वाबस्तगी और क़ल्बी लगाव रखते थे, आपने दीगर असातज़ा के साथ-साथ अइम्मए अहलेबैत के सामने भी ज़ानूए तलम्मुज़ तह किया, आप इमाम बाक़र की ख़िदमत में गए तो अपनी अक़ीदत का इज़हार करते हुए अर्ज़ की,,

فَإِنَّ لَكَ عِنْدِيْ حُرْمَةً كَحُرْمَةِ جَدِّكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فِيْ حَيَاتِهِ عَلٰى أَصْحَابِهِ

''आपकी हुरमत और ताज़ीमो तकरीम मेरे ऊपर इस तरह वाजिब है जिस तरह

सहाबए किराम पर ताजदारे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीमो तकरीम वाजिब थी, आप इमाम जाफ़र सादिक़ की ख़िदमत में जाते तो ताज़ीमन घुटनों के बल बैठ जाते। अस्सवायकुल मुहर्रिक़ा में मरकूम है,,

وَكَانَ ابَا حَنِيْفَةَ يُعَظِّمُهُمْ كَثِيْرًا وَ يَتَقَرَّبُ اِلَى اللهِ تَعَالٰى بِالْاِنْفَاقِ عَلَى الْمُسْتَتِرِيْنَ مِنْهُمْ وَالظَّاهِرِيْنَ، حَتّٰى قِيْلَ : اِنَّهُ بَعَثَ مَرَّةً إِلٰى مُسْتَتِرٍ مِنْهُمْ بِإِثْنَىْ عَشَرَ أَلْفَ دِرْهَمٍ، وَكَانَ يَحُضُّ أَصْحَابَهُ عَلٰى ذٰلِكَ.

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह अहलेबैते किराम की बहुत ताज़ीम किया करते थे, और उनमें से मस्तूरूल हाल और ग़ैर मस्तूरूल हाल अहबाब पर ख़र्च करके अल्लाह तआला का क़ुर्ब चाहते, हत्ता कि कहा गया है कि इमाम अबू हनीफ़ा ने उनमें से एक मस्तूरूल हाल फ़र्द को बारह हज़ार दरहम भिजवाए और वह अपने शार्गिदों को भी इसपर उभारते। अहलेबैत की जानिब यही मीलानो महब्बत का मामला आपकी इब्तिला का बाइस भी बना लेकिन आप उसी तरीक़ए मवद्दत पर मुस्तक़ीम रहे।

इमाम मालिक और मवद्दते अहलेबैत :

इमाम मालिक रहमतुल्लाह अलैह को अहलेबैते अतहार से शदीद महब्बतो मवद्दत थी। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसी हस्तियों के पास अगर कोई मसअला पूछने जाता तो फ़रमाते :

اِذْهَبْ اِلٰى مَالِكٍ عِنْدَهُ عِلْمُنَا.

''मालिक के पास चले जाओ, हम अहलेबैत का इल्म उसके पास है।'' आप फ़ना फ़िल मवद्दत थे और बनू उमैया और बनू अब्बास के दौर में कि जब अहलेबैत का नाम लेना भी जुर्म था आप अहलेबैत के फ़ज़ायल बयान करते, लिहाज़ा एक तलाक़ के मसअले को बहाना बनाकर बनू अब्बास के हुक्मरानों ने उनको महब्बतो मवद्दते अहलेबैत की सज़ा दी और उनको कोड़े मरवाए गए लेकिन आपने महज़ क़राबते नबवी की वजह से मारने वालों को माफ़ कर दिया।

इमाम शाफ़ई और सफ़ीनए नजात :

दीगर अइम्मए फ़िक़्ह की तरह हज़रत इमाम शाफ़ई की फ़ितरत भी

महब्बत और मवद्दते अहलेबैत थी, उनकी ग़ैरते ईमानी यह गवारा नहीं करती थी कि अहलेबैत जैसी वाजिबुल एहतेराम, नूर तीनत और पाकीज़ा हस्तियों के नामूस पर हर्फ़ आए, लिहाज़ा आप फ़ज़ायले आले रसूल कसरत से बयान करते ताकि मुनकिरीन का रद्द हो, जिसके नतीजे में वक़्त के मुल्लाओं ने आप पर शिया और राफ़ज़ी होने के फ़तवे और तोहमत लगाई मगर आप ता हयात सफ़ीनए हुब्बे अहलेबैत पर सवार रहे हत्ता कि वासिल बहक़ हुए । ताज़ीमो तकरीमे सादाते किराम का यह आलम था कि एक मर्तबा दौराने सबक़ सादात के चन्द बच्चे खेल रहे थे जब वह खेलते खेलते क़रीब आते तो आप ताज़ीमन खड़े हो जाते और दस मर्तबा यही सूरत पेश आई ।

हुरमते आले रसूल और इमाम अहमद बिन हम्बल :

हज़रत सैय्यदना इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अलैह हमेशा अहलेबैते अतहार की ताज़ीमो तकरीम करते थे । जब अहलेबैत में से कोई उनके पास आता तो अपनी जगह से उठ जाते और उन्हें मुक़द्दम फ़रमाया करते और ख़ुद उनके पीछे बैठते थे । हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल की आले रसूल से महब्बत का अन्दाज़ा इस बात से होता है कि आपने हज़रत अलीयुल मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहुहुल करीम की शान में वारिदह तमाम सहीह अहादीस को जमा फ़रमाया और उस मजमूए का नाम ''मनाक़िबे अली'' रखा । नीज़ इन्तिहाई तक़वा और शरीअत में दिक़्क़ते नज़र के बावजूद यज़ीद के कुफ़्र और उसपर लानत के जवाज़ का फ़तवा दिया ।

हज़रत मारूफ़ करख़ी की जाँ निसारी :

मुक़्तदाए सद्रे तरीक़त असद उद्दीन मारूफ़ करख़ी रहमतुल्लाह अलैह जो सूफ़िया के पेशवा व इमाम माने जाते हैं, अहलेबैते नबवी के ज़रिया ही आपको इसलाम जैसी मताए अज़ीज़ हासिल हुई । आप सैय्यदना इमाम अली रज़ा के दस्ते अतहर पर मुशर्रफ़ ब इसलाम हुए और इसी घराने के होकर रहे, शेफ़्तगी व जाँ निसारी का यह आलम था कि जब आप हज़रत अली बिन मूसा रज़ा के दरे अक़दस पर जाते तो ताज़ीमन दरबान की तरह दरवाज़े पर बैठ जाया करते थे ।

बायज़ीद बुस्तामी ख़ादिमे अहलेबैत :

इमामुल आरिफ़ीन तैफ़ूर बिन ईसलबुस्तामी जो बायज़ीद बुस्तामी के नाम से मशहूर हैं आप एक वलीए कामिल गुज़रे हैं। आप सरताजुल औलिया के लक़ब से मुलक़्क़ब थे। आपके मुताल्लिक़ कहा जाता है कि आप इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का पानी भरा करते थे।

अबूबक्र शिबली का मक़बूल अमल :

साहिबे इल्मो हाल हज़रत शैख़ जाफ़र अबूबक्र शिबली रहमतुल्लाह अलैह हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के जैय्यिद मुरीदो ख़लीफ़ा थे, आप एक ज़बरदस्त आशिक़े अहलेबैत थे, एक बार आपने आशूरा के रोज़ नमाज़े ज़ोह्र के बाद चार रकअत नवाफ़िल पढ़कर इमाम आलीमक़ाम की बारगाह में हदया किया, रात को उन्हें सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई, इमामे पाक ने फ़रमाया : तूने जो यह काम किया है, उसके एवज़ क़यामत के रोज़ हम तुझे जन्नत में ले जाएंगे और उनको भी जो तेरे तरीक़े पर अमल करें।

क़ाज़ी अयाज़ का क़ौल :

क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाह अलैह एक मुतबहिहर आलिमे दीन, फ़क़ीह और ज़बरदस्त आशिक़े रसूल व आले रसूल अलैहिमुस्सलाम थे। आपकी तसनीफ़ कर्दा किताब "अशशिफ़ा फ़ी तारीफ़े हुक़ूक़िल मुस्तफ़ा" आपकी शोहरते दवाम का बाइस बनी, इसी किताब में इरशाद फ़रमाते हैं : "आले रसूल के मक़ाम का इरफ़ान हासिल करना यह है कि उनको जानो और पहचानो कि उनको नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से क्या क़ुर्बो तअल्लुक़ है। आदमी जब उसे जानेगा तो उसकी वजह से उसे इरफ़ान होगा कि उनके हुक़ूक़ का लिहाज़ रखना और एहतेराम करना वाजिब है।"

अल्लामा फ़ख़रूद्दीन राज़ी की तसरीह :

मुहद्दिस व फ़क़ीह इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी ने फ़रमाया कि अहलेबैते रसूल अलैहिमुस्सलाम पांच बातों में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मसावी यानी साथ-साथ हैं। (1) सलाम में (2) तशहुद में (3) तहारत में (4)

तहरीमे सदक़ा में (5) वजूबे महब्बत में।

हुरमते अहलेबैत इब्ने अरबी की निगाह में :

रईसुल मुकाशिफ़ीन हज़रत मुही उद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह अलैह जाँ निसाराने अहलेबैत की सफ़ में नुमायाँ मक़ाम रखते हैं, आप फ़रमाते हैं कि वह (अहलेबैत) ताहिरो मुतहहर हैं और यह अल्लाह तआला की उस ख़ुसूसी इनायत का नतीजा है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के हाल पर है, किसी मुसलमान को ज़ेबा नहीं कि उनकी मज़म्मत करे जिनकी पाकीज़गी और बुराई से तहफ़्फ़ुज़ की ख़ुद अल्लाह ने शहादत दी है। एक जगह फ़रमाते हैं कि सादात की ताज़ीमो तकरीम वाजिब है, अगर उनमें कोई बे अमल है या उस पर हद का हुक्म लगाया गया है तो हद जारी होगी, मगर उसे ज़लीलो रूसवा करने के लिए ताना देना जायज़ नहीं।

बू अली क़लन्दर और एहतेरामे आले पयम्बर :

बू अली क़लन्दर को अहलेबैते पाक से बेपनाह महब्बत थी। सादात का हद दर्जा एहतेराम करना आपका जुज़्वे ईमान था। सादात के बच्चों का भी बहुत एहतेराम करते जब तक सादात के बच्चे आंखों से ओझल न हो जाते आप ऐस्तादा रहते, बच्चे आपके गिर्द दायरे की शक्ल में जमा होकर अली-अली कहते यानी आपका नाम पुकारते तो आपको इस शग़्ल से बहुत ख़ुशी होती।

हज़रत शैख़ अहमद मज्द शीबानी और हुब्बे ख़ानदाने नबूवत :

हज़रत शैख़ अहमद मज्द शीबानी ख़ानदाने नुबूवत से इन्तिहाई मुहब्बतो उलफ़त रखते थे, दसवी मुहर्रमुल हराम को नये लोटे शर्बत से पुर करके अपने सर पर रखकर सादाते किराम के घरों में जाते और उनके ग़रीबों और दरवेशों को पिलाते और उन दिनों यादे अहलेबैत में ख़ूब रोया करते थे।

शैख़ अमानुल्लाह अब्दुल मलिक पानीपती :

हज़रत शैख़ अमानुल्लाह अब्दुल मलिक पानीपती तसव्वुफ़ के मशरबे मलामतिया के बुलन्द पाया सूफ़ी थे। आपने फ़रमाया : ‘‘दरवेशी मेरे नज़दीक दो चीज़ों में है, एक ख़ुश अख़लाक़ी और दूसरा अहलेबैत से महब्बत। महब्बत का कामिल दर्जा यह है कि महबूब के मुताल्लिक़ीन से भी महब्बत की जाए, अल्लाह

तआला से कमाले महब्बत की निशानी यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत हो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से इश्क़ की अलामत यह है कि आपके अहलेबैत से महब्बत हो ।"अगर पढ़ते-पढ़ाते सैय्यदज़ादे खेलते कूदते आपकी गली में निकल आते तो आप हाथ से किताब रखकर सीधे खड़े हो जाते और जब तक सैय्यदज़ादे खड़े रहते आप बैठते न थे ।

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी का फ़रमान :

जान लो कि सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा और उनकी औलाद की दुशमनी, ईज़ा और तौहीने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के बुग़्ज़ो ईज़ा और इहानत का मोजिब है ।

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह :

हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ेसानी रहमतुल्लाह अलैह अपने मकतूब शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं । अल्लाह तआला से वासिल होने के दो रास्ते है, पहला रास्ता "कुर्बे नुबूवत" से ताल्लुक़ रखता है और यही अस्लुल अस्ल है और इस रास्ते के वासिलान अम्बिया अलैहिमुस्सलाम हैं और उनके असहाब और तमाम उम्मतों में से जिनको भी वह इस ज़रिया दौलत से नवाज़ना चाहें उनमें शामिल हैं । दूसरा रास्ता कुर्बे विलायत का है जिसके ज़रिया अक़ताब, औताद, अब्दाल, नुजबा और अवाम वासिल बिल्लाह होते हैं । राहे सुलूक इसी को कहते हैं । इस रास्ते के वासिलीन के पेशवा और उनके फ़ैज़ का मम्बअ हज़रते अलीयुल मुर्तज़ा हैं और सैय्यदा फ़ातमा और सैय्यदना हसनैन इस मक़ाम में उनके साथ शामिल हैं ।

शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी और फ़ैज़ाने अहलेबैत :

हज़रत शैख़ वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं हुज़ूर नबीए करीम अलैहिस्सलातु वत्तसलीम से जिन्होंने हिकमतो इसमत और कुतबियते बातिन का फ़ैज़ हासिल किया वह आपके अहलेबैत और ख़वास हैं ।

शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का फ़तवा :

सिराजुल हिन्द शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़तावा अज़ीज़िया में लिखते हैं कि अहलेबैत की महब्बत फ़रायज़े ईमान में से है न कि लवाज़िमे सुन्नत

से है।

अल्लामा आलूसी और ख़सायसे अहलेबैत :

अल्लामा आलूसी बग़दादी लिखते हैं कि उनके आमाल मक़बूल हैं और उन पर आसारे जमीला का मुतरत्तिब होना यक़ीनी अम्र है, यह ऐसी ख़ुसूसियत है कि जिसमें उनका कोई शरीक नहीं। इसीलिए अरबाबे कश्फ़ ने यह तसरीह फ़रमाई है कि हर दौर में क़ुत्ब इसी ख़ानदान से होता है।

इश्क़े अहलेबैत और हुज़ूर फ़ख़्रूल आरिफ़ीन :

हज़रत अल्लामा सैय्यद मुहम्मद अब्दुल हई चाटगामी अलमारूफ़ ब सैय्यदी फ़ख़्रूल आरिफ़ीन क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़ सिलसिलए जहाँगीरिया के मारूफ़ बुर्ज़ुग गुज़रे हैं आपकी सवानेहे हयात "सीरते फ़ख़्रूल आरिफ़ीन" में मरकूम है। सैय्यदुश्शोहदा, मज़लूमे दश्ते कर्बला, सिब्ते रसूलुस्सक़लैन, सैय्यदना हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के साथ हमारे हज़रत के महब्बतो इश्क़ का आलम और था। चुनान्चे एक बार इरशाद फ़रमाया। मुहर्रम का चाँद होते ही हमारी रूह में निहायत बेक़रारी आ जाती है, सर और जिस्म गर्म और आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं, अगर उन्तीसवीं की रूईत माहे मुहर्रम अहयानन याद न रही और वाक़अतन चाँद हो गया तो यह आसार फ़ौरन चाँद के होते ही हम में पैदा और ज़ाहिर होते हैं, उनसे हम समझ लेते कि मुहर्रम का चाँद हो गया, फिर तहक़ीक़ करने पर उन्तीसवीं की रूईत का होना सहीह साबित होता, ग़मो अलम और जोशे गिरया और कमाले बेक़रारी की यह हालत अशरए मुहर्रम तक आपमें रहा करती, रोज़े आशूरा ख़त्म होकर जो रात आती उस शब बाद नमाज़े इशा आप तआमे नफ़ीस पर हज़रत सैय्यदुश्शोहदा की फ़ातहा देते और एक मजलिस मुनअक़िद फ़रमाते जिस मजलिस में बयाने शहादत बरवायते सहीहा मन्ज़ूम बज़बाने बंगला, कि आपकी ख़ास हिदायत के मुवाफ़िक़ लिखा गया था, पढ़ा जाता, एक क़यामत बरपा होती।

अल्लामा नब्बहानी और फ़ज़ायले आले रसूल :

अल्लामा यूसुफ़ बिन इसमाईल नब्बहानी रहमतुल्लाह अलैह इरशाद फ़रमाते हैं उमूरे दीनिया और अक़ायदे इसलामिया में सबसे अहम तरीन अक़ीदा

यह है कि हमारे आक़ा व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसललम हर फ़रिशते और रसूल से अफ़ज़ल हैं और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के आबा तमाम आबा से और आपकी औलाद हर औलाद से अशरफ़ो आला है क्योंकि उनका हसबो नसब नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से वाबस्ता है और वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के रिशतेदार हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ही की तरफ़ मन्सूब हैं और तमाम लोगों से ज़्यादा नसबी तौर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़्यादा क़रीब हैं।

मवददते अहलेबैत और पीर मेह्र अली शाह :

सूफ़ीए बा सफ़ा आशिक़े अहलेबैत हज़रत पीर सैय्यद मेह्र अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं आँहज़रत की ज़ाते बाबरकात कुल मौजूदात से मुख़्तारो पसन्दीदा है। हक़ सुब्हानहू तआला ने आपको हर सिफ़ते महमूदा का मम्बअ और अस्ल बनाया है लिहाज़ा इस अस्ले पाक के फ़रूए तैय्येबा (औलादे पाक) में भी वही मौहूबी फ़ैज़ पहुँचा हुआ है, इसलिए बवजहे तासीर बिज़अए नबविया उनके दर्जे को रियाज़तो मुजाहिदात के साथ कोई नहीं पहुँच सकता अगरचे वह अबदुल आबाद तक भी सई करता रहे क्योंकि जो कुछ भी उन (अहलेबैत) को पहुँचा है वह बवजहे इनायात के है न बसइए सालिहात अज़ जानिब खुद।

हज़रत सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह अबुल उलाई :

क़ुत्बुल अक़ताब, आशिक़े सैय्यदुल मुरसलीन, हज़रत अलहाज सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह (मेरे दादा पीर) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सिलसिलए आलिया अबुल उलाइया के मुक़तदा एक मर्दे हक़ आगाह, साहिबे हालो क़ाल बुर्जुग और वलीए कामिलो अकमल थे। आप महब्बते ख़ुदा व रसूल और मवद्दते अहलेबैत से सरशार थे। आपने सारी ज़िन्दगी अपने मुरीदीनो मुताल्लिक़ीन को ईमान बिल्लाह, इश्क़े रसूल और अहलेबैत के पयामे सब्रो शुक्र और इस्तिक़ामत का दर्स दिया, तब्लीग़े इसलाम के साथ-साथ अहले ईमान को हुब्बे रसूल, मवद्दते अहलेबैत और ताज़ीमे असहाब के जाम पिलाना ही आपका दस्तूरूल अमल और

नस्बुलऐन था, आप फ़ना फ़िल मवद्दत थे, आपकी सीरते तैय्येबा में मवद्दते अहलेबैत अपने असली मानी व मफ़हूम के साथ जलवागर दिखाई देती है। दुनिया का बड़े से बड़ा ग़म कभी आप पर असर अन्दाज़ न होता लेकिन जब आप अहलेबैते पाक का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाते या आपके सामने अहलेबैते अतहार की इब्तिलाओं का तज़किरा होता तो दिल पर क़ाबू न रहता और चशमाने मुबारक से अश्क जारी हो जाते ख़ुसूसन मुहर्रमुल हराम के महीने में आपकी हालत अजीब रहती, हर वक़्त बेक़रारी और इज़्तिराबी कैफ़ियत का ऐसी आलम होता गोया कर्बला और इब्तिलाए अहलेबैत मुलाहिज़ा फ़रमा रहे हों, आशूरा के दिन और शबे आशूरा और भी मुज़तरिब रहते हत्ता कि पूरा मुहर्रम यही कैफ़ियत रहा करती। यही जज़बो कैफ़ आपकी नस्ले पाक में मुनतक़िल हुआ और इसी आलमे बेक़रारी व बे इख़्तियारी में शबे आशूरा आपका विसाल शरीफ़ हुआ, महसूस होता है आप ने शबे आशूरा नज़रानए जानो तन अहलेबैत के हुज़ूर पेश कर दिया, लिहाज़ा आप हक़ीक़ी फ़िदाए अहलेबैत हैं।

सूफ़ी सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल हसन नव्वाबी अबुल उलाई :

मेरे मुर्शिदे पाक सैय्यदुल असफ़िया हज़रत अश्शाह सूफ़ी सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल हसन नव्वाबी (मद्दाज़िल्लहुल आली) ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह (रहमुल्लाह अलैह) से इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम, मवद्दते अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम, तकरीमे असहाबे रसूल रज़ियल्लाहु अन्हुम और तरीक़ए असफ़िया रहमतुल्लाह अलैहिम विरासत में पाए, यही दसातीरे उलफ़त आपकी तालीमात के अजज़ाए तरकीबी हैं, आपके दरे दौलत पर तवातुर से ज़िक्रे रसूल व आले रसूल का एहतेमाम रहता है। आप उन महाफ़िल में ब नफ़्से नफ़ीस तशरीफ़ फ़रमा होते हैं और निहायत ख़ुलूसो महब्बत से और पुरसोज़ो दिलगुदाज़ लहजे में हम्दो नात पेश करने के साथ-साथ फ़ज़ायलो मनाक़िबे अहलेबैत और वाक़आते कर्बला बयान फ़रमाते हैं और आपसे बेहतर कौन बयान फ़रमाएगा कि आप भी उसी मुबारक घराने के चश्मो चराग़ हैं जिसे ख़ानवादए रसूल और आले बुतूल कहते हैं और घर वाले से बेहतर घर की बात कौन बयान कर सकता है। माहे मुहर्रम में आपकी हालत भी अपने वालिदे गिरामी

की तरह मुतग़ैय्यिर रहती है यानी ग़मे हुसैन और असहाबे हुसैन के ग़म में आपका दिल निढाल रहता है । आप इरशाद फ़रमाते हैं दरे अहलेबैत से वाबस्तगी सलामतीए ईमान की ज़मानत है । आप ऐसे ग़व्वासे बहरे मवद्दते अहलेबैत हैं कि जो गहराई में उतरकर फ़ज़ायले अहलेबैत के वह-वह गौहरे ताबदार हासिल करते हैं, जिनकी चमक दमक न सिर्फ़ उनके बल्कि उनके मुरीदीन के क़ुलूबो अरवाह को भी नूरबार करती है । यही वजह है कि इस सिलसिले के मुरीदीनो मुताल्लिक़ीन के दिलों में मवद्दते अहलेबैत और ताज़ीमो तकरीमे असहाबे मुस्तफ़ा की एक ख़ास कैफ़ियत पाई जाती है जो इस सिलसिले का ख़ास्सा भी है और इसी मुतवाज़िन व मोतदिल और मामूर अज़ उलफ़ते सुलूक व रवैये की वजह से लोग ख़ुसूसन नौजवान तबक़ा के अफ़राद बकसरत इस सिलसिले का हिस्सा बन रहे हैं। अल्लाह रब्बुल आलमीन अहलेबैते अतहार के सदक़े इस सिलसिले को मज़ीद बरकात से नवाज़े, ख़ूब तरक़्क़ियाँ अता फ़रमाए और हासिदीन से महफ़ूज़ रखे । आमीन ।।

हुक़ूक़े अहलेबैत

जिस तरह मवद्दते अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम दरअस्ल मवद्दते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ही का एक जुज़्वे लायनफ़क है उसी तरह हुक़ूक़े अहलेबैते अतहार भी दरअस्ल हुक़ूक़े रिसालत ही हैं इसीलिए उनकी अदायगी अफ़रादे उम्मत के लिए वाजिबुल वुजूब का दर्जा रखती है और जिस क़दर ताकीद और तलक़ीन अहलेबैते किराम के हक़ में फ़रमाई गई है वह किसी और तबक़े के हक़ में नहीं फ़रमाई गई हत्ता कि यह तक फ़रमा दिया गया,

فَانْظُرُوْا كَيْفَ تَخْلُفُوْنِيْ

पस ग़ौर करो ! मेरे बाद तुम उनके साथ क्या सुलूक रवा रखते हो नीज़ उनकी महब्बत को असासे ईमान क़रार दिया गया, इरशादे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम है,,

اَسَاسُ الْاِيْمَانِ حُبِّيْ وَحُبُّ اَهْلِ بَيْتِيْ

मेरी और मेरे अहलेबैत की महब्बत ईमान की बुनियाद है और उनकी दुशमनी, बुग़्ज़ और उनके हुक़ूक़ की अदम अदायगी महरूमिए शिफ़ाअत का बाइस क़रार पाई । इरशादे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व अलिही वसल्लम है,,

اِنَّهُمْ عِتْرَتِيْ ، خُلِقُوْا مِنْ طِيْنَتِيْ ، وَ رُزِقُوْا فَهْمِيْ وَ عِلْمِيْ، فَوَيْلٌ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ بِفَضْلِهِمْ مِنْ اُمَّتِيْ ، اَلْقَاطِعِيْنَ فِيْهِمْ صِلَتِيْ، لَا اَنَالَ اللّٰهُ شَفَاعَتَهُمْ.

यह लोग मेरी इतरत हैं, यह मेरी तीनत से पैदा हुए हैं, इन्हें मेरी समझ और मेरे इल्म का हिस्सा अता हुआ है, मेरे उस उम्मती के लिए वैल और तबाही है जो इनकी फ़ज़ीलत का मुनकिर है, और मुझसे इनका जो ताल्लुक़ है उसे काटना चाहता है, अल्लाह तआला ऐसे लोगों को मेरी शफ़ाअत अता न फ़रमाएगा ।

नीज़ अहादीसे मुबारका में तुक़स्सिरू के अलफ़ाज़, तहलिकू की तहदीद और उज़क्किरूकुम की तकरार भी इसी तरफ़ इशारा कर रही है। यह एक उसूल है कि तादादे लफ़्ज़ी वुसअते मआनी और ताकीद की दलील होती है, यानी मानी मक़सूद पर ज़ोर देना और अम्रे मतलूब को मुवक्कद करना, रसूले कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने उम्मते मुस्लिमा को अहलेबैते अतहार के हुकूक की तरफ़ मुतवज्जे करते हुए तीन बार यह कलमाते तैय्येबा दोहराए,,

''اُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ. اُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ. اُذَكِّرُكُمُ اللهَ فِيْ أَهْلِ بَيْتِيْ.

और मैं अपने अहलेबैत के बारे में तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूँ। बार-बार कहने से मक़सूद यह था कि इस अम्र की अहमियत और अहलेबैत की उलूए मरतबत ख़ूब अयाँ हो जाए, अहलेबैते अतहार की फ़ज़ीलत अहले ईमान की तबाए में रच बस जाए और उनकी मवद्दत और उनके हुकूक़ की पासदारी मोमिनों की फ़ितरते सानिया बन जाए।

हुकूक़े अहलेबैत की अहमियत की तरफ़ इशारा करते हुए रसूले कायनात अलैहि अफ़ज़लुत्तसलीम वसस्लात ने इरशाद फ़रमाया :

أَلَا وَإِنِّيْ قَدْ تَرَكْتُهُمَا فِيْكُمْ : كِتَابُ اللهِ وَعِتْرَتِيْ أَهْلُ بَيْتِيْ، فَلَا تَسْبِقُوْهُمْ فَتَفَرَّقُوْا، وَلَا تُقَصِّرُوْا عَنْهُمْ فَتَهْلِكُوْا، وَلَا تُعَلِّمُوْهُمْ فَإِنَّهُمْ أَعْلَمُ مِنْكُمْ

नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ख़बरदार ! मैं तुम में दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ,अल्लाह की किताब और मेरी इतरत (अहलेबैत) पस तुम न तो उनसे आगे बढ़ो वरना टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे और न (उनकी शान में) कमी करो वरना हलाक हो जाओगे और न उनको सिखाओ कि वह तुमसे ज़्यादा जानते हैं।

इस हदीस में ''ला तुक़स्सिरू'' फ़ेअले नही है यानी क़स्र से मुमानिअत का हुक्म दिया जा रहा है, ला तुक़स्सिरू माद्दए क़स्र है जिसका मानी है कम करना, छोटा करना, तक़सीर इसी से है जिसका मतलब ग़लती है और क़सीर छोटे को कहते हैं तो मतलब यह हुआ कि मेरे अहलेबैत की शान में कमी व क़स्र और उनके हुकूक़

की अदायगी में तक़सीर न करना, इसलाम में हुक़ूक़ुल्लाह में तो ब अम्रे हाजत क़स्र जायज़ है जैसा कि दौराने सफ़र नमाज़ क़स्र करने का हुक्म है। रमज़ान में भी क़स्र का जवाज़ साबित है कि मरीज़ या मुसाफ़िर या उज़्रे शरई वाला रमज़ान का रोज़ा छोड़ सकता है और इस क़स्र और कमी को रमज़ान के बाद के अय्याम में रोज़े रखकर पूरा कर सकता है मगर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : "वला तुक़स्सिरू अन्हुम" इन अहलेबैत के हक़ में क़स्र के मुरतकिब न हो जाना कि यह कोताही न तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को बरदाश्त है और न अल्लाह की बारगाह में गवारा है और जो बात अल्लाह और उसके रसूल अलैहि अफ़ज़लुत्तहीयतु वस्सना की नाराज़गी का बाइस हो वह ऐने हलाकतो बर्बादी है। यह बर्बादी व हलाकत ज़ात में भी वाक़ेअ होती है आमाल में भी और नस्ल में भी, इसका एक सुबूत हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की ज़बाने हक़ीक़त बयान से निकले हुए यह कलमात भी हैं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू की अलालत के अय्याम में हज़रत हसन अलैहिस्सलाम ने लोगों को जुमा की नमाज़ पढ़ाई और दौराने ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया :

فَوَالَّذِیْ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ نَبِیًّا لَا یَنْتَقِصُ مِنْ حَقِّنَا أَهْلَ الْبَیْتِ أَحَدٌ إِلَّا نَقَّصَهُ اللهُ مِنْ عَمَلِهِ مِثْلِهِ، وَلَا تَكُوْنُ عَلَیْنَا دَوْلَةٌ إِلَّا وَتَكُوْنُ لَنَا الْعَاقِبَةُ، وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِیْنٍ.

पस उस ज़ात की क़सम कि जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया जो कोई हम अहलेबैत के हक़ में कमी करता है अल्लाह तआला उसके आमाल में उतनी ही कमी फ़रमा देता है, और हम पर (किसी का) ग़लबा नहीं हो सकता मगर आक़बत हमारे लिए है और कुछ अर्सा बाद ज़रूर तुम इस ख़बर की हक़ीक़त को जान लोगे।

इस हलाकतो बर्बादी की एक तसवीर यज़ीद पलीद भी है कि जिसने महज़ हुसूले अमारत के लिए अहलेबैत पर मज़ालिम तोड़े और उनके मुताल्लिक़ झूठी बातें और कहानियाँ फैलाईं ताकि लोगों के दिलों से अहलेबैत की इज़्ज़तो तकरीम (मआज़ल्लाह) ख़त्म हो और उसकी सलतनत मुस्तहकम हो सके, नीज़ मैदाने

कर्बला में जौरो सितम की ख़ूनीं दास्तान रक़म की मगर न वह अहलेबैत को मिटा सका और न ही शाने अहलेबैत कम कर सका मगर उस पर फ़ेअले बद का ऐसा वबाल आया कि सानेहए कर्बला के कुछ दिन बाद एक मुहलिक मरज़ में मुब्तिला हुआ और ज़िल्लत की मौत का सज़ावार हुआ, उसके आमाल बर्बाद हुए हत्ता कि लईनो काफ़िर क़रार पाया, उसकी नस्ल का नामो निशान मिट गया हत्ता कि आज कोई उस मलऊन का नाम लेना भी पसन्द नहीं करता जबकि अहलेबैत की ताज़ीमो तकरीम और उनका एज़ाज़ो इकराम और मवद्दत रखने वालों का अज्रो दर्जा बढ़ता रहा, बढ़ता रहता है और बढ़ता ही रहेगा हत्ता कि वह हौज़े कौसर पर वारिद होंगे और अपने मुहिब्बीन की ऐसी तशनगी दूर फ़रमाएंगे कि वह कभी प्यासे न होंगे। नस्से कुरआनी और अहादीसे मुबारका से अहलेबैते अतहार के कई हुक़ूक़ मुस्तम्बत किए गए हैं कि जिनकी अदायगी अहले ईमान पर वाजिब है। ज़ैल में उन हुक़ूक़ का इख़्तिसारन ज़िक्र किया जा रहा है :

1. अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम से मवद्दतो महब्बत रखना कि यही असासे ईमान, पाकीज़गीए नसब की अलामत, कमाले ईमान की दलील और महब्बते ख़ुदा व रसूल के हुसूल का बाइस है, नीज़ हदीसे मुबारका में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की औलाद को अपनी औलाद से ज़्यादा अज़ीज़ रखना कमाले ईमान की निशानी बताया गया है।

2. अपनी औलाद की हुब्बे अहलेबैत पर तरबियत करना, ख़ुसूसन आज के नाज़ुक दौर में जबकि लोग तबाही के दहाने पर खड़े हैं यही नुस्ख़ा नस्लों की दुनयवी व उख़रवी बक़ा का ज़ामिन है।

3. रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ-साथ अहलेबैत पर भी दरूद भेजना क्योंकि जिस दरूद में आले रसूल को शामिल न किया जाए वह नाक़िस रहता है और इस्तिलाहन उसे सलाते बतरा कहा जाता है।

4. **हुरमते सदक़ा** : अहलेबैत पर ज़कातो सदक़ा हराम है क्योंकि यह माल की नजासतो नापाकी है अलबत्ता हदया करना जायज़ बल्कि मुस्तहसन अम्र है।

5. ग़नीमत और फ़ै में ख़म्स यानी पांचवा हिस्सा अल्लाह तआला ने अहलेबैते नबी के लिए मख़सूस फ़रमाया है।

6. इत्तिबाअ व इताअत : क्योंकि अहलेबैते अतहार अलैहिमुस्सलाम कुदवतुल मुस्लिमीन और अइम्मतुल मोमिनीन हैं नीज़ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत और फ़ैज़े रूहानी के वारिस हैं लिहाज़ा उनकी पाकीज़ा सियर की इत्तिबाअ लाज़िम है।

7. ताज़ीमो तकरीम और नामूसे अहलेबैत की हिफ़ाज़त व दिफ़ाअ।

8. ग़ुलू व तक़सीर से एहतेराज़।

9. उनको ईज़ा देने से बचना क्योंकि अहलेबैत को ईज़ा देना हराम और लानत का बाइस है कि जिसने अहलेबैत को ईज़ा दी उसने रसूले करीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम को ईज़ा दी और जिसने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ईज़ा दी उसने अल्लाह को ईज़ा दी।

10. दामने अहलेबैत से वाबस्ता रहना।

11. उनसे बेहतरीन सुलूक रवा रखना।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें हुकूके अहलेबैत की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमेशा एक दूसरे को इसकी तालीमो तलक़ीन की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन

अहलेबैते अतहार को अलैहिस्सलाम कहने का जवाज़

रोज़े अव्वल ही से कुछ शरपसन्द और मुफ़सिदा परदाज़ अनासिर अहलेबैते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़िलाफ़ साज़िशें करते और उनकी शान में तक़सीर करते आए हैं। अहले ईमान के क़ुलूब से हुब्बे अहलेबैत की बेख़कनी की ख़्वाहिशे मज़मूमा रखने वाले इन बदनसीबों का नस्बुल ऐन यही है कि अहले इसलाम की बिनाए ईमान कमज़ोर पड़ जाए, उनकी सफ़ों में इन्तिशार और उनके अक़ायद में अदम सलामती दर आए। और तो और यह कीना परवर लोग अहलेबैते पाक को अलैहिस्सलाम कहने से भी चीं ब जबीं होते हैं हालांकि यह कोई बिदअत नहीं है बल्कि अहलेबैत को अलैहिस्सलाम कहना और लिखना अदिल्लए क़ुरआनो सुन्नत और तआमुले अकाबिरीन से साबित है (अनक़रीब इन दलायल का ज़िक्र किया जाएगा) मुनासिब मालूम होता है कि इस ज़िम्न में भी चन्द हवाले पेश कर दिए जाएं ताकि दुशमनाने अहलेबैते अतहार के ख़ुद साख़्ता और जालसाज़ नज़रयात का क़लअ क़मअ हो सके और अहले मवद्दत की तसकीने ख़ातिर और तशफ़्फ़ीए क़ल्ब हो जाए।

अलैहिस्सलाम क्या है ?

जिस तरह सलात दुआए रहमत है उसी तरह सलाम दुआए सलामती है। अस्सलाम स-ल-मा युसलिमू का मसदर है जिसके मानी हैं अम्न, सलामती, यह अलहर्ब (जंग) का उलट है, यानी मसायबो आफ़ात से सलामती। आफ़ात दो तरह की होती हैं एक जिस्मानी आफ़ात जैसे बीमारियाँ, जानी नुक़सान और हादसात वग़ैरह और दूसरी अक़ायद की आफ़ात, मसलन गुनाहो मासियत व अदम इताअत वग़ैरह। लिसानुल अरब में है कि सलाम किसी इंसान के हक़ में दुआ है कि वह

अपने दीन और नफ़्स में आफ़ात से सलामत रहे । अगर सलाम के इन मानों को पेशे नज़र रखकर क़ुरआन का मुतालेआ किया जाए तो मालूम होता है कि अहलेबैत पर सलामती का मोहकम व मुस्तहकम इरादा ख़ुद अल्लाह ने फ़रमाया और अल्लाह की ज़ातो सिफ़ात की तरह उसके इरादे और अफ़आल भी क़दीम व अज़ली हैं ।

इरशादे बारी तआला है,,

إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

ऐ अहलेबैत ! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुमसे रिज्स को दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे । यानी अहलेबैत के ईमान, अक़ायद और मताओ आमाल की सलामती नीज़ रिज्स जिससे अमान ही तो अल्लाह को मक़सूद है, यही वजह थी कि इस आयत के नुज़ूल के बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम कई माह तक बवक़्ते फ़ज्र सैय्यदा फ़ातमतुज़्ज़हरा के दरवाज़े पर यूँ दुआए सलामती फ़रमाते रहे,,

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْبَيْتِ، إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ
أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا

अहलेबैत ! तुम पर सलामती हो, ऐ अहलेबैत ! अल्लाह तो यही चाहता है कि तुम से रिज्स को दूर कर दे और तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे ।

सुब्हानल्लाह, अहलेबैत की सलामती अल्लाह को कितनी महबूब है कि ख़ुद भी आयत भेजकर वा शिगाफ़ अन्दाज़ में इसका इज़हार फ़रमाया नीज़ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम रोज़ाना सुब्ह अहलेबैते पाक को सलाम कहते रहे । गोया रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने नुज़ूले आयते ततहीर के बाद अहलेबैत पर सलाम का मामूल इख़्तियार करके उम्मत को अहलेबैत पर सलाम भेजने का एक महब्बत भरा तरीक़ा अता फ़रमा दिया ।

फिर एक और जगह अल्लाह तआला ने अहलेबैते अतहार के लिए ख़ास लफ़्ज़े सलाम इरशाद फ़रमाया, ''सलामुन अला इल यासीन'' आले यासीन पर सलाम हो । आले यासीन की तफ़सीर में मुफ़स्सिरीने किराम का इख़्तिलाफ़ पाया

जाता है मगर सैय्यदुल मुफ़स्सिरीन सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा मुन्दरजा बाला आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं, "(अला अल यासीन) अला आले मुहम्मद । इस आयत में आले यासीन से आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मुराद हैं ।" नीज़ तफ़सीरे कुरतबी, तिबरानी, रूहुल बयान, रूहुल मआनी, तफ़सीरे ख़ाज़िन, इब्ने जरीर, दुर्रे मन्सूर और तिब्यानुल कुरआन वग़ैरहुम में भी आले यासीन की यही तफ़सीर मौजूद है, और अल्लाह का आले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम भेजना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के एज़ाज़ो इकराम नीज़ महब्बत की वजह से है तो जब ख़ुद अल्लाह ख़ालिक़े कायनात अहलेबैत पर सलाम भेजकर उनको एज़ाज़ बख़्श रहा है तो हमें भी इस अमल के ज़रिया अहलेबैत की ताज़ीमो तौक़ीर करनी चाहिए ।

सूरए ताहा में अल्लाह तआला का इरशाद है,

وَالسَّلَامُ عَلَىٰ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ

सलाम है (हर) उस शख़्स पर जो हिदायत की पैरवी करे ।

क़ाज़ी सना उल्लाह पानीपती तफ़सीरे मज़हरी में इस आयत के ज़िम्न में लिखते हैं: "मतलब यह है कि मेरा सलाम, मलायका का सलाम और जन्नत के फ़रिशतों का सलाम हिदायत याफ़ता लोगों पर है, या मानी यह है कि हिदायत के पैरोकारों के लिए दुनिया में मुसीबत से और आख़िरत में अज़ाब से सलामती है ।" इस आयत में मौजूद व ग़ैर मौजूद, अहया व अमवात, अगले और पिछले हर मुत्तबेए हिदायत पर सलाम का ज़िक्र है ।

मुत्तबिईने हिदायत पर सलाम को तो हर कोई माने और इस पर इज़हारे मसर्रत करे, मगर जब बात हो उन नुफ़ूसे कुदसिया की बारगाह में ताज़ीमन व तकरीमन नज़्रे सलाम पेश करने की कि जो सरचश्मए हिदायत और मम्बए फ़ुयूज़े रिसालत हैं और जिनके मुतमस्सिकीन के रहे हिदायत पर गामज़न रहने और ज़लालत से बचाव की गवाही ख़ुद सैय्यदुल आलमीन ने दी है तो कुछ लोगों को यह बात हज़्म नहीं होती, (दरअस्ल हाज़मे के लिए अफ़आले मेदा और मवद्दत के लिए अफ़आले क़ल्ब की दुरूस्ती ज़रूरी है) फिर कभी तो उनको तशब्बोह बित्तशैयो का

ख़तरा लाहक़ हो जाता है और कहीं तशब्बोह बिल अम्बिया का, हालांकि इन सब इबलीसी वसवसों की हैसियत तारे अन्कबूत जितनी भी नहीं । अव्वल तो अलैहिस्सलाम कहने में अहले तशैयो से तशब्बोह हो ही नहीं सकता जबकि इस मुबारक फ़ेअल का आग़ाज़ दौरे सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम अजमईन से हुआ, सैय्यदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा सैय्यदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से पंजतन पाक के असमा के साथ अलैहिस्सलाम कहना साबित है, महब्बतो मवद्दत का यही अन्दाज़ उश्शाक़े रसूल व आले रसूल का तुर्रए इम्तियाज़ रहा यहाँ तक कि ख़िलाफ़त मुलूकियत में बदली और एक बदनसीब व बदकिरदार मलऊन (यज़ीद पलीद) ने अहले इसलाम की मताए अक़ीदत पर शब ख़ून मारने की कोशिश की और ऐसा वक़्त आ गया कि अहलेबैते अतहार का नाम लेने वालों और इज़हारे मवद्दत करने वालों को ईज़ाएं दी जाने लगीं, यह लोग जिस नबी का कलमा पढ़ते थे उसी के घराने से बैर रखते थे । अलअमानो अलहफ़ीज़ दूसरा यह कि अगर सिर्फ़ तशब्बोह को बुनियाद बनाकर जवाज़ व अदम जवाज़ के फ़तावा लगना शुरू हो जाएं तो दीन में क्या बचेगा ??? फिर दस मुहर्रम को हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की फ़ातहा और मुहर्रम के ज़िक्रे अहलेबैत का क्या होगा कि जिस पर तमाम अहलेसुन्नत का अमल है ? इसलाम के आने से पुराने सब दीन मन्सूख़ हो गए मगर दीने इब्राहीमी के कई अहकाम बरक़रार रखे गए वहाँ तो मिल्लते इब्राहीमी का तशब्बोह मज़मूम न हुआ बल्कि फ़रमाया कि जो मिल्लते इब्राहीमी से मुँह मोड़े उसने ख़ुद को बेवक़ूफ़ बनाया । लिहाज़ा ऐसा तशब्बोह जो फ़ी नफ़सिही मज़मूम न हो दुरूस्त है और यहाँ तो सिरे से मुशाबिहत है ही नहीं कि अहले तशैयो का अहलेबैत को इमाम और अलैहिस्सलातु वस्सलाम कहना और मानों में है जबकि अहले सुन्नत का अहलेबैत को अलैहिस्सलाम कहना उनकी ख़ास तकरीम और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से क़राबत नीज़ अल्लाह के क़ुर्ब की बिना पर है ।

दौराने नमाज़ अत्तहीयात में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पर सलाम भेजने के बाद यूँ कहने का हुक्म है,,

السلام علينا وعلى عباد الله الصالحين

यानी हम पर सलाम हो और अल्लाह के सालेह बन्दों पर सलाम हो। मक़ामे हैरतो इस्तेजाब है कि ख़ुद पर सलाम हो तो दुरूस्त और अहलेबैत पर सलाम हो तो एतराज़ व नागवारी !!! अस्ल बात यह है कि मोतरिज़ीन का एतराज़ ही बे बुनियाद है, किसी नस्स से इसका अदम जवाज़ साबित किया जा सका है न किया जाएगा, अगरचे उलमा ने यह उसूल वज़अ फ़रमा दिया कि रसूलल्लाह के इस्मे मुबारक के साथ सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम, दीगर अम्बियाए किराम के असमाए गिरामी के साथ अलैहिस्सलाम, असहाबे अख़्यार के असमाए आलिया के साथ रज़ियल्लाहु अन्हुम, दीगर औलिया व सुलहाए उम्मत के नामों के साथ रहमतुल्लाह अलैह लिखा और कहा जाए मगर यह कोई ऐसा उसूल नहीं कि जिसका ख़िलाफ़ जायज़ न हो और लुत्फ़ की बात तो यह है कि इब्ने हजर अस्क़लनी, अल्लामा सख़ावी और चन्द दीगर उलमा ने यह उसूल बयान करने के बावजूद असहाबे किसा के असमाए गिरामी के साथ अलैहिस्सलाम लिखा।

अब हम अपने मौक़िफ़ की तक़वियत के लिए अकाबिर मुफ़स्सिरीन, अइम्मए मुहद्दिसीन और उलमाए सलफ़ की कुतुब में से चन्द हवाले पेश करेंगे ताकि यह बात मज़ीद मुस्तहकम हो जाए कि अकाबिर उलमा, असहाबे मसानीदो तफ़ासीर और अहले तसव्वुफ़ का मुबारक शिआर और पाकीज़ा तरीक़ा यही रहा है कि वह हज़रत मौला अलीयुल मुर्तज़ा, सैय्यदा ख़ातूने जन्नत और हसनैन करीमैन के असमाए मुतहहरा के साथ ताज़ीमन व तकरीमन अलैहिस्सलाम कहा और लिखा करते थे। बुख़ारी शरीफ़ की अहादीस में मुतअद्दद मक़ामात पर ग़ैरे अम्बिया के साथ अलैहिस्सलाम आया है बल्कि इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह ने एक बाब का उनवान यूँ बांधा है,,

بَابُ مَنَاقِبِ قَرَابَةِ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَمَنْقَبَةِ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلَامُ بِنْتِ النَّبِيِّ ﷺ۔

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के क़राबतदारों के फ़ज़ायल और सैय्यदा फ़ातमा अलैहस्सलाम के मनाक़िब का बाब, ग़ौर कीजिए इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह जैसी जैय्यिद शख़्सियत ने सैय्यदा फ़ातमा अलैहस्सलाम लिखा, यह न सिर्फ़ उनकी अहलेबैत से महब्बतो मवद्दत थी बल्कि वह अपनी मुसनद में

ऐसी बेशुमार अहादीस रिवायत कर चुके थे जिनमें सहाबए किराम और ताबिईन ने अहलेबैत के साथ अलैहिस्सलाम कहा, तो उन्हें ऐसा करने से क्या चीज़ मानेअ होती, उन पर न तो मुआसिरीन ने गिरिफ़्त की और न बाद वालों ने कोई फ़तवा लगाया। सुनन अबूदाऊद और मुसनद अहमद बिन हम्बल की कई अहादीस में अहलेबैत के असमा के साथ अलैहिस्सलाम मिलता है। अल्लामा इब्ने जरीर तिबरी ने अपनी तफ़सीर में लिखा,,

عَنْ اَبِی الدَّیْلَم قَالَ قَالَ عَلِیٌ عَلَیْہِ السَّلام

हज़रत अबूदैलम फ़रमाते हैं कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया.......... अल्लामा इब्ने क़ैय्यम ने ''आलामुल मूक़िईन'' में अल्लामा इब्ने जूज़ी ने अपनी किताब ''सिफ़वतुससिफ़वह'' में, इमाम दारक़तनी ने ''अतराफ़ुल ग़रायब'' में, इमाम ग़िज़ाली ने ''अहयाए उलूमुद्दीन'' में, शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने ''जज़्बुल कुलूब'' में, अल्लामा हैसमी ने ''मजमउज़्ज़वायद'' में, इमाम राज़ी ने ''तफ़सीरे कबीर'' में अहलेबैत के असमा के साथ अलैहिस्सलाम बकसरत लिखा, और तो और अहलेहदीस के जैय्यिद अल्लामा इसमाईल बिन मुहम्मद अल अमीरूल सनआनी ने शरहे ''बलूग़ुल मराम'' में और क़ाज़ी शोकानी ने ''नीलुल औतार'' में और नवाब मुहम्मद सिद्दीक़ हसन ख़ाँ ने ''अस्सिराजुल वहहाज'' में अहलेबैत के असमाए ताहिरा के साथ अलैहिस्सलाम लिखा। हत्ता कि अहलेहदीस के एक मशहूर आलिमे दीन अल्लामा अब्दुल्लाह दानिश ने अपनी अरबईन में लिखा, ''मज़कूरा तमाम रिवायात से यह वाज़ेह हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम व मुहद्दिसीने एज़ाम रहमतुल्लाह अलैहिम, अहलेबैत के लिए अलैहिस्सलाम इस्तेमाल करते थे कि दीगर तमाम सहाबए किराम से उन्हें इम्तियाज़ी शान हासिल थी कि वह अफ़राद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के घराने के हैं, यह आम सहाबी नहीं हैं।'' उलमाए देवबन्द की कई कुतुब मसलन मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी के मकतूबात और इसमाईल देहलवी की ''मन्सबे इमामत'' में और मौलाना अशरफ़ अली थानवी ने ''इमदादुल फ़तावा'' में अहलेबैत के साथ अलैहिस्सलाम लिखा। मुन्दरजा बाला हवालाजात के

अलावा भी बेशुमार हवाले मौजूद हैं मगर इख़्तिसारन इन्हीं पर इक्तिफ़ा किया जाता है, पस साबित हुआ कि अहलेबैत के मुबारको मसऊद असमा के साथ अलैहिस्सलाम कहना सहाबए किराम, ताबिईन और तमाम मकातिबे फ़िक्र के अकाबिरीन का शिआर रहा है । कसरते इस्तेमाल की वजह से यह शिआरे इसलामी की हैसियत इख़्तियार कर चुका है नीज़ मवद्दतो मुहब्बत की ख़ूबसूरत अलामत बन चुका है ।

शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमुल्लाह अलैह की इस इबारत पर दलायल का इख़्तिताम करते हैं, एक सवाल के जवाब में आपने फ़रमाया ''तोहफ़ए असनाए अशरिया में किसी जगह सलात बिल इस्तिक़लाल ग़ैरे अम्बिया के हक़ में नहीं लिखा गया अलबत्ता लफ़्ज़ ''अलैहिस्सलाम'' हज़रत अमीरूल मोमिनीन व हज़रत सैय्यदतुन निसा व जनाबे हसनैन व दीगर अइम्मा के हक़ में मज़कूर है और अहलेसुन्नत का मज़हब यही है कि सलात बिल इस्तिक़लाल ग़ैरे अम्बिया के हक़ में दुरूस्त नहीं और लफ़्ज़ सलाम को ग़ैरे अम्बिया की शान में कह सकते हैं ।'' इन बराहीने क़ातिआ से यक़ीनन अहलेबैत की ख़ास फ़ज़ीलत और उनके असमाए गिरामी के साथ अलैहिस्सलाम कहने का जवाज़ साबित हो चुका है लिहाज़ा हमें अहलेबैत के असमा के साथ अलैहिस्सलाम कहना और लिखना चाहिए कि यह कोई नया काम या बिदअत नहीं है बल्कि अकाबिरीन का शिआर रहा है ।

मसादिर व मराजेअ

क़ुरआन मजीद..
तफ़सीरे मज़हरी...........................अज़ क़ाज़ी सना उल्लाह पानीपती
तफ़सीरे कबीर...................................अज़ इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी
असबाबुन्नुजूल....................अज़ अली बिन अहमदुल वाहिदी नीसापुरी
तफ़सीर इब्ने कसीर.............................अज़ इमाद उद्दीन इब्ने कसीर
जामेउल बयान फ़ी तफ़सीरूल क़ुरआन.................अज़ इब्ने जरीर तिबरी
अद दुर्रूल मन्सूर...............................अज़ अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती
तफ़सीर रूहुल मआनी..........................अज़ अल्लामा आलूसी बग़दादी
सहीह बुख़ारी..................................अज़ मुहम्मद बिन इसमाईल बुख़ारी
सहीह मुस्लिम....................अज़ मुस्लिम बिन हुज्जाज क़ुशैरी नीशापुरी
अस्सुनने दारेक़तनी..................अज़ इमाम अबुल हसन अली बिन उमर
मोजम कबीर....अज़ अबुल क़ासिम सुलेमान बिन अहमद बिन अय्यूब तिबरानी
लिसानुल अरब..अज़ इब्ने मन्ज़ूर अफ़्रीक़ी
ताजुल उरूस..अज़ सैय्यद मुर्तज़ा ज़ुबैदी
अलक़ामूसुल मुहीत..........अज़ मुहम्मद बिन इब्राहीम शीराज़ी अलफ़ीरोज़ाबादी
अशेअतुल लुमआत............................अज़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी
अस्सवायक़ुल मुहर्रिक़ा...अज़ इब्ने हजर मक्की
अश शिफ़ा फ़ी तारीफ़े हुक़ूक़े मुस्तफ़ा............................अज़ क़ाज़ी अयाज़
सिर्रूश्शहादतैन......................अज़ शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी
तारीख़ुल ख़ुलफ़ा..अज़ जलालुद्दीन सुयूती
शवाहिदुन्नुबूवत..............................अज़ अल्लामा अब्दुल रहमान जामी
दलायलुन्नुबूवत.........................अज़ शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी
तनवीरूल अज़हार.....................अज़ मोमिन बिन हसन मोमिन शबलंजी
मनाक़िबे अहलेबैत...........................अज़ अल्लामा कौसर नदवी निज़ामी
सीरते फ़ख़रूल आरिफ़ीन.......................अज़ हकीम सैय्यद सिकन्दर अली

मनाक़िबुल क़राबह................................अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
क़राबतुन्नबी..अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
अददुर्रतुल बैदा..................................अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
हुस्नुल मआब फ़ी ज़िक्रे अबी तुराब..................अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
फ़लसफ़ए शहादते हुसैन.........................अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
ज़िब्हे अज़ीम...अज़ डा० ताहिरूल क़ादरी
शरहे ख़सायसे अली..............................अज़ क़ारी ज़हूर अहमद फ़ैज़ी
मनाक़िबुज़्ज़हरा.....................................अज़ क़ारी ज़हूर अहमद फ़ैज़ी
अहलेबैत के साथ अलैहिस्सलाम लिखने का मसअला..अज़ क़ारी ज़हूर अहमद फ़ैज़ी
ख़सायसे अहलेबैत.................................अज़ इरफ़ान इलाही क़ादरी
ज़ैनुल बरकात.........................अज़ मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन शाह राशिदी
अहलेबैते अतहार पर मुस्तक़लन सलाम कहने का जवाज़........................
....अज़ अल्लामा सईद अहमद काज़मी
आले रसूल..अज़ सैय्यद ख़िज़र हुसैन चिश्ती
तज़किरा इमाम हुसैन.........................अज़ मुफ़्ती गुलाम रसूल जमाअती
हुरमते औलादे रसलू.........................अज़ सैय्यद आबिद हुसैन बुख़ारी
फ़ज़ायले अहलेबैत............................अज़ सैय्यद इश्तियाक़ हुसैन गीलानी
इरफ़ाने आले मुहम्मद...............................अज़ तनवीरे मुस्तफ़ा क़ादरी
बारह इमाम.......................................अज़ मुफ़्ती गुलाम रसूल जमाअती
बारह इमाम...अज़ अहमद हसन क़ादरी
इमाम हसन और ख़िलाफ़ते राशिदा...........अज़ मुफ़्ती गुलाम रसूल जमाअती
तज़किरा अहलेबैते अतहार............................अज़ मौलाना अब्दुल माबूद
सीरते फ़ातमतुज़्ज़हरा..........................अज़ क़ारी गुलज़ार अहमद मदनी
सीरत इमाम हुसैन............................अज़ क़ारी गुलज़ार अहमद मदनी
शहादते नवासए सैय्यदुल अबरार.....................अज़ अब्दुस्सलाम रज़वी
अलमवद्दता फ़िल कुरबा ज़िक्रुल अबा...........अज़ हज़रत सैय्यद अली हमदानी
असनीयुल मतालिब फ़ी मनाक़िबे अली इब्ने अबी तालिब........................
....अज़ क़ारी ज़हूर अहमद फ़ैज़ी

दबिस्ताने नव्वाबिया अज़ीज़िया

क़ाज़ीपुर शरीफ़, फ़तेहपुर (हसवा), उत्तर प्रदेश

की मेयारी और फ़ख़्रिया पेशकश

मतलए नूर
(मजमूअए नातो मनाक़िब)
सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन
नूर नव्वाबी अज़ीज़ी

मौजे करम
(मजमूअए नातो मनाक़िब)
शमायला सदफ़ अज़ीज़ी

सना की नकहतें
(मजमूअए नात बरज़मीने ग़ालिब)
सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन
नूर नव्वाबी अज़ीज़ी

हरीमे नात
(मजमूअए नात)
यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

रहमते तमाम
(नातिया दीवान)
हबीब सरवर अज़ीज़ी नव्वाबी

जूए सना
(मजमूअए नातो मनाक़िब)
मुरत्तिब : अता उद्दीन अज़ीज़ी

हर्फ़े मिदहत
(मजमूअए नात)
तुफ़ैल अहमद मिस्बाही

हदीक़ए रंग
(मजमूअए मनाक़िब)
यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

मरकज़े नूर
(मजमूअए नात)
सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन
नूर नव्वाबी अज़ीज़ी

बामे ईजाब
(नातो मनाक़िब का मजमूआ)
सैय्यद मुहम्मद मुजीबुल हसन
मुजीब नव्वाबी

मनाक़िबुल अख़यार (उर्दू)
शमायला सदफ़ अज़ीज़ी

मनाक़िबुल अख़यार (हिन्दी)
शमायला सदफ़ अज़ीज़ी